दैनिक लखनऊ से प्रकाशित एवं उ.प्र., बिहार, झारखण्ड, मध्यप्रदेश, राजस्थान, दिल्ली में प्रसारित

RNI-UPHIN/2014/58471

अमन लेखनी

वर्ष : 10 | अंक : 340 | लखनऊ, 23 नवम्बर, शनिवार 2024 | पृष्ठ : 08 | मूल्य : 2.00 रुपए

ट्रेन की जर्नी देगी ....

दीपू को मिला ......

संस्कृति, व्यंजन, क्रिकेट भारत-गुयाना को आपस में जोड़ते हैं: प्रधानमंत्री मोदी

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

नई दिल्ली, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने (स्थानीय समय) को भारत और गुयाना के बीच मजबूत संबंधों पर प्रकाश डाला और संस्कृति, भोजन और क्रिकेट में साझा समानता पर जोर दिया। गुयाना के जॉर्जटाउन में भारतीय समुदाय को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि क्रिकेट विशेष रूप से एक गहरे संबंध का काम करता है। उन्होंने कहा, क्रिकेट के प्रति प्रेम भी हमारे देशों को मजबूती से जोड़ता है। यह केवल एक खेल नहीं बल्कि जीवन जीने का एक तरीका है, जो हमारी राष्ट्रीय पहचान में गहराई से समाया हुआ है। एक्स पर एक पोस्ट में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, क्रिकेट के माध्यम से जुड़ना! गुयाना के प्रमुख क्रिकेट खिलाड़ियों के साथ एक सुखद बातचीत। इस खेल ने हमारे देशों को करीब लाया है और हमारे सांस्कृतिक संबंधों को गहरा किया है।

प्रधानमंत्री मोदी ने भारत-गुयाना समुदाय में अनूठी खाद्य परंपराओं को भी स्वीकार किया। उन्होंने कहा, भारत-गुयाना समुदाय की एक अनूठी खाद्य परंपरा भी है जिसमें भारतीय और गुयाना दोनों तत्व हैं - मैंने सुना है कि यहां दालपुरी लोकप्रिय है..., उन्होंने समुदाय की विशेषता बन चुके सांस्कृतिक मिश्रण को मान्यता देते हुए कहा। अपनी निजी यात्रा पर विचार करते हुए, प्रधानमंत्री मोदी ने आभार व्यक्त करते हुए कहा, ...मैं राष्ट्रपति अली को अपने घर के दरवाजे मेरे लिए खोलने के लिए धन्यवाद देता हूँ... राष्ट्रपति अली और उनकी दादी के साथ, हमने एक पेड़ भी लगाया - यह हमारी पहल - 'एक पेड़ माँ के नाम' का हिस्सा है। यह एक भावनात्मक क्षण था जिसे मैं हमेशा याद रखूँगा। मुझे गुयाना के सर्वोच्च राष्ट्रीय पुरस्कार, ऑर्डर ऑफ एक्सीलेंस को प्राप्त करने पर बहुत सम्मानित महसूस हुआ।

प्रधानमंत्री मोदी ने भारत के विकास पर प्रकाश डाला

इसके अतिरिक्त, उन्होंने भारत के विकास और इसके वैश्विक महत्व के बारे में बात करते हुए कहा, गुयाना के लोग भारत के शुभचिंतक हैं। आप भारत में हो रही प्रगति को करीब से देख रहे होंगे... केवल 10 वर्षों में, भारत 10वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था से 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है और जल्द ही हम तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएँगे। हमारे युवाओं ने हमें दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्ट-अप इकोसिस्टम बना दिया है... हम मंगल और चंद्रमा तक पहुँच चुके हैं।

भारत-गुयाना समुदाय पर प्रधानमंत्री मोदी

प्रधानमंत्री ने इस बात पर जोर दिया कि भारत-गुयाना समुदाय के लिए गुयाना उनकी मातृभूमि है और 'भारत माता' उनकी पूर्वज भूमि है। भारत के विकास के बारे में बात करते हुए उन्होंने कहा कि यह न केवल प्रेरणादायक है बल्कि समावेशी भी है। यहाँ यह उल्लेख करना आवश्यक है कि प्रधानमंत्री मोदी बुधवार को गुयाना पहुँचे, जो 50 से अधिक वर्षों में किसी भारतीय राष्ट्राध्यक्ष की देश की पहली यात्रा है।

हर चुनाव खोट से जीतना चाहती है भाजपा: अखिलेश यादव

संवाददाता / अमन लेखनी समाचार

लखनऊ, समाजवादी पार्टी (सपा) के प्रमुख अखिलेश यादव ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर निशाना साधते हुए बृहस्पतिवार को कहा कि वह हर चुनाव खोट से जीतना चाहती है और हर चुनाव में लूट तंत्र अपनाती है। यादव ने उत्तर प्रदेश में नौ विधानसभा सीट केउपचुनाव का जिक्र करते हुए यहां संवाददाताओं से कहा, उत्तर प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी ने वोट की लूट की। वे (भाजपा के लोग) हर चुनाव खोट से जीतना चाहते हैं। हर चुनाव में वे कुछ न कुछ लूट तंत्र अपनाते हैं। उन्होंने कहा, ... पहली बार आपने देखा होगा कि ..पुलिस, प्रशासन एवं अधिकारी सब लगे हुए थे कि वोट डालने के लिए मतदाता घर से न निकल पाएं। उन्होंने कहा, क्या आप सोच सकते हैं कि अगर आप मुसलमान, समाजवादी पार्टी के पिछड़े, दलित, आदिवासी, महिला हैं ...तो आप वोट डालने नहीं जा सकते। उन्होंने कहा, भाजपा सरकार में यह जो नए तरह का लोकतंत्र है, उसस सबसे बड़ा खतरा पैदा हुआ है। यादव ने कहा, लोकतंत्र को सबसे निचले स्तर पर भाजपा पहुंचा रही है। भाजपा को पता था कि उपचुनाव में वह हार रही है .... वे गिनती में नौ की नौ सीट हार जाते, इसलिए पूरी सरकार वोट लूटने में लगी हुई थी।

मौसम

अधिकतम तापमान 33.c

न्यूनतम तापमान 24.c

बाजार

सोना 7,177/ g

चांदी 96/ g

सेंसेक्स 81,634.72

निफटी 25,013.85

गृह मंत्री अमित शाह ने दिल्ली पुलिस के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैठक की

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

नई दिल्ली, गृह मंत्री अमित शाह ने राष्ट्रीय राजधानी में कानून व्यवस्था की स्थिति की समीक्षा के लिए शुक्रवार को दिल्ली पुलिस के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैठक की। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। शाह ने दिल्ली के प्रत्येक निवासी को सुरक्षित महसूस कराने के महत्व को रेखांकित किया तथा इस बात पर बल दिया कि दिल्ली की सुरक्षा में जनता का विश्वास सुनिश्चित करना प्रत्येक पुलिस अधिकारी की व्यक्तिगत जिम्मेदारी है। अधिकारियों के अनुसार, गृह मंत्री ने दिल्ली की कानून व्यवस्था की समीक्षा के लिए एक बैठक की। बैठक में गृह सचिव, खुफिया ब्यूरो के निदेशक, दिल्ली पुलिस आयुक्त और अन्य वरिष्ठ अधिकारी शामिल हुए। गृह मंत्री ने इस बात पर जोर दिया कि बच्चों, महिलाओं और वरिष्ठ नागरिकों की सुरक्षा दिल्ली पुलिस के लिए सर्वोच्च प्राथमिकता बनी रहनी चाहिए। उन्होंने पुलिस बल के निर्णायक तरीके से काम करने पर जोर दिया, ताकि राष्ट्रीय राजधानी में जन सुरक्षा के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता को दशार्ते हुए सुरक्षित माहौल सुनिश्चित किया जा सके। अधिकारी ने बताया कि बैठक के दौरान गृह मंत्री ने अपराध के प्रति सरकार की बिल्कुल बर्दाश्त नहीं करने की नीति पर जोर दिया और कहा कि राष्ट्रीय राजधानी में कानून व्यवस्था बनाए रखने में किसी भी तरह की चूक बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

राष्ट्र प्रथम की भावना भारत की प्रगति की कुंजी है: मुर्मू

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

नई दिल्ली, राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने मुल्क को विकसित देश बनाने के लिए शुक्रवार को लोगों के बीच राष्ट्र प्रथम की भावना पैदा करने के महत्व पर जोर दिया। मुर्मू यहां राष्ट्रवादी विचारकों की एक संगोष्ठी, लोकमंथन-2024 के उद्घाटन के अवसर पर एक सभा को संबोधित कर रही थीं। राष्ट्रपति ने कहा कि औपनिवेशिक शासकों ने न केवल भारत का आर्थिक शोषण किया बल्कि इसके सामाजिक ताने-बाने को भी नष्ट करने का प्रयास किया। उन्होंने कहा, (औपनिवेशिक)

शासकों ने हमारी समृद्ध बौद्धिक परंपराओं की उपेक्षा की, उन्होंने नागरिकों में सांस्कृतिक हीनता की भावना पैदा की। हमारी एकता को कमजोर करने के लिए ऐसी प्रथाएं हम पर थोपी गईं। सदियों की पराधीनता ने नागरिकों को गुलामी की मानसिकता में पहुंचा दिया। विकसित भारत के लिए राष्ट्र प्रथम की भावना पैदा करना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि भारतीय समाज को विभाजित करने और कृत्रिम मतभेद पैदा करने के प्रयासों का उद्देश्य एकता को कमजोर करना था। हालांकि, उन्होंने कहा कि भारतीयता की भावना ने राष्ट्रीय एकता की लौ को जीवित रखा है।

सहारनपुर में शताब्दी एक्सप्रेस पर पथराव किया गया

संवाददाता / अमन लेखनी समाचार

सहारनपुर, उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले में नई दिल्ली से देहरादून जाने वाली शताब्दी एक्सप्रेस पर अराजक तत्वों ने पथराव कर दिया जिससे सी 2 कोच का शीशा टूट गया। पुलिस ने यह जानकारी दी। उसके अनुसार सूचना मिलते ही राजकीय रेलवे पुलिस (जीआरपी) और रेल पुलिस बल (आरपीएफ) तुरंत ही घटनास्थल पर पहुंचे लेकिन तब तक अराजक तत्व फरार हो चुके थे। पुलिस अधीक्षक (नगर) अभिमन्यु मांगलिक ने बताया कि 17 नवम्बर को दिल्ली देहरादून शताब्दी एक्सप्रेस करीब दस बजे दिन में सहारनपुर पहुंची और यहां इंजन बदलकर लगभग आधा घण्टे के बाद देहरादून रवाना हो गयी। उन्होंने बताया कि जब यह ट्रेन अस्पताल पुल और खानआलमपुरा यार्ड के बीच पहुंची तब कुछ अराजक तत्वों ने पथराव किया जिससे सी 2 कोच की सीट नम्बर 18 और 19 की खिड़की का शीशा टूट गया। मांगलिक के मुताबिक एक यात्री की सूचना पर आरपीएफ और जीआरपी के अधिकारी मौके पर पहुंचे लेकिन तब तक शरारती तत्व वहां से भाग चुके थे। मांगलिक ने बताया कि इस मामले मे खानआलमपुरा आरपीएफ चौकी प्रभारी सत्यप्रकाश ने बुधवार शाम पुलिस में तहरीर दी जिसके आधार पर मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी गई।

संक्षिप्त समाचार

आलू, प्याज की बढ़ती कीमतों को लेकर ममता ने जताई चिंता

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

कोलकाता, पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने आलू और प्याज की बढ़ती कीमतों को लेकर बृहस्पतिवार को चिंता जताई और उन्होंने इन सब्जियों को बाहर बेचे जाने पर आश्चर्य व्यक्त किया। बनर्जी ने राज्य सचिवालय में एक बैठक के दौरान कहा, मैंने आलू और प्याज के पर्याप्त भंडार रखने के निर्देश दिए थे लेकिन इसका पालन नहीं किया गया है। कृपया भंडारण की स्थिति देखें और तुरंत रिपोर्ट दें। उन्होंने आरोप लगाया कि इन सब्जियों को राज्य से बाहर ले जाया गया है।

काले झंडे लहराना अवैध या अपमानजनक नहीं : केरल उच्च न्यायालय

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

नई दिल्ली, केरल की वाम सरकार को झटका देते हुए यहां उच्च न्यायालय ने कहा कि मुख्यमंत्री के काफिले के समक्ष काले झंडे लहराना कोई गैरकानूनी कृत्य नहीं है और यह मानहानि के समान नहीं है। न्यायमूर्ति बी कुरियन थॉमस का फैसला महत्वपूर्ण है क्योंकि पिछले साल राज्य सरकार के जनसंपर्क कार्यक्रम नव केरल सदास के दौरान मुख्यमंत्री पिनराई विजयन को काले झंडे दिखाने के लिए कई युवा कांग्रेस कार्यकताओं को पुलिस कार्रवाई का सामना करना पड़ा था। न्यायमूर्ति थॉमस ने कहा, हालांकि दृष्टिगोचर होने वाले संकेत किसी व्यक्ति को बदनाम करने का एक तरीका हो सकते हैं, फिर भी किसी व्यक्ति को काला झंडा दिखाना या लहराना मानहानि नहीं हो सकता है और न ही यह एक अवैध कृत्य है। अदालत ने यह फैसला 2017 में यहां के पास उत्तरी परवूर से गुजर रहे विजयन के काफिले के आगे काले झंडे लहराने के लिए तीन व्यक्तियों के खिलाफ अंतिम रिपोर्ट को रद्द करते हुए दिया। अदालत ने कहा कि आम तौर पर काला झंडा लहराना विरोध दशार्ने का संकेत है और जब तक इसे प्रतिबंधित करने वाला कोई कानून नहीं बनाया जाता तब तक ऐसा आचरण मानहानि के अपराध के दायरे में नहीं आता।

ज्ञानवापी मामले में सुप्रीम कोर्ट ने मुस्लिम पक्ष को जारी किया नोटिस, दो सप्ताह में मांगा जवाब

संवाददाता/ अमन लेखनी समाचार

लखनऊ, ज्ञानवापी मामलाः एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम में सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को ज्ञानवापी मस्जिद परिसर में कथित शिवलिंग का भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) से सर्वेक्षण कराने की मांग वाली याचिका पर मुस्लिम पक्ष को नोटिस जारी किया। यह याचिका हिंदू पक्ष की ओर से कोर्ट में दाखिल की गई थी। इस पर सुनवाई के बाद सुप्रीम कोर्ट ने मुस्लिम पक्ष को नोटिस जारी कर दो सप्ताह में जवाब

मांगा है। न्यायमूर्ति सूर्यकांत और न्यायमूर्ति उज्ज्वल भुइयां की पीठ ज्ञानवापी मामले में वाराणसी की निचली अदालत में चल रहे सभी 15 मामलों को हाईकोर्ट में स्थानांतरित करने की हिंदू पक्ष की मांग पर सुनवाई कर रही थी।

सुप्रीम कोर्ट के समक्ष मामला पेश करते हुए हिंदू पक्ष के वकील ने कहा कि कुछ याचिकाएं जिला जज और कुछ सिविल जज के समक्ष हैं। ऐसे में एक ही मामले पर अलग-अलग कोर्ट से अलग-अलग आदेश आ रहे हैं। इसलिए हमारी मांग है कि ज्ञानवापी से जुड़ी सभी याचिकाओं को एक साथ जोड़कर इलाहाबाद हाईकोर्ट में तीन जजों की बेंच के समक्ष स्थानांतरित किया जाए। मुस्लिम पक्ष के वकील ने कहा कि हिंदू पक्ष वुजुखाना के सील किए गए इलाके का एएसआई सर्वे चाहता है। जिला कोर्ट ने इस मांग को खारिज कर दिया था, जिसके बाद हाईकोर्ट ने इसकी इजाजत दे दी। हमने इसके खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की थी। उस याचिका पर फैसला अभी लंबित है।

आंखों में जलन, गले में खराश, प्रदूषण पर राहुल का बड़ा बयान

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

नई दिल्ली, लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने शुक्रवार को कहा कि उत्तर भारत में वायु प्रदूषण एक राष्ट्रीय आपातकाल है जिसके लिए राजनीतिक दोषारोपण के बजाय सामूहिक प्रतिक्रिया की आवश्यकता है। गांधी ने अपना एक वीडियो साझा करते हुए एक्स पर लिखा कि उत्तर भारत में वायु प्रदूषण एक राष्ट्रीय आपातकाल है। एक सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट जो हमारे बच्चों का भविष्य छीन रहा है और बुजुर्गों का दम घोंट रहा है और एक पर्यावरणीय और आर्थिक आपदा है जो अनगिनत जिंदगियों को बर्बाद कर रहा है। उत्तर भारत के कई शहर, विशेष रूप से दिल्ली और इसके आसपास के शहर नोएडा, गाजियाबाद, गुरुग्राम और फरीदाबाद, पिछले कुछ हफ्तों से गंभीर

वायु प्रदूषण से जूझ रहे हैं।

राहुल गांधी ने कहा कि वायु प्रदूषण के कारण गरीबों को सबसे ज्यादा परेशानी होती है, वे अपने आसपास की जहरीली हवा से बच नहीं पाते हैं, उन्होंने कहा कि जहरीली हवा पर्यटन और वैश्विक प्रतिष्ठा में भी गिरावट का कारण बन रही है। उन्होंने लिखा कि परिवार स्वच्छ हवा के लिए हांफ रहे हैं, बच्चे बीमार पड़ रहे हैं और लाखों जिंदगियां खत्म हो रही हैं। पर्यटन घट रहा है और हमारी वैश्विक प्रतिष्ठा गिर रही है।

दिल्ली में शुक्रवार सुबह धुंध छाई रही और न्यूनतम तापमान 11.3 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। वहीं, वायु गुणवत्ता बेहद खराब श्रेणी में बनी रही तथा वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 373 दर्ज किया गया। दिल्ली के 38 निगरानी केंद्रों में से नौ में एक्यूआई गंभीर श्रेणी में दर्ज किया गया। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के आंकड़ों के मुताबिक, ये केंद्र आनंद विहार, बवाना, जहांगीरपुरी, मुंडका, नेहरू नगर, शादीपुर, सोनिया विहार, विवेक विहार और वजीरपुर हैं। चार सौ या इससे अधिक एक्यूआई को गंभीर श्रेणी में माना जाता है और इससे स्वास्थ्य को गंभीर खतरा हो सकता है।

राहुल गांधी सही हैं, अदाणी को गिरफ्तार किया जाना चाहिए : लालू

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

नई दिल्ली, , राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव ने भ्रष्टाचार के आरोपी उद्योगपति गौतम अदाणी की तत्काल गिरफ्तारी की कांग्रेस नेता राहुल गांधी की मांग का पुरजोर समर्थन किया है। बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री ने अमेरिका में अदाणी समूह के खिलाफ रिश्वतखोरी और धोखाधड़ी के आरोपों की पृष्ठभूमि मेंशुक्रवार को यहां संवाददाताओं के सवालों के जवाब में यह बात कही। कांग्रेस के पुराने सहयोगी और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के कट्टर विरोधी प्रसाद ने कहा, राहुल गांधी सही हैं। अदाणी को गिरफ्तार किया जाना चाहिए। राजद अध्यक्ष, जो संयोगवश चारा घोटाले के कई मामलों में दोषी ठहराए जा चुके हैं और जमानत पर हैं। संवाददाताओं ने उनसे झारखंड में विपक्षी इंडिया गठबंधन की

संभावनाओं के बारे में भी पूछा। उन्होंने संवाददाताओं के सवालों के जवाब में कहा, मैं अपने उस बयान पर ध्यान केंद्रित करना चाहूंगा कि अदाणी को गिरफ्तार किया जाना चाहिए। मैं झारखंड में नयी सरकार के बारे में ज्यादा चिंतित नहीं हूं, जहां हम पहले से ही सत्ता में हैं। झारखंड में इंडिया गठबंधन और भाजपा के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) के बीच सीधा मुकाबला है, जिसमें नीतीश कुमार की अगुवाई वाली जनता दल (यूनाइटेड) शामिल है, जो लालू प्रसाद के कट्टर प्रतिद्वंद्वी और बिहार के वर्तमान मुख्यमंत्री हैं।

सुप्रीम कोर्ट का बड़ा फैसला, सचिवों की अयोग्यता पर लगाई रोक

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

नई दिल्ली, सुप्रीम कोर्ट ने हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय के आदेश पर आंशिक रूप से रोक लगा दी है, जिसने राज्य में छह संसदीय सचिवों की नियुक्ति को रद्द कर दिया था। शीर्ष अदालत का फैसला उच्च न्यायालय के फैसले को चुनौती देने वाली राज्य सरकार की याचिका पर आया, जिसने नियुक्त विधायकों के खिलाफ अयोग्यता की कार्यवाही को प्रभावी ढंग से रोक दिया था। हिमाचल प्रदेश सरकार ने उच्च न्यायालय के उस आदेश के खिलाफ अपील दायर की थी, जिसने छह संसदीय सचिवों की नियुक्तियों को अवैध घोषित कर दिया था और फैसला सुनाया था कि ये पद संवैधानिक मानदंडों का उल्लंघन हैं। राज्य सरकार ने तर्क दिया कि नियुक्तियाँ कानून के दायरे में की गईं, और उच्च न्यायालय के फैसले पर

तत्काल रोक लगाने की मांग की।

अपने फैसले में सुप्रीम कोर्ट ने यथास्थिति बनाए रखी है, जिससे नियुक्त विधायकों को फिलहाल पद पर बने रहने की अनुमति मिल गई है। हालांकि, कोर्ट ने साफ कर दिया है कि अंतिम फैसला आने तक हिमाचल प्रदेश में संसदीय सचिव के पद पर कोई नई नियुक्ति नहीं होगी। मुख्य न्यायाधीश संजीव खन्ना और न्यायमूर्ति संजय कुमार की सुप्रीम कोर्ट की पीठ ने उन याचिकाकताओं को नोटिस जारी किया जिन्होंने उच्च न्यायालय के फैसले को चुनौती दी थी। याचिकाकताओं को दो सप्ताह के भीतर जवाब देने का निर्देश दिया गया है। कानूनी विवाद 13 नवंबर को उच्च न्यायालय के फैसले से उत्पन्न हुआ है, जिसने संसदीय सचिवों के पद पर छह विधायकों की नियुक्तियों को असंवैधानिक मानते हुए रद्द कर दिया था। इन पदों को ऐसे पदों के निर्माण के संबंध में शीर्ष अदालत द्वारा निर्धारित सिद्धांतों का उल्लंघन माना गया था।

डॉ. राजेश्वर सिंह ने युवाओं से 2047 तक भारत को 15 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने के लिए 5 साहसिक लक्ष्य का आह्वान किया

भारत का भविष्य अब युवाओं के हाथों में : इनोवेशन, प्रोस्पेरिटी और सस्टेनिबिलिटी के क्षेत्र में विश्व का करें नेतृत्व - डॉ. राजेश्वर सिंह

अमन लेखनी समाचार

सरोजनीनगर, लखनऊ। सरोजनीनगर विधायक डॉ. राजेश्वर सिंह युवाओं को लगातार प्रगति के संसाधन उपलब्ध कराने के साथ ही उन्हें भविष्य के अवसरों के प्रति प्रोत्साहित भी करते रहते हैं। इसी क्रम में विधायक ने शुक्रवार को अपने सोशल मीडिया अकॉउंट पर पोस्ट पर भारत को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने के लिए युवाओं को 5 साहसिक लक्ष्यों से अवगत कराते हुए उनकी प्राप्ति के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित किया।

डॉ. सिंह ने आर्थिक विकास का उल्लेख करते हुए लिखा अमेरिका ने वर्ष 2023 तक 25 ट्रिलियन डॉलर की जीडीपी हासिल की है और चीन ने 19 ट्रिलियन डॉलर की जीडीपी हासिल की है। भारत को 2047 तक 15 ट्रिलियन डॉलर जीडीपी का लक्ष्य प्राप्त करना है, जिससे भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन सके। प्रति व्यक्ति आय को 10,000 डॉलर तक पहुंचाना होगा, ताकि लाखों लोग मध्य आय वर्ग में सम्मिलित हो सकें।

वैश्विक प्रौद्योगिकी को उल्लेखित करते हुए सरोजनी नगर विधायक ने आगे जोड़ा दक्षिण कोरिया अपनी जीडीपी का 4.8% रिसर्च एवं डेवलपमेंट में निवेश करता है, जिस कारण एआई तथा सेमीकंडक्टर्स में अग्रणी है; अमेरिका स्पेस टेक्नोलॉजी और एआई में प्रभुत्व रखता है। भारत को 2035 तक जीडीपी का 3% रिसर्च एवं डेवलपमेंट में निवेश कर दुनिया के शीर्ष 5 देशों में शामिल होना होगा, विशेष रूप से एआई, क्वांटम कंप्यूटिंग और ग्रीन हाइड्रोजन के क्षेत्र में।

सार्वभौमिक अवसंरचना का उल्लेख करते हुए डॉ. सिंह ने आगे लिखा जापान में करीब 3 हजार किलोमीटर बुलेट ट्रेन नेटवर्क है, चुओ शिंकानसेन मैग्लेव प्रोजेक्ट पूरा होने पर 500 किलो मीटर प्रति घंटा की रफ़्तार से ट्रेनों का संचालन संभव हो जाएगा। भारत को 2040 तक 100% स्मार्ट सिटीज के साथ ग्रीन इंफ़्रास्ट्रकचर का निर्माण और 2030 तक सभी गांवों को 24/7 बिजली, परिवहन और डिजिटल पहुंच से जोड़ना चाहिए।

सामाजिक सशक्तिकरण का उल्लेख करते हुए हुए विधायक ने आगे लिखा स्वीडन में महिला कार्यबल की भागीदारी 61% है; जर्मनी ने गरीबी को 5% तक के निचले स्तर तक पहुंचा दिया है। भारत को 2035 तक 100% साक्षरता लक्ष्य प्राप्त करना चाहिए, महिला कार्यबल में भागीदारी को 50% तक बढ़ाना चाहिए, और लक्षित सामाजिक सुधारों के माध्यम से गरीबी को 3% से नीचे लाना चाहिए।

पर्यावरणीय स्थिरता का उल्लेख करते हुए विधायक ने आगे लिखा फ्रांस अपनी बिजली का 70% न्यूक्लियर एनर्जी से उत्पन्न करता है; नॉर्वे 98% रिनीवल एनर्जी पर निर्भर है। भारत को 2030 तक 50% रिनीवल एनर्जी का उपयोग और 2070 तक कार्बन तटस्थता प्राप्त करनी चाहिए, साथ ही वन क्षेत्र को 33% तक बढ़ाना चाहिए।

विधायक डॉ. सिंह ने युवाओं को प्रेरित करते हुए आगे लिखा भारत को अमेरिका और जापान जैसे वैश्विक शक्ति केंद्रों में परिवर्तित होना होगा, जो नवप्रवर्तन, समृद्धि और स्थिरता में विश्व का नेतृत्व करें। हमें अपना सर्वोत्तम प्रयास करना होगा ताकि भारत एक महान शक्ति बन सके। हमारे पास विचार, प्रज्ञा, मेधा, ऊर्जा और जनशक्ति है, जो दुनिया में कहीं और नहीं है, जिसे बस ध्यान और निरंतर प्रेरणा की आवश्यकता है। डॉ. सिंह ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और सीएम योगी की प्रशंसा करते हुए आगे लिखा कि देश के प्रधानमंत्री और यूपी के मुख्यमंत्री देश प्रदेश के नव निर्माण में अपना सर्वोत्कृष्ट योगदान दे रहे हैं, हमें भी अपना सर्वोत्तम प्रयास करना चाहिए।

सरोजनीनगर में अपने प्रयासों का उल्लेख करते हुए विधायक ने आगे लिखा युवाओं को डिजिटल एवं तकनीकी रूप से सशक्त बनाने के लिए रण बहादुर सिंह डिजिटल शिक्षा एवं युवा सशक्तिकरण केंद्रों की स्थापना, मातृशक्ति को स्वावलंबी बनाकर प्रगति की मुख्यधारा में शामिल करने के लिए ताराशक्ति केंद्रों की स्थापना, पर्यावरण संरक्षण के लिए वृहद वृक्षारोपण और रुद्राक्ष वृक्षारोपण महाअभियान, ग्रीन एनर्जी के प्रोत्साहन के लिए हर घर सोलर ड्राइव आदि योजनाएं निरंतर संचालित हैं। विधायक ने युवाओं को प्रोत्साहित करते हुए आगे लिखा भारत का भविष्य, अब युवाओं के हाथों में है।

सपा कार्यकर्ताओं ने पूर्व मुख्यमंत्री की 85 वीं जयंती पर श्रद्धा सुमन किया अर्पित

अमन लेखनी समाचार

मोहनलालगंज लखनऊ, शुक्रवार को विधानसभा क्षेत्र मोहनलालगंज के समाज वादी पार्टी कार्यालय बिन्दौवा में पूर्व विधायक अम्ब्रीश सिंह पुष्कर ने श्रद्धेय नेताजी की 22 नवम्बर 2024 धरतीपुत्र पूर्व मुख्यमंत्री स्वर्गीय मुलायम सिंह यादव की 85 वीं जयंती समारोह पर श्रृद्धा सुमन अर्पित किया और गरीब परिवार की सैकड़ों महिलाओं को साड़ी वितरण किया। इस जयंती समारोह के अवसर पर राष्ट्रीय सचिव अधिवक्ता श्रवण यादव विधान सभा अध्यक्ष उमाशंकर वर्मा जिला उपाध्यक्ष नवनीत सिंह हरीशंकर रावत आदि कार्यकताओं पदाधिकारियों ने कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना सहयोग दिया

अस्सी किसानों को बांटा गया लहसुन का बीज

अमन लेखनी समाचार

लखनऊ। किसानों को परम्परागत खेती से इतर सब्जियों और मसालों की खेती की तरफ बढ़ाने के प्रदेश सरकार प्रयास करने लगी है। इसी क्रम में मलिहाबाद में किसानों को लहसुन के बीजों का वितरण किया गया है। प्रदेश सरकार मसाला फसलों की खेती को बढ़ावा देने के मकसद से उद्यान विभाग के माध्यम से लहसुन की खेती के लिए किसानों को निशुल्क गुणवत्तापूर्ण बीज उपलब्ध करा रही है। खरीफ फसल के अंतर्गत लहसुन की खेती के लिए जिला औद्यानिक मिशन योजना के अंतर्गत माध्यम से मलिहाबाद क्षेत्र के 80 किसानों को बुवाई के लिए लहसुन के बीज का वितरण किया गया। मलिहाबाद विकासखंड प्रभारी प्रदीप ने बताया कि गुणवत्तापूर्ण बीज उद्यान विभाग प्रथम आवक प्रथम पावक की तर्ज पर किसानों को उपलब्ध कराया गया है। इस मौके पर मलिहाबाद सहायक आदित्य श्रीवास्तव सहित क्षेत्र के दर्जनों किसान मौजूद रहे।

उत्तर प्रदेश के इन नौ जिलों में होगा शहरों का विस्तारीकरण, खर्च होंगे चार हजार करोड़ रुपये

अमन लेखनी समाचार

लखनऊ। कैबिनेट ने प्रदेश के नौ जिलों में शहरों के विस्तारीकरण पर 4164 करोड़ रुपये खर्च करने संबंधी प्रस्ताव को स्वीकृति प्रदान कर दी है। इसके लिए पहली किस्त के रूप में 1,285 करोड़ रुपये जारी किए जाएंगे। मुख्यमंत्री शहरी विस्तारीकरण एवं नए शहरों के प्रोत्साहन के लिए शुरू की गई योजना के तहत भूमि अर्जन पर 20 वर्षों की अवधि के लिए 50 प्रतिशत व्यय सीड कैपिटल के रूप में राज्य सरकार करेगी। वित्त मंत्री सुरेश खन्ना ने बताया कि नए शहरों के विस्तारीकरण से संबंधित सहारनपुर, मथुरा-वृन्दावन, फिरोजाबाद-शिकोहाबाद, लखनऊ, मुरादाबाद, खुर्जा, बांदा व मेरठ विकास प्राधिकरणों तथा आवास एवं विकास परिषद की 14 परियोजनाओं पर 4164 करोड़ रुपये के खर्च का अनुमान है। इसके सापेक्ष पहली किस्त के रूप में 1285 करोड़ रुपये की राशि जारी की जाएगी। उन्होंने बताया कि इससे शहरों के विस्तारीकरण व नए शहरों को विकसित करने में संबंधित प्राधिकरणों को आसानी होगी। संबंधित शहरों में लोगों को ज्यादा से ज्यादा आवास उपलब्ध हो सकेंगे। इस योजना के तहत शहरों के सुनियोजित विकास में भी मदद मिलेगी। नए शहरों के विकास के लिए सरकार ने वर्तमान वित्तीय वर्ष में तीन हजार करोड़ रुपये के बजट का प्रावधान किया है।

सामुदायिक रेडियो से फैलाएंगे स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता

सामुदायिक रेडियो की मदद से स्वास्थ्य के प्रति लोगों को जागरूक किया जाएगा। वह किस तरह स्वस्थ रहें इसके नुस्खे उन्हें बताए जाएंगे। वहीं स्वास्थ्य सेवाओं के बारे में भी उन्हें जानकारी दी जाएगी। सामुदायिक रेडियो के 33 अधिकारियों को इसके विषय में प्रशिक्षित किया गया है। शुक्रवार को प्रमुख सचिव, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य पार्थ सारथी सेन शर्मा ने इन अधिकारियों को रेडियो में मनोरंजन के साथ-साथ नई फैल रही बीमारियों के बारे में भी लोगों को जागरूक करने की सलाह दी। बिल एंड मिलिंडा गेट्स फाउंडेशन व स्मार्ट संस्था के सहयोग से आयोजित वर्कशाप में स्टेट एजेंसी फार कांप्रिहेंसिव हेल्थ एंड इंटीग्रेटेड सर्विसेज (साचीज) की सीईओ संगीता सिंह ने कहा कि सामुदायिक रेडियो के माध्यम से लोगों को यह बताया जाना चाहिए कि किस तरह वह घर बैठे आयुष्मान भारत-प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना का लाभ लेने के लिए आयुष्मान कार्ड बना सकते हैं। वर्तमान में 70 वर्ष व उससे अधिक आयु के लोगों के कार्ड बनाए जा रहे हैं। ऐसे में बुजुर्ग लोगों की मदद उन्हें सही जानकारी देकर की जानी चाहिए।

नेताजी की मनाई गई 85वीं जयंती, याद किए गए स्व. मुलायम सिंह यादव

● हीरालाल यादव सेवा संस्थान की ओर से अखिल भारतीय कवि सम्मेलन एवं मुशायरे का किया गया आयोजन

अमन लेखनी समाचार

सरोजनीनगर, लखनऊ। पूर्व सपा संरक्षक स्व. मुलायम सिंह यादव की 85वीं जयंती की पूर्व संध्या पर गुरूवार देर शाम सरोजनीनगर के स्कूटर इण्डिया - बिजनौर रोड स्थित स्काई पब्लिक स्कूल परिसर में हीरालाल यादव सेवा संस्थान की ओर से अखिल भारतीय कवि सम्मेलन एवं मुशायरे का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व सांसद व राष्ट्रीय कवि उदय प्रताप सिंह ने स्व. मुलायम सिंह यादव की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करने के साथ दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इस दौरान कार्यक्रम आयोजक पूर्व विधायक श्याम किशोर यादव ने मुख्य अतिथि उदय प्रताप सिंह को अंग वस्त्र व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम में कवि डॉ. विष्णु सक्सेना व शायर सबीना अदीब के अलावा डॉ. सर्वेश अस्थाना, विकास बौखल, नदीम फारुख, हेमंत पांडेय, अशोक अग्निपथी, आदिल रशीदी, उमाशंकर, कृष्ण कुमार मौर्य 'सरल', डॉ. अशोक अज्ञानी और आसिफ काकोरवी को भी सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में सभी कवियों और शायरों ने अपनी कविता व शायरी के माध्यम से स्व. मुलायम सिंह यादव के व्यक्तित्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। जबकि हास्य एवं व्यंग के कवियों ने अपनी रचनाएं सुनाकर सभी को लोटपोट कर दिया। इस दौरान पूरा पंडाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंजता रहा। देर रात तक चले कार्यक्रम में कुछ कवियों ने वीर रस और देशभक्ति पर भी अपनी रचनाएं प्रस्तुत की। इस मौके पर विशिष्ट अतिथि के रूप में मोहनलालगंज सांसद आरके चौधरी, सपा प्रदेश उपाध्यक्ष सीएल वर्मा, सपा जिलाध्यक्ष जय सिंह जयंत और सपा के सरोजनीनगर विधानसभा अध्यक्ष चंद्रशेखर यादव के अलावा जिला प्रधान संघ के पूर्व जिलाध्यक्ष जगनायक सिंह चौहान सहित भारी संख्या में सपा पदाधिकारी व कार्यकताओं के अलावा आसपास के लोग मौजूद रहे। देर रात हुए कार्यक्रम समापन के दौरान पूर्व विधायक श्याम किशोर यादव और हीरालाल यादव ग्रुप ऑफ इंस्टिट्यूशन के चेयरमैन एडवोकेट राम सिंह यादव ने सभी अतिथियों और आगंतुकों का आभार व्यक्त किया।

अयोध्या सामूहिक बलात्कार मामला: मोईद अहमद ने दाखिल की दूसरी जमानत याचिका

अमन लेखनी समाचार

अयोध्या, अयोध्या सामूहिक बलात्कार मामले में आरोपी सपा नेता मोईद अहमद ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ पीठ में दूसरी जमानत याचिका दाखिल की है। उसकी याचिका बृहस्पतिवार को न्यायमूर्ति पंकज भाटिया की एकल पीठ के समक्ष सुनवायी के लिए सूचीबद्ध हुई। हालांकि न्यायमूर्ति पंकज भाटिया ने उक्त मामले की सुनवायी से खुद को अलग करते हुए, मामले को मुख्य न्यायमूर्ति से आदेश प्राप्त करने के पश्चात नियमित पीठ के समक्ष अगले सप्ताह सूचीबद्ध करने का आदेश दिया है। पिछली जमानत याचिका खारिज करते हुए न्यायालय ने कहा था कि आरोपी राजनीतिक तौर पर काफी ताकतवर है और उसके एवं पीड़िता और उसके परिवार के बीच बड़ा सामाजिक एवं आर्थिक फर्क है।

एसडीएम के पूर्व पेशकार व साथी पर धोखाधड़ी का मुकदमा दर्ज

अमन लेखनी समाचार

लखनऊ। मलिहाबाद तहसील में तैनात रहे तत्कालीन एसडीएम के पूर्व पेशकार व उसके एक साथी के खिलाफ धोखाधड़ी व धमकाने का मुकदमा दर्ज। आरोपी ने एक व्यक्ति से जमीन दिलाने के नाम पर लाखों रुपये ठगे थे।

रहीमाबाद थाना क्षेत्र के ग्राम भतोइया निवासी राघवेंद्र सिंह ने तहरीर के माध्यम से बताया कि वर्ष 2021 में मलिहाबाद तहसील में तैनात एसडीएम के पेशकार निर्भय सिंह से मुलाकात हुई थी। निर्भय ने उनको बताया कि उसका तबादला हो गया है और वह मोहान रोड स्थित तीन हजार वर्गफीट का प्लॉट बेच रहा है। उन्होंने बताया कि जमीन की कीमत 800 रुपये प्रति वर्ग तय हुई। राघवेंद्र ने 16 लाख रुपये बतौर एडवांस भी दे दिए एडवांस दिए। बचे हुए आठ लाख रुपये बैनामा के समय देने की बात तय हुई। पीड़ित का आरोप है कि इसके बाद निर्भय का तबादला सदर तहसील हो गया। उन्होंने जब उससे रजिस्ट्री करने के लिए कहा तो टालमटोल करने लगा।

आरोपी ने अपना तबादला सरोजनीनगर तहसील करवा लिया

शक होने पर पीड़ित ने छानबीन की तो पता चला कि जिस जमीन को बेचने का सौदा निर्भय ने तय किया था, वह जमीन उसकी नहीं है। इस बात का पता चलने पर पीड़ित ने निर्भय सिंह से अपने रुपये वापस मांगने शुरू किए तो वह उनको इधर-उधर टहलाने लगा इसके बाद आरोपी ने अपना तबादला सरोजनीनगर तहसील करवा लिया। पीड़ित रुपये वापसी के लिए लगातार चक्कर लगाता रहा पर आरोपी ने रुपये वापस नहीं किए।

इस बीच उसको पेशकार के पद से हटाते हुए राजस्व वसूली विभाग में तैनाती दे दी गई और उसको फिर से मलिहाबाद तहसील पोस्ट कर दिया गया। आरोप है कि निर्भय सिंह व उसके साथी मनीष तिवारी ने रुपये वापस मांगने पर उनके साथ हाथापाई करते हुए धमकी भी दी थी।

इस समय निलंबित चल रहा आरोपी

पीड़ित ने पुलिस उपायुक्त पश्चिम से मिलकर शिकायत की। उपायुक्त पश्चिम के आदेश पर निर्भय और मनीष के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया है। इस संबंध में मलिहाबाद थाना प्रभारी निरीक्षक सतीश चंद्र साहू ने बताया कि मामले की जांच चल रही है।

उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र में बनाया जाएगा ग्रीन एनर्जी कॉरिडोर

अमन लेखनी समाचार

लखनऊ। बुंदेलखंड क्षेत्र में 619.90 करोड़ रुपये से ग्रीन एनर्जी (हरित ऊर्जा) कॉरिडोर बनाने के प्रस्ताव को कैबिनेट की बैठक में स्वीकृति प्रदान की गई है। केंद्र सरकार की ग्रीन एनर्जी कॉरिडोर-2 योजना के तहत निर्मित किए जाने वाले इस कॉरिडोर पर होने वाले खर्च का 33 प्रतिशत केंद्र सरकार व 20 प्रतिशत का अंश राज्य सरकार देगी। वहीं 47 प्रतिशत राशि पूंजीगत अनुदान के रूप में जर्मनी की कंपनी केएफडब्ल्यू से ली जाएगी। ऊर्जा मंत्री एके शर्मा ने बताया कि बुंदेलखंड क्षेत्र में सौर ऊर्जा उत्पादन के लिए 4,000 मेगावाट क्षमता का सोलर पार्क संयंत्र स्थापित किया जाएगा। साथ ही चित्रकूट, बांदा एवं निकटवर्ती क्षेत्रों में विद्युत आपूर्ति के लिए प्रदेश में स्थापित की जा रही 800 मेगावाट की सौर परियोजना से ऊर्जा की निकासी के लिए चित्रकूट में 400/220 केवी उपकेंद्र एवं लाइनों का निर्माण किया जाएगा। उन्होंने बताया कि उपकेंद्र का निर्माण 24 माह में पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। इसके निर्माण के बाद चित्रकूट व बांदा सहित निकटवर्ती क्षेत्रों में समुचित ऊर्जा की उपलब्धता सुनिश्चित हो जाएगी। इससे औद्योगिक, वाणिज्यिक, आवासीय गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा। वहीं, केंद्र सरकार की पीएम मित्र योजना के तहत लखनऊ-हरदोई में 1,000 एकड़ में मेगा एकीकृत वस्त्र क्षेत्र एवं परिधान (पीएम मित्र पार्क) को विकसित करने के लिए मास्टर डेवलपर के चयन को लेकर प्रक्रिया शुरू करने के प्रस्ताव को भी स्वीकृति प्रदान की गई है।

भुगतान के लिए गन्ना किसानों को नहीं करना पड़ेगा इंतजार

किसानों को अब सहकारी चीनी मिलों से गन्ना का भुगतान लेने के लिए इंतजार नहीं करना पड़ेगा। इस संदर्भ में कैबिनेट की बैठक में रखे गए प्रस्ताव को स्वीकृति प्रदान कर दी गई है। सरकार ने आगामी पेराई सत्र में गन्ना मूल्य के भुगतान के लिए उत्तर प्रदेश सहकारी बैंक लिमिटेड व जिला सहकारी बैंकों से उपलब्ध कराई जाने वाली कैश क्रेडिट लिमिट (नकद साख सीमा) के लिए शासकीय गारंटी प्रदान करने की व्यवस्था की है। साथ ही शासकीय गारंटी पर देय शुल्क को भी माफ कर दिया है। इससे गन्ना किसानों को सहकारी चीनी मिलों से भुगतान के लिए इंतजार नहीं करना पड़ेगा। कैबिनेट की बैठक में राशन की दुकानों पर रिकार्ड रजिस्टर रखने की अनिवार्यता समाप्त करने संबंधी प्रस्ताव को भी स्वीकृति प्रदान की गई है। प्रस्ताव में स्पष्ट किया गया है कि अब सभी राशन की दुकानों पर ई-पाश मशीनें लगा दी गई हैं। इन मशीनों में राशन वितरण संबंधी सारा रिकार्ड दर्ज हो जाता है। इसलिए रिकॉर्ड को लेकर अलग से रजिस्टर रखने की जरूरत नहीं है।

तारनपुर में डीएम ने धान के खेत में कराई क्रॉप कटिंग, सर्वहित में किसानों से डीएम ने की कई अपील

अमन लेखनी समाचार

गाजीपुर जिले के जमानियां क्षेत्र शासन की मंशा पर खेतों में धान की उपज की गुणवत्ता के साथ ही फसल की जानकारी लेने के लिए जिलाधिकारी आर्यका अखौरी ने राजस्व टीम के साथ जमानियां के तारनबांध गांव स्थित राधेश्याम के खेत में धान की क्रॉप कटिंग कराई। राजस्व सहित कृषि विभाग के साथ गांव में पहुंची डीएम ने 43.33 वर्ग मीटर या .0043 हेक्टेयर खेत में धान के फसल की क्रॉप कटिंग करके इसका शुभारंभ किया। जिसमें से मौके पर 32.530 किग्रा उपज निकली। इसके बाद कटिंग से निकली फसल की गुणवत्ता की जांच के साथ ही उसका वजन करया और उससे एरिया में हुई धान के फसल का अनुमान लगाया गया। बताया कि इस क्रॉप कटिंग से निकली फसल की रिपोर्ट शासन को भेजी जाएगी, जिससे क्षेत्र में फसल का अनुमान लगाया जाएगा। बताया कि पूरे प्रदेश के हर जिलों की हर तहसील क्षेत्र से ये रिपोर्ट शासन को भेजी जाती है, ताकि पूरे प्रदेश में फसलों का आंकड़ा मिल सके। बताया कि क्रॉप कटिंग प्रयोग के आधार पर जनपद में फसलों की औसत उपज और उत्पादन के आंकड़े तैयार किये जाते हैं, जिससे उत्पादन की सटीक जानकारी प्राप्त की जाती है। क्राप कटिंग के प्रयोग के आधार पर ओलावृष्टि, भारी वर्षा एवं अन्य नुकसान से फसलों की बीमा की राशि निर्धारित की जाती है।

मुख्य सचिव से मिले 20 प्रशिक्षु आईपीएस....

अमन लेखनी समाचार

लखनऊ। लखनऊ मुख्य सचिव से मिले 20 प्रशिक्षु आईपीएस अधिकारी। मुख्य सचिव मनोज सिंह ने बधाई, शुभकामनाएं दीं। कार्य अनुभव के लिहाज से यूपी काडर सर्वश्रेष्ठ है। यहां चुनौतियों के साथ एक्सपोजर का मौका मिलता है। यूपी पुलिस देश का सबसे बड़ा पुलिस बल है। सात सालों में यूपी पुलिस ने अलग पहचान बनाई है। पुलिस बल को नवीनतम टेक्नोलॉजी से लैस किया गया। यूपी पुलिस काफी प्रोफेशनल तरीके से कार्य कर रही है। देश-दुनिया में यूपी के बारे में धारणायें बदली हैं.....

महिला पुलिसकर्मियों व एन्टीरोमियो टीम द्वारा मिशन शक्ति अभियान के तहत महिलाओं/बलिकाओं को किया जा रहा जागरूक

अमन लेखनी समाचार

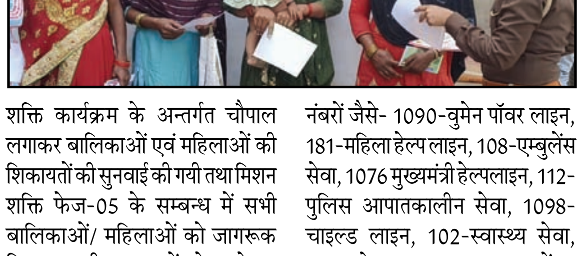

सोनभद्र। शासन की मंशा के अनुरूप महिलाओं/बेटियों को स्वावलंबी और सुरक्षित बनाने तथा उनके अधिकारों के सम्बंध में जागरूक करने व उनके साथ घटित होने वाले अपराधों पर प्रभावी रोकथाम करते हुए उनमें सुरक्षा/आत्मविश्वास की भावना जागृत करने के उद्देश्य से एक समग्र अभियान मिशन शक्ति फेज-05 अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम में आज दिनांक 22.11.2024 को नारी सुरक्षा/नारी सम्मान/नारी स्वावलंबन के प्रति पुलिस अधीक्षक सोनभद्र अशोक कुमार मीणा के निर्देशन में जनपद के समस्त थानों की शक्ति दीदी/महिला बीट आरक्षियों/एण्टीरोमियों टीम द्वारा अपने-अपने थाना क्षेत्रान्तर्गत बीट/गांव/मंदिरो/पॉर्को आदि में जाकर मिशन शक्ति कार्यक्रम के अन्तर्गत चौपाल लगाकर बालिकाओं एवं महिलाओं की शिकायतों की सुनवाई की गयी तथा मिशन शक्ति फेज-05 के सम्बन्ध में सभी बालिकाओं/महिलाओं को जागरूक किया, उनकी समस्याओं को सुनते हुए उन्हें मनचलों, अराजक तत्वों से निपटने तथा आत्मरक्षा करने के लिए आवश्यक आत्मरक्षात्मक गुण सिखाये गये इसके साथ ही उन्हें उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा बालिकाओं/महिलाओं की सुरक्षा एवं सहायता हेतु संचालित विभिन्न हेल्पलाइन नंबरों जैसे- 1090-वुमेन पॉवर लाइन, 181-महिला हेल्प लाइन, 108-एम्बुलेंस सेवा, 1076 मुख्यमंत्री हेल्पलाइन, 112-पुलिस आपातकालीन सेवा, 1098-चाइल्ड लाइन, 102-स्वास्थ्य सेवा, साइबर हेल्पलाइन 1930 तथा थानों पर स्थापित महिला हेल्प डेस्क के बारे में विस्तृत जानकारी के साथ-साथ महिला सशक्तिकरण से संबंधित उ0प्र0 शासन की विभिन्न योजनाओं व प्राथमिकताओ के सम्बन्ध में पंपलेट वितरित कर जागरूक किया गया।

संक्षेप

घने कोहरे के चलते वाहनों की रफ्तार हुई कम

उन्नाव। नवंबर के तीसरे सप्ताह में मौसम ने अचानक करवट ली, जिससे ठंड बढ़ने के साथ-साथ घना कोहरा छा गया। इस कोहरे का असर न केवल जनजीवन पर पड़ा, बल्कि परिवहन और दैनिक गतिविधियों को भी प्रभावित किया।लखनऊ-कानपुर राष्ट्रीय राजमार्ग और आगरा-लखनऊ एक्सप्रेसवे पर कोहरे की धनी चादर के कारण दृश्यता बेहद कम हो गई, जिससे वाहन चालकों को धीमी गति में गाड़ियां चलानी पड़ी। खासकर भारी वाहनों जैसे ट्रकों और बसों की रफ्तार में बड़ी गिरावट देखी गई। सड़क दुर्घटनाओं की आशंका बढ़ने से पुलिस और यातायात विभाग ने वाहन चालकों को सतर्कता बरतने की सलाह दी।शुक्रवार को न्यूनतम तापमान 12 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो ठंड की शुरूआत के लिहाज से काफी कम है। 5 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चलने वाली ठंडी हवाओं ने सर्दी के प्रभाव को और बढ़ा दिया। लोग गर्म कपड़ों में लिपटे नजर आए, और सुबह के समय बाजारों व सड़कों पर आवाजाही कम देखी गई।ठंड और कोहरे के कारण स्कूल जाने वाले बच्चों को विशेष सावधानी बरतनी पड़ी। छोटे बच्चों को गर्म कपड़ों में स्कूल जाते देखा गया। वहीं, कुछ स्कूलों ने देरी से कक्षाएं शुरू करने का निर्णय लिया ताकि छात्र-छात्राएं ठंड से बच सकें। कोहरे की वजह से रेलगाड़ियों की आवाजाही पर भी असर पड़ा। दृश्यता कम होने के कारण ट्रेनों की गति धीमी कर दी गई, जिससे कई ट्रेनें अपने निर्धारित समय से देरी से चलीं। रेलवे विभाग ने यात्रियों को सूचना देने की व्यवस्था की, लेकिन देरी के चलते उन्हें असुविधा का सामना करना पड़ा।

विद्युत करंट की चपेट से मजदूर की मौत

उन्नाव। दही थाना क्षेत्र में पॉवर हाउस के पास झाड़ियों की छंटाई कर रहे एक मजदूर की करंट लगने से दर्दनाक मौत हो गई। घटना मंगलवार सुबह की है, जब मौरावां थाना क्षेत्र के हीराखेड़ा गांव निवासी 25 वर्षीय अमित यादव बिजली की हाईटेंशन लाइन के नीचे झाड़ियां काट रहा था। अचानक झाड़ी काटते वक्त एक डाल हाईटेंशन लाइन से छू गई और अमित करंट की चपेट में आकर नीचे गिर पड़ा।घटना के तुरंत बाद मौके पर मौजूद अमित के साथी बऊवा, जगजीवन और नरेंद्र ने उसे उठाकर नजदीकी अस्पताल पहुंचाया। गंभीर हालत देखते हुए डॉक्टरों ने अमित को जिला अस्पताल रेफर कर दिया। लेकिन वहां पहुंचते ही डॉक्टर ने अमित को मृत घोषित कर दिया।अमित की मौत की खबर मिलते ही मां सुमित्रा, पिता राम सुमेर और बड़ा भाई मोहित का रो-रोकर बुरा हाल है। परिजनों ने बताया कि अमित ठेकेदार अंकित सिंह के अंडर में मजदूरी करता था। ग्रामीणों ने अमित की मौत को लेकर बिजली विभाग और ठेकेदार पर लापरवाही का आरोप लगाया है। ग्रामीणों का कहना है कि अमित को ठेकेदार की ओर से सुरक्षा उपकरण भी नहीं दिए गए थे। सूचना पर पहुंची दही थाना पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया। थानाध्यक्ष संजीव ने बताया कि घटना की जांच की जा रही है। आवश्यक विधिक कार्यवाही पूरी की जाएगी।

उम्मीद परियोजना के अंतर्गत बैठक संपन्न

अमन लेखनी समाचार

उन्नाव। परिवार नियोजन की सेवाओं की पहुँच तथा गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए स्वास्थ्य विभाग के मार्गदर्शन में मोबियस फाउंडेशन की वित्तीय सहायता से पॉपुलेशन फाउंडेशन ऑफ इंडिया द्वारा उम्मीद परियोजना का संचालन किया जा रहा है। इसी क्रम में सभी विभागों के साथ खण्ड विकास अधिकारी फहद खान की अध्यक्षता में ब्लॉक समन्वय समिति की बैठक की गयी। इस बैठक में प्रमुख रूप से स्वास्थ्य विभाग (नोडल विभाग), पंचायती राज विभाग, शिक्षा विभाग (बेसिक कार्यालय एवं सभी इन्टर कॉलेज), आई.सी.डी.एस., की प्रतिभागिता रही। बैठक में पॉपुलेशन फाउंडेशन ऑफ इण्डिया से कपिल श्रीवास्तव ने सभी का स्वागत करते हुए उम्मीद परियोजना के अंतर्गत कार्यक्रम की प्रगति को साझा किया,जिसमें विद्यालयों में गतिविधियाँ, समूह बैठक, स्वास्थ्य मेला,हस्ताक्षर

अभियान, शपथ कार्यक्रम आदि के द्वारा जन-जागरूकता कार्य किया जा रहा है। बैठक में खण्ड विकास अधिकारी फहद खान ने कहा कि सभी विभागों के साझा प्रयास द्वारा दी जा रही सेवाओं का लाभ समुदाय में सही से पहुंचे इसके लिए इस बैठक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है, उन्होंने बाल विवाह के विरुद्ध कार्यक्रम को बिछिया के विद्यालयों में आयोजित करने हेतु कहा। डॉ नरेंद्र कुमार, अधीक्षक सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, बिछिया ने कहा कि परिवार नियोजन कार्यक्रम की सफलता के लिए सभी विभागों का समन्वय आवश्यक है, निश्चय ही इस प्रयास से ब्लॉक में कार्यक्रम के प्रगति में तेजी आएगी। ब्लॉक कार्यक्रम प्रबन्धक ने स्वास्थ्य इकाईयों में परिवार नियोजन सेवाओं की उपलब्धता एवं कार्यक्रम के बारें में विस्तार से बताया, साथ ही किशोर स्वास्थ्य के अंतर्गत विद्यालयों में दी जा रही सेवाओं के बारें में भी चर्चा किया। प्रधानाचार्य, राजकीय बालिका इंटर कॉलेज ने कहा कार्यक्रम की शुरूआत उनके विद्यालय से की जा सकती है,इसमें पैरेंट्स-टीचर मीटिंग में भी इस मुद्दे पर चर्चा किया जा सकता है। कार्यक्रम में आगे बताते हुए कपिल श्रीवास्तव ने बताया कि उम्मीद परियोजना का उददेश्य जनपद में, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों (सीएचसी) और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों (पीएचसी) में परिवार नियोजन कॉर्नर की स्थापना करना, आरोग्य मंदिर और उप केंद्रों को परिवार नियोजन किट प्रदान करना,उच्च गुणवत्ता वाली सेवाएं और परामर्श के लिए स्वास्थ्य प्रदाताओं,एएनएम और आशाओं को प्रशिक्षित करना,व्यवहार परिवर्तन (एसबीसीसी) टूल और जॉब एड्स का प्रभावी ढंग से उपयोग करने के लिए उनके कौशल में सुधार करना,और समुदायों के बीच परिवार कल्याण जागरूकता और स्वीकृति बढ़ाना है। इसके साथ ही कम उम्र में विवाह, किशोर गर्भावस्था, नए तरीकों और पुरुष सहभागिता सहित गर्भनिरोधक विकल्पों के बारे में जागरूकता अभियान आयोजित करना है कार्यक्रम में मुख्य रूप से बी.डी.ओ. फहद खान, सी.डी.पी.ओ. मो. साजिद अंसारी, ममता यादव, सबरीन आदि मौजूद रहे।

अधिवक्ताओं का दूसरे दिन भी जारी रहा धरना प्रदर्शन

अमन लेखनी समाचार

बांगरमऊ, उन्नाव। स्थानीय तहसील बार एसोसिएशन द्वारा कार्यालय भवन के बरामदे में भ्रष्टाचार को लेकर आज शुक्रवार को भी धरना प्रदर्शन जारी रहा। धरने पर बैठे अधिवक्ताओं का आरोप है कि भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के मामले में अभी तक एसडीएम ने वार्ता करने का प्रयास नहीं किया है।

बार एसोसिएशन के अध्यक्ष सुभाष चन्द्र शुक्ला के नेतृत्व में अधिवक्ताओं द्वारा तहसील कार्यालय में व्याप्त लूट-खसोट, घूसखोरी और प्राइवेट कर्मचारियों की मनमानी व अवैध धन वसूली और जन्म- मृत्यु प्रमाण पत्रों की सत्यापन मे देरी को लेकर आज शुक्रवार को भी धरना प्रदर्शन जारी रहा। तहसील कार्यालय के बरामदे में बैठे प्रदर्शनकारी अधिवक्ता वार्ता हेतु उपजिलाधिकारी नम्रता सिंह का इंतजार कर ही रहे थे। तभी फतेहपुर 84 थाना क्षेत्र के गांव की एक वृद्धा आ धमकी। वृद्धा द्वारा अधिवक्ताओं से शिकायती की गई कि

करीब चार वर्ष पूर्व उसके पति की मृत्यु हो गई थी। उसके पुत्र ने खेती की विरासत के लिए हल्का लेखपाल को एक हजार रुपए नगदी दी थी। किंतु लेखपाल खेतौनी पर विरासत दर्ज में हीलाहवाली कर रहा है। इसीलिए वह तहसीलदार से शिकायत करने आई है। वृद्धा द्वारा शिकायत करने के दौरान एक नायब तहसीलदार ने हस्तक्षेप करना चाहा। तभी अधिवक्ताओं और नायब तहसीलदार के बीच गरमागरम बहस होने लगी। धरने पर बैठे अधिवक्ता शाम तक भ्रष्टाचार के मुद्दे पर बात करने हेतु उपजिलाधिकारी नम्रता सिंह के धरना स्थल पर आने का इंतजार करते रहे। किंतु एसडीएम अधिवक्ताओं से बात करना गंवारा नहीं किया। अंततः अधिवक्ताओं ने अगले दिन भी धरना प्रदर्शन जारी रखने का ऐलान कर दिया। प्रदर्शन में बार एसोसिएशन अध्यक्ष सुभाष चंद्र शुक्ला, मंत्री राजमणि हंस, अजीत द्विवेदी, उपाध्यक्ष प्रतीक कटियार,मुजम्मिल अहमद, राकेश चौरसिया, रामपाल यादव, मनोज गौतम, श्रीकांत द्विवेदी, कृष्णकांत कनौजिया, आदित्य तिवारी, सुरेंद्र बाबू, मनोज सेंगर, शादाब खान, दिनेश गोयल, छोटेलाल गौतम, सुरभ श्रीवास्तव आदि मौजूद रहे।

पुलिस मुठभेड़ में लुटेरा घायल

अमन लेखनी समाचार

उन्नाव। अजगैन थाना क्षेत्र में अपाचे मोटरसाइकिल से भाग रहे एक लुटेरे को पुलिस ने मुठभेड़ के दौरान गोली मारी। जिससे वह घायल हो गया। लुटेरा लखनऊ के दुब्बगा का रहने वाला है। उसने 29 अगस्त को बाइक सवार पति-पत्नी से लूट की वारदात को अंजाम दिया था। पुलिस ने उसे पकड़ने के बाद उसके पास से अवैध हथियार और लूट के अन्य सामान बरामद किए हैं।जानकारी के अनुसार बीते 29 अगस्त को संतोष कुमार और उनकी पत्नी उमा अपनी बेटी के साथ बाइक से लखनऊ से अपने घर केवाना, अजगैन लौट रहे थे। तभी अजगैन थाना क्षेत्र के नवाबगंज के पास बाइक सवार दो लोगों ने उनकी बाइक को टक्कर मार दी। जिससे वे गिर पड़े। गिरने के बाद लुटेरे ने संतोष कुमार की पत्नी का पर्स छीन लिया। जिसमें ज्वेलरी और मोबाइल फोन थे। पर्स लूटने के बाद दोनों लुटेरे मौके से फरार हो गए। घटना के बाद पीड़ित ने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई थी। मामला लूट का दर्ज किया गया था।अपर पुलिस अधीक्षक उत्तरी अखिलेश सिंह ने बताया कि शुक्रवार सुबह पुलिस को कोका-कोला फैक्ट्री तिराहे के पास एक बिना नंबर की अपाचे मोटरसाइकिल दिखाई दी। पुलिस ने बाइक सवार को रुकने का इशारा किया। लेकिन वह भागने लगा। पुलिस ने उसे पीछा किया और कुछ दूर बाद वह बाइक से गिर पड़ा। गिरने के बाद लुटेरे ने पुलिस पर फायरिंग कर दी। जिसके बाद पुलिस ने जवाबी कार्रवाई की। उसे गोली मारी। गोली उसके पैर में लगी। घायल लुटेरे को पुलिस ने तुरंत स्थानीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र नवाबगंज में भर्ती कराया।पुलिस ने गिरफ्तार लुटेरे से पूछताछ की तो उसकी पहचान अयान उर्फ शरीफ के रूप में हुई। अयान लखनऊ के दुब्बगा थाना क्षेत्र के बारवां कला बसंत कुंजी योजना सेक्टर पी हरदोई रोड का निवासी है।

दो स्कूलों की जांच के लिए डीएम ने टीम की गठित

अमन लेखनी समाचार

उन्नाव। दो सरकारी स्कूलों में अधिकारियों की लापरवाही और शिक्षिकाओं की मनमानी को लेकर जिला प्रशासन ने संज्ञान लिया है। जिलाधिकारी ने इस मामले की गंभीरता को देखते हुए एसडीएम न्यायिक प्रज्ञा पांडेय, डीडीओ संजय पांडेय और डीपीआरओ शाश्वत आनंद सिंह की एक जांच टीम गठित की है। टीम को इन मामलों की शीघ्र रिपोर्ट देने के निर्देश दिए गए हैं।बेसिक शिक्षा विभाग के अधिकारियों और शिक्षिकाओं की शिकायतें सामने आने के बाद डीएम ने इन मामलों में जांच के आदेश दिए हैं। खासकर टीकरगढ़ी और दरियापुर के स्कूलों में शिक्षा व्यवस्था को लेकर बड़ी कमियां पाई गई हैं।बिछिया ब्लॉक के टीकरगढ़ी उच्च प्राथमिक विद्यालय में इंचार्ज शिक्षिका की मनमानी को लेकर राज्य बाल संरक्षण आयोग समिति के सदस्य श्याम त्रिपाठी ने जांच की। इस जांच में यह तथ्य सामने आया कि शिक्षिका ने मेडिकल अवकाश के तहत 365 दिन की छुट्टी के बजाय 400 दिन का अवकाश लिया। इसके अलावा, स्कूल में 8 महीने से मध्याह्न भोजन (MDM) नहीं दिया जा रहा था, बच्चों की संख्या में कमी थी, और स्कूल के लिए कंपोजिट ग्रांट से व्यवस्थाओं को दुरुस्त नहीं किया गया था। इसके अलावा, खेल किट की खरीद भी नहीं की गई थी। समिति ने इन गंभीर मुद्दों की रिपोर्ट प्रमुख सचिव, महानिदेशक, संयुक्त निदेशक और डीएम को भेजने का दावा किया है। बीएसए ने इस रिपोर्ट के आधार पर अगस्त में हुई जांच को गंभीरता से लिया औरइंचार्ज शिक्षिका सहित तीन अन्य शिक्षिकाओं को निलंबित कर दिया है।नवाबगंज के दरियापुर प्राइमरी स्कूल में तैनात शिक्षिका सादमा जैदी ने 2010 में नौकरी जॉइन की थी और 2014 से अब तक 552 मेडिकल अवकाश और 1725 असाधारण अवकाश ले चुकी हैं। इसमें 301 दिन का असाधारण अवकाश बीएसए द्वारा स्वीकृत किए जाने का खुलासा हुआ है। 2020-2021 में वह 2 नवंबर से 26 अगस्त तक निलंबित भी रही थीं।समिति की जांच में प्रधान शिक्षिका नसरीन बानो ने स्वीकार किया कि सादमा जैदी के स्कूल न आने की वजह से बच्चों की शिक्षा प्रभावित हो रही थी। इससे पहले, बीईओ को शिकायत पत्र भी दिया गया था, लेकिन कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई थी। ग्राम प्रधान गुड्डू ने बताया कि उन्होंने सादमा जैदी के खिलाफ दो बार बीएसए को शिकायत की, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई।सूत्रों के मुताबिक, शासन ने अब अवैतनिक अवकाश की व्यवस्था को समाप्त कर दिया है, जो पहले अध्यन के लिए 5 साल और फिर 2 साल का दिया जाता था। परिषदीय शिक्षकों के असाधारण अवकाश पर कोई स्पष्ट गाइडलाइन नहीं है, जिससे शिक्षक इसे अपनी सुविधा के अनुसार लेते रहे हैं। अब शासन ने इस पर कड़ी निगरानी रखने का निर्णय लिया है, ताकि भविष्य में इस तरह की मनमानी से बचा जा सके।

विकास खंड कार्यालयों में एक दिवसीय रोजगार मेले का किया जाएगा आयोजन

अमन लेखनी समाचार

उन्नाव। जिला सेवायोजन अधिकारी ने बताया है कि सेवायोजन कार्यालय द्वारा जनपद के निम्नलिखित विवरण के अनुसार विकास खण्ड कार्यालयों में 25 नबम्वर से 12 दिसम्बर तक एक दिवसीय रोजगार मेले का आयोजन किया जाएगा। उक्त मेले में एस0आई0एस0 सिक्योरिटी प्रा0लि0 लखनऊ द्वारा सिक्योरिटी गार्ड के पदों हेतु रोजगार मेले का आयोजन किया जा रहा है। अभ्यर्थी को न्यूनतम हाईस्कूल उत्तीर्ण, आयु 18 से 45 वर्ष, ऊँचाई न्यूनतम 168 सें0मी0 बजन न्यूनतम 52 कि0ग्रा0 होना आवश्यक है। उन्होने बताया कि 25 नवम्बर को गंजमुरादाबाद, 26 नवम्बर को बांगरमऊ, 27 नवम्बर को फतेहपुर-84, 28 नवम्बर को सफीपुर, 29 नवम्बर को मियागंज, 30 नवम्बर को हसनगंज, 02 दिसम्बर को औरास, 03 दिसम्बर को नवाबगंज, 04 दिसम्बर को असोहा, 05 दिसम्बर को बिछिया, 06 दिसम्बर को पुरवा, 07 दिसम्बर को हिलौली, 09 दिसम्बर को सुमेरपुर, 10 दिसम्बर को बीघापुर, 11 दिसम्बर को सि0करन तथा 12 दिसम्बर को सि0 सरोसी संबंधित के खण्ड विकास कार्यालयों में रोजगार मेलों का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने बताया है कि अभ्यर्थी को रोजगार मेले में भाग लेते समय हाईस्कूल का अंकपत्र, एक फोटो एवं आधार कार्ड की छायाप्रति साथ लाना आवश्यक है। मेले में प्रतिभाग निःशुल्क है एवं नियोजक को कोई रजिस्ट्रेशन शुल्क देय नही हैं।

हिंदुस्तान हस्तशिल्प महोत्सव में पुलिस दंपती सब इंस्पेक्टर को मिला सम्मान

अमन लेखनी समाचार

उन्नाव। माँ गायत्री जन सेवा संस्थान एवं नीशू वेलफेयर फाउंडेशन द्वारा लखनऊ के कानपुर रोड, आशियाना क्षेत्र के स्मृति उपवन में आयोजित हिंदुस्तान हस्तशिल्प महोत्सव के दूसरे दिन विशिष्ट अतिथि के रूप में के रूप में उपस्थित पुलिस दंपती सीनियर सब इंस्पेक्टर अनूप मिश्रा अपूर्व (प्रभारी पुलिस कंट्रोल रूम ,112 आर ओ आई पी, उन्नाव) और सीनियर सब इंस्पेक्टर रीना पाण्डेय को महोत्सव आयोजक अरुण प्रताप सिंह एवं गुंजन वर्मा द्वारा अंग वस्त्र, पुष्प गुच्छ और प्रतीक चिन्ह भेंट करके सम्मानित किया गया व उनके पर्यावरण संरक्षण सरोकार और लोक कल्याण के लिए किये जा रहे सामाजिक कार्यों की सराहना की गई। स्तुति नृत्यम की संयोजिका गीता सक्सेना द्वारा भी संस्था की ओर से पुलिस दंपती को सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर अनूप मिश्रा अपूर्व ने महोत्सव आयोजक अरुण प्रताप सिंह और गुंजन वर्मा सहित आयोजक मण्डल को बधाई देते हुए कहा कि विगत तीन वर्षों से हिंदुस्तान हस्त शिल्प महोत्सव अपार सफलता की ओर बढ़ता जा रहा है, इसके जरिये एक ओर जहाँ हिंदुस्तान की अनोखी संस्कृति और कलाएं देखने को मिल रही हैं वहीं दूसरी ओर देश प्रदेश के हस्तशिल्प कारीगरों, बुनकरों को अपना व्यवसाय बढ़ाने का बेहतर अवसर प्राप्त हो रहा है। हिंदुस्तान हस्तशिल्प महोत्सव के दूसरे दिन सुप्रसिद्ध एंकर प्रदीप शुक्ला के कुशल संचालन में स्तुति नृत्यम की संयोजिका गीता सक्सेना द्वारा आयोजित सांस्कृतिक संध्या में संध्या श्रीवास्तव, पूजा श्रीवास्तव , आभा सिन्हा, रश्मि , नीति शुक्ला,अर्चना श्रीवास्तव, अपर्णा सक्सेना , किरण श्रीवास्तव, कमला, रोली आदि कलाकारों ने लोकगीत और सांस्कृतिक नृत्य की मनमोहक प्रस्तुतियों से सभी का दिल जीत लिया । महोत्सव आयोजक अरुण प्रताप सिंह और गुंजन वर्मा ने बताया कि हिंदुस्तान हस्तशिल्प महोत्सव के आयोजन का मुख्य उद्देश्य विलुप्त हो रही लोक कला एवं हस्तशिल्प कारीगरों , बुनकरों को बढ़ावा देना है।

हजरत एजाज मोहम्मद फारूकी उर्फ शममू मियां सफवी का मनाया जाएगा 15 वां सालाना उर्स

अमन लेखनी समाचार

उन्नाव। पंद्रहवां (15वां) सालाना उर्स मुकद्दस वाकि फ-ए-रमूजे तसव्वुफ, हजरत अश्शाह मतलूब सफी अलमारूफ हजरत एजाज मोहम्मद फारूकी उर्फ शम्मू मियाँ सफवी निजामी चिश्ती अलहिर्रहमतो रिजवान हर साल की तरह इस साल भी बड़ी ही शानो शौकत के साथ 23 नवंबर बरोज शनिवार को मुनअकि द हो रहा है।

आप हुजूर बन्दगी शेख मुबारक अलहिर्रमा के महबूबे नजर और नूर-उल-अनवार हजरत नूर मियां अलहिर्रमा के नूरे नजर थे और आप अवाम-व-खवास में ₹अब्बी हुजूर₹ के नाम मशहूर-व-मारूफ थे। आपकी विलादत 15 शाबान सन-1359 हिजरी में हुई। आप हजरत मखदूम शाह सफी शाहे विलायत सफीपूरी र.अ. के 16वें सज्जादानशीन थे। हुस्ने इखलाक व किरदार में आप अपने मशाएख के सरापा नमूना थे। आपकी जात में दीनदारी, नेक नफसी, उसूल-पसंदी और मेहमान नवाजी जैसी बेशुमार खूबियां थीं। आप दुनियावी शोहरत से हमेशा दूर रहे और गोशा नशीनी को पसंद किया। इसके बावजूद जब आप का विसाल की खबर फैली तो चारो जानिब से हजारों की तादाद में लोग दीवाना वार टूट पड़े और उस परवान-ए-हुजूम को देखकर अपने तो अपने गैर भी दंग रहे। आज भी जब आपका ज़िक्र होता है तो आपके मुहिब्बीन की आंखें पुरनम हो जाती हैं। उर्स के बारे में जानकारी देते हुए दरगाह के गद्दी नशीन हजरत नवाजिश मोहम्मद फारूकी मियां साहब ने बताया कि 23 नवंबर बरोज शनिवार को बाद नमाजे फजर कुरआन ख्वानी होगी। 10 बजे दिन में जिक्रे औलिया-ए-कराम होगा। बाद नमाजे जोहर महफिल समा (कव्वाली) का प्रोग्राम होगा। शाम 4 बजे कुल शरीफ बाद नमाजे असर फातिहा खास होगी।

डाक्टरों द्वारा जवाब दिए जाने के बाद बच्चा बोलने व चलने लगा जो बना क्षेत्र में बना चर्चा का विषय

अमन लेखनी समाचार

उन्नाव। विकास खंड असोहा क्षेत्र के बाबुराहा गांव निवासी राकेश पाल अपने दस वर्षीय बच्चे अनमोल का पिछले तीन महीनों से लखनऊ ,उन्नाव सहित कई जगहों के हॉस्पिटल प्रसाद हॉस्पिटल बंथरा , फातिमा नरसिंग होम कालूखेड़ा , विद्या हॉस्पिटल हरिकनशगढ़ी मोहनलालगंज , ऐरा हॉस्पिटल आलमबाग लखनऊ , चन्दन हॉस्पिटल गोमती नगर लखनऊ एवम पी जी आई लखनऊ , व राममनोहर लोहिया हॉस्पिटल लखनऊ में पिछले तीन महीनों से इलाज करा रहे थे । राकेश पाल ने बताया कि अंत मे पी जी आई एवम लोहिया के डाक्टरो ने हाँथ खड़े करते हुए कहा कि बच्चे को घर ले जाओ अब कोई दुवा ही काम आ सकती है । थक हार कर राकेश परिजनों सहित कुटी बीर बाबा मंदिर प्रांगण कल रात आये और बाबा की शरण मे चले गए और आज सुबह चमत्कार हो गया जो बच्चा चलने फिरने खाने पीने में असमर्थ था वो दौड़ रहा था । बच्चा ठीक होने की खबर लगते ही राकेश के घर पर गांवों वालो का हुजूम लग गया । राकेश ने बताया पिछले तीन महीनों में हमने अपने बेटे के ऊपर लग्भग चार लाख खर्च किये सैकड़ो जांचे हुई डाक्टर भी नही समझ पा रहे थे । उन्होंने बताया कि पहले अचानक पैरो से लाचार हो गया और चलने फिरने में असमर्थ हो गया फिर जो भी खाए वो उलट दे यहां तक कि पानी भी नही पी पा रहा था जब डाक्टरो की समझ नही आया तों बोले कि बच्चे को घर ले जाओ । यहां आकर बाबा की शरण मे आगया बाबा ने मेरे इकलौते बच्चे को ठीक कर दिया बच्चे के ठीक होने पर परिजन खुश होकर बाबा की जय जय कार करने लगे।

जनपद के समस्त मतदेय स्थलों पर विशेष कैम्प का किया जाएगा आयोजन

अमन लेखनी समाचार

उन्नाव। जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी गौरांग राठी ने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा दिये गये निदेर्शों के क्रम में अर्हता तिथि 01 जनवरी 2025 के आधार पर विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों की निर्वाचक नामावलियों के विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण अभियान कार्यक्रम के दौरान 23 नवम्बर 2024 (शनिवार) एवं 24 नवम्बर 2024 (रविवार) को जनपद के समस्त मतदेय स्थलों पर विशेष कैम्प का आयोजन किया जायेगा।उन्होंने बताया कि सम्बन्धित बी०एल०ओ० मतदाता सूची एवं फार्मों के साथ अपने मतदेय स्थलों पर उपस्थित रहकर मतदाता सूची से संबंधित कार्य करेंगे। मतदाता सूची का अन्तिम प्रकाशन 06 जनवरी 2025 को किया जायेगा। इस क्रम में उन्होंने सभी अर्ह नागरिकों से अपील की है कि उपरोक्त अवधि में सम्बन्धित मतदेय स्थल अथवा तहसील में जाकर आलेख्य मतदाता सूची का निरीक्षण कर लें, यदि किसी अर्ह मतदाता जो 01 जनवरी 2025 को 18 वर्ष की उम्र पूरी कर रहे हों अथवा उससे अधिक आयु के हों, परन्तु उनका नाम मतदाता सूची में सम्मिलित न हुआ हो, तो वे प्रारूप-6 में अपना आवेदन सम्बन्धित पदाभिहीत स्थल पर नियुक्त पदाभिहीत अधिकारी/बूथ लेबिल आफिसर (बी०एल०ओ०) के समक्ष अथवा सम्बधित तहसील क्षेत्र के मतदाता रजिस्ट्रेशन केन्द्रों पर प्रस्तुत कर सकते है।उन्होंने बताया कि किसी सम्मिलित नाम के विरूद्ध कोई आपत्ति हो तो प्रारूप-7 एवं मतदाता के नाम से सम्बन्धित किसी प्रविष्टि में कोई त्रुटि हो तो उसे शुद्ध कराने या उसी विधानसभा के किसी अन्य मतदेय स्थल पर स्थानान्तरित कराये जाने अथवा डुप्लीकेट पहचान पत्र जारी कराये जाने या दिव्यांग मतदाता चिन्हित कराये जाने हेतु प्रारूप-8 में आवेदन प्रस्तुत कर सकते हैं। उन्होंने जानकारी दी कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा अब वर्ष में 04 अर्हक तिथि क्रमशः 01 जनवरी, 01 अप्रैल, 01 जुलाई एवं 01 अक्टूबर निर्धारित की गयी है अर्थात एक पात्र नागरिक को जो वर्ष 2025 में अर्ह तारीखों अर्थात 01 अप्रैल 2025, 01 जुलाई 2025 एवं 01 अक्टूबर 2025 में से किसी भी तिथि को 18 वर्ष की आयु प्राप्त करने वाला है, वह अग्रिम में प्रारूप-6 में निर्वाचक नामावली में अपना नाम सम्मिलित करने के लिए दावा कर सकेगा और उस पर सम्बन्धित अर्हता तारीख के संदर्भ में सम्बन्धित तिमाही में विचार और विनिश्चय किया जाएगा। इस सम्बन्ध में उन्होंने बताया कि आवदेन के प्रारूप सम्बन्धित तहसील के मतदाता पंजीकरण केन्द्र एवं समस्त पदाभिहीत स्थलों पर नियुक्त पदाभिहीत आफिसरों/बूथ लेबिल आफिसर (बी०एल०ओ०), विशेष कैम्प में समस्त मतदेय स्थलों पर तथा जिला निर्वाचन कार्यालय, उन्नाव में निःशुल्क प्राप्त/जमा किये जा सकते हैं। इसके अलावा पोर्टल, वोटर हेल्पलाइन ऐप एवं हेल्पलाइन नम्बर 1950 के माध्यम से भी उक्त कार्य कराए जा सकते है।

बोलेरो ने स्विफ्ट डिजायर में मारी टक्कर , मासूम की मौत, चालक गंभीर

अमन लेखनी समाचार

हसनगंज, उन्नाव। कोतवाली क्षेत्र में बोलेरो ने स्विप्ट डिजायर में सीधी टक्कर मार दी जिस पर कार चालक सहित बारह वर्षीय बच्चा घायल हो गये राहगीरों की सूचना पर परिजनों ने लखनऊ हास्पिटल में भर्ती कराया जहाँ पर डाक्टर ने कार सवार बच्चे को मृत घोषित कर दिया। कोतवाली हसनगंज क्षेत्र के हसेवां निवासी कार सवार आशू सिंह 22 वर्ष पुत्र देशराज सिंह पडोसी अंकुश सिंह 12 वर्ष पुत्र राना सिंह हसनगंज गृहस्थी का सामान लेने जा रहे थे तभी गाँव से एक किलोमीटर चले कि हसनगंज मुंशी गंज रोड़ पर गजफ्फर नगर श राब ठेके के पास बोलोरो गाड़ी नंबर यू पी 35 ए वाई 6203 ने सामने से टक्कर मार दी जिससे कार चालक घायल हो गये और 12 वर्षीय बच्चा घायल हो गया राहगीरों की सूचना पर परिजनों ने आनन फानन लखनऊ हास्पिटल में भर्ती कराया जहाँ पर

चिकित्सक ने बच्चे को मृत घोषित कर दिया यू पी 35 ए वाई 6203 बोलेरो में पुलिस का स्टीकर लगा होने की वजह से गाड़ी मालिक ने टैक्टर से टोचिंग करके घटना स्थल से बोलेरो उठा ले गए।पुलिस इंस्पेक्टर सी के मिश्रा ने बताया कि सूचना मिली है मौके पर पुलिस को भेजा गया है।

25 नवंबर से 31 दिसंबर तक गांवों में शिविर लगा कर की जाएगी फार्मर रजिस्ट्री

अमन लेखनी समाचार

हसनगंज, उन्नाव। किसानों को अब सरकारी लाभ पाने के लिए फार्मर रजिस्ट्री अनिवार्य कर दी गई है। रजिस्ट्री कराने की सुविधा वेब पोर्टल व मोबाइल एप से भी की जाएगी ।इससे घर बैठे भी रजिस्ट्री हो जाएगी। वहीं, दूसरे चरण में 25 नवंबर से 31 दिसंबर तक सभी राजस्व गांवों में शिविर लगाया जाएगा।प्रभारी उप कृषि निदेशक शशांक कुमार ने बताया कि सरकार की ओर से किसानों का डिजिटल डेटा तैयार किया जायेगा ।इसलिए फार्मर रजिस्ट्री की शुरूआत की गई है। रजिस्ट्री तैयार होने के बाद भविष्य में किसान सम्मान निधि के अलावा केसीसी, फसल बीमा, एमएसपी कृषि इंफ्रास्ट्रक्चर फंड जैसी योजनाओं का लाभ भी इसके जरिए ही मिलेगा। बताया कि डिजिटल डेटा समय, समय पर अपडेट भी किया जाएगा। रजिस्ट्री कार्यक्रम दो चरणों में पूरा कराया जाएगा। पहले चरण में किसान स्वयं अपना पंजीकरण करते हुए फार्मर रजिस्ट्री तैयार करने की सुविधा दी जाएगी। किसान वेब पोर्टल या मोबाइल एप के माध्यम से स्वयं या जन सुविधा केंद्रों से अपनी फार्मर रजिस्ट्री कर सकेंगे। पहले चरण में 18 से और दूसरे चरण में 25 नवंबर से 31 दिसंबर 2024 तक एप के माध्यम से लेखपाल, कृषि व अन्य विभाग के कार्मिक राजस्व ग्रामों में शिविर लगाकर फार्मर रजिस्ट्री तैयार करेंगे। बताया कि किसान सम्मान निधि की आगामी किस्तों का लाभ लेने के लिए फार्मर रजिस्ट्री अनिवार्य की गई है। हसनगंज राजकीय बीज भंडार प्रभारी राजेश वर्मा ने बताया कि सभी किसानों को 25 नवंबर से गांव गांव जाकर कैंप में किसान रजिस्ट्री बनने का कार्य किया जायेगा।

आबकारी विभाग ने चलाया सघन चेकिंग अभियान, टोल प्लाजा समेत, ढाबों व दुकानों पर की तलाशी

अमन लेखनी समाचार

हसनगंज, उन्नाव। शासन की मंशा के अनुरूप आबकारी आयुक्त के आदेशानुसार अवैध मदिरा की बिक्री व परिवहन की रोकथाम हेतु चलाए जा रहे विशेष प्रवर्तन अभियान के अंतर्गत जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक के निर्देशन एवं जिला आबकारी अधिकारी रवि शंकर के कुशल नेतृत्व में आबकारी निरीक्षक क्षेत्र 2 हसनगंज द्वारा मय स्टाफ नवाबगंज टोल प्लाजा पर अवैध मदिरा/शीरा के परिवहन पर रोकथाम के दृष्टिगत वाहनों की चेकिंग की गई साथ ही लखनऊ कानपुर हाइवे पर स्थित ढाबों व पान की गुमटियों आदि की सघन चेकिंग की गई। ढाबा संचालकों को ढाबों पर किसी भी प्रकार की मदिरा न तो बेचे जाने और न ही पिलाए जाने के संबंध में सख्ती से निर्देशित किया गया।

सम्पादकीय

गरीबी और भुखमरी के खात्मे का सही समय

जिस रफ्तार से दुनिया ने आधुनिकता, तकनीक और चकाचौंध को अपनाया है अगर उसी गति से गरीबी और भुखमरी पर प्रहार किया जाता तो पूरी दुनिया की तस्वीर ही कुछ और होती। चलो देर आए दुरुस्त आए, ब्राजील में आयोजित जी-20 शिखर सम्मेलन में दुनिया के 20 श्रेष्ठ देशों ने एकजुट होकर भुखमरी को खत्म करने का ऐलान कर दिया। ब्राजील के राष्ट्रपति लूला -दा-सिल्वा ने जी-20 प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं के शिखर सम्मेलन की शुरुआत करते हुए भूख और गरीबी से लड़ने के लिए एक वैश्विक गठबंधन का ऐलान किया। इस पहल का समर्थन 80 से अधिक देशों ने किया है। यह ऐलान ऐसे समय में हो हुआ है जब अमेरिका के नव-निर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप जनवरी में पद संभालने के बाद कई बड़ी नीतिगत बदलाव लाने की बात कर रहे हैं। असल में भूख और गरीबी किसी प्राकृतिक घटना का परिणाम नहीं हैं, बल्कि ये राजनीतिक निर्णयों का नतीजा हैं। एक ऐसी दुनिया में जो हर साल लगभग 6 बिलियन टन भोजन का उत्पादन करती है, वहां भूख और गरीबी हैरान करने वाली है। ग्लोबल हंगर इंडेक्स वैश्विक, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर भूख को व्यापक रूप से मापने और उन पर नज़र रखने का एक ज़रिया है। जीएचआई का स्कोर ख़ासकर के चार संकेतकों के मूल्यों पर मापा जाता है जिनमें कुपोषण, शिशुओं में भयंकर कुपोषण, बच्चों के विकास में रुकावट और बाल मृत्यु दर है। जीएचआई का कुल स्कोर 100 पॉइंट होता है, जिसके आधार पर किसी देश की भूख की गंभीरता की स्थिति दिखती है। यानी के अगर किसी देश का स्कोर ज़ीरो है तो उसकी अच्छी स्थिति है और अगर किसी का स्कोर 100 है तो उसकी बेहद ख़राब स्थिति है। भारत का स्कोर 29.1 है जो कि बेहद गंभीर श्रेणी में आता है। इसके अलावा कुल ऐसे 17 शीर्ष देश हैं, जिनका स्कोर 5 से भी कम है। इन देशों में चीन, तुर्की, कुवैत, बेलारूस, उरुग्वे और चिली जैसे देश शामिल हैं। वहीं मुस्लिम बहुल देशों की स्थिति की बात करें तो यूएई 18वें, उज़्बेकिस्तान 21वें, कज़ाख़स्तान 24वें, ट्यूनीशिया 26वें, ईरान 29वें, सऊदी अरब 30वें स्थान पर है। दुनिया की कुल भूख की स्थिति की बात की जाए तो हालिया सालों में यह स्थिर रही है, लेकिन हालात आज भी अच्छे नहीं हैं। साल 2022 की रिपोर्ट में पूरी दुनिया के मामले में भूख की स्थिति को मध्य श्रेणी में रखा गया है। 2014 में जहां दुनिया का कुल स्कोर 19.1 था वो 2022 में घटकर 18.2 हुआ है। इस रिपोर्ट में कुल 44 देश ऐसे हैं जिनकी स्थिति बेहद ख़तरनाक स्तर पर है। लोगों के पास दो जून की रोटी तक की व्यवस्था नहीं है। संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के मुताबिक 2023 में 28 करोड़ से अधिक लोगों ने भुखमरी का सामना किया। इनमें सबसे बुरी स्थिति गाजा के लोगों की है, जिनके सामने अकाल जैसी स्थिति है। संयुक्त राष्ट्र की पांच विशेष एजेंसियों द्वारा प्रकाशित विश्व में खाद्य सुरक्षा और पोषण की स्थिति (एसओएफआई) की नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2023 में लगभग 733 मिलियन लोगों ने भूख का सामना किया। जो विश्व स्तर पर ग्यारह में से एक व्यक्ति और अफ्रीका में पांच में से एक व्यक्ति के बराबर है। इसी से हालात का अंदाजा सहज ही हो जाता है। अब जी-20 देशों ने गरीबी और भुखमरी को खत्म करने के लिए एकजुट होकर ऐलान किया है तो उम्मीद की जानी चाहिए कि हालात में जल्द बदलाव होगा। इस वैश्विक गठबंधन से न केवल गरीब देशों में आम जनजीवन सुधरेगा बल्कि पूरी दुनिया की तस्वीर भी अलग होगी।

प्रदूषण
रविशंकर

जहरीली हवा और खत्म होती जिंदगी

सुप्रीम कोर्ट भी दिल्ली एनसीआर में बढ़ते प्रदूषण की समस्या को लेकर गंभीर है। केंद्र सरकार से लेकर दिल्ली और आसपास की राज्य सरकारें अलग-अलग दावे करती रही हैं, लेकिन इससे प्रदूषण के स्तर में कोई बड़ी राहत नज़र नहीं आती है। भले इस गंभीर होती समस्या से पार पाने के लिए दिल्ली सरकार ने कई उपाय आजमाए, प्रदूषण पर नियंत्रण के लिए निर्देश जारी किए गए, मगर वे कारगर साबित नहीं हो पा रहे। विश्व स्वास्थ्य संगठन की ताजा रिपोर्ट बताती है कि विश्व स्तर पर हवा इस हद तक जहरीली हो चुकी है कि हमारी सांसों में धीमा जहर फैल रहा है। फेफड़ों में प्रदूषणकारी तत्वों की तह लग रही है, जो 'स्लोडेथ' यानी मौत का फरमान है।

दिल्ली-एनसीआर में हवा की क्वालिटी बेहद खराब यानी जानलेवा बनती जा रही है, जबकि अभी सर्दी ठीक तरह से शुरू भी नहीं हुई है। राजधानी के कई इलाकों में एयर क्वालिटी इंडेक्स 400 के पार पहुंच गया। सुप्रीम कोर्ट भी दिल्ली-एनसीआर में बढ़ते प्रदूषण की समस्या को लेकर गंभीर है। केंद्र सरकार से लेकर दिल्ली और आसपास की राज्य सरकारें अलग-अलग दावे करती रही हैं, लेकिन इससे प्रदूषण के स्तर में कोई बड़ी राहत नज़र नहीं आती है। भले इस गंभीर होती समस्या से पार पाने के लिए दिल्ली सरकार ने कई उपाय आजमाए, प्रदूषण पर नियंत्रण के लिए निर्देश जारी किए गए, मगर वे कारगर साबित नहीं हो पा रहे। विश्व स्वास्थ्य संगठन की ताजा रिपोर्ट बताती है कि विश्व स्तर पर हवा इस हद तक जहरीली हो चुकी है कि हमारी सांसों में धीमा जहर फैल रहा है।

फेफड़ों में प्रदूषणकारी तत्वों की तह लग रही है, जो 'स्लोडेथ' यानी मौत का फरमान है। रिपोर्ट बताती है कि प्रतिवर्ष 50 लाख के लगभग लोग जहरीली हवा के चंगुल में आकर समय से पहले जिंदगी को अलविदा कह जाते हैं। पर्यावरण के लिए काम करने वाली संस्था ग्रीनपीस की एक रिपोर्ट के मुताबिक़ भारत की राजधानी दिल्ली दुनियाभर में सभी देशों की राजधानी में सबसे ज़्यादा प्रदूषित शहर है। सवाल है कि पिछले कुछ सालों से लगातार इस महासंकट से जूझ रही दिल्ली-एनसीआर को कोई स्थायी समाधान की रोशनी क्यों नहीं मिलती? सरकारें एवं राजनेता एक-दूसरे पर जिम्मेदारी ठहराने की बजाय समाधान के लिए तत्पर क्यों नहीं होते?

इस रिपोर्ट में पीएम 2.5 के आधार पर बताया गया है कि दुनिया के सबसे ज़्यादा प्रदूषित 15 शहरों में 12 शहर भारत के हैं। विश्व वायु गुणवत्ता रिपोर्ट के मुताबिक़ दुनिया के 30 सबसे ज़्यादा प्रदूषित शहर भारत में हैं जहां पीएम 2.5 की सालाना सघनता सबसे ज़्यादा है। मेडिकल जर्नल बीएमजे की स्टडी में पाया गया है कि प्रदूषण की वजह से भारत में हर साल 20 लाख से ज़्यादा लोगों की मौत होती है। पीएम यानी पार्टिकुलेट मैटर प्रदूषण की एक किस्म है। इसके कण बेहद सूक्ष्म होते हैं जो हवा में बहते हैं। पीएम 2.5 या पीएम 10 हवा में कण के साइज़ को बताता है। हवा में मौजूद यही कण हवा के साथ हमारे शरीर में प्रवेश कर ख़ून में घुल जाते हैं। इससे शरीर में कई तरह की बीमारी जैसे अस्थमा और सांसों की दिक्कत हो सकती है। गौर करने वाली बात ये है कि आबादी के लिहाज से सबसे ज्यादा नुकसान भारत को ही होता है, लिहाजा भारत को अपनी जिम्मेदारी बखूबी समझते हुए तत्काल ही कुछ सार्थक और ठोस उपाय करना होंगे। साफ है, आज के समय दुनिया में सबसे ज्यादा बीमारियां पर्यावरण प्रदूषण की वजह से हो रही हैं। मलेरिया, एड्स और तपेदिक से हर साल जितने लोग मरते हैं उससे ज्यादा लोग प्रदूषण से होने वाली बीमारियों से मर जाते हैं। बहरहाल, हर साल सवाल यही उठता है कि वायु प्रदूषण से हर साल होने वाले मौत को रोकने के लिए सरकार की तरफ से क्या कदम उठाए जा रहे हैं? दशकों से ये बात सरकार और समाज सबको मालूम है लेकिन इसको लेकर दोनों उदासीन बने हुए हैं। ऐसा लगता है कि इसके बावजूद लोग अपने त्रासदीपूर्ण भविष्य को लेकर पूरी से तरह से बेखबर हैं।

ऐसे में सवाल उठता है कि आखिर हमारी सरकार

और समाज कर क्या रही है? वास्तव में वायु प्रदूषण की समस्या इतनी जटिल होती जा रही है कि भविष्य अंधकारमय होता प्रतीत हो रहा है।

वस्तुतः आज मनुष्य भोगवादी जीवन शैली का इतना आदि और स्वार्थी हो गया है कि अपने जीवन के मूल आधार समस्त वायु को दूषित कर रहा है, नैतिकता, धर्म, कर्तव्य सब भूल रहा है। भौतिकतावादी जीवन शैली और विकास की अंधी दौड़ में आज मनुष्य ये भी भूल गया है कि वायु प्रदूषण भी कुछ है। बढ़ते वाहनों और कारखानों से निकलते धुएं ने वायु का, वृक्षों की कटाई से जीवनदायिनी गैसों को, मनुष्य द्वारा फैलाई जा रही गंदगी से जल को इस तेजी के साथ प्रदूषित कर रहा है कि दुगनी गति से बीमारियां भी फैल रही हैं। मानवीय सोच और विचारधारा में इतना ज्यादा बदलाव आ गया है कि भविष्य की जैसे मानव को कोई चिंता ही नहीं है। इसमें कोई दोराय नहीं है कि अमानवीय कृत्यों के कारण आज मनुष्य प्रकृति को रिक्त करता चला जा रहा है। जिसके परिणामस्वरूप पर्यावरण असंतुलन के चलते भूमंडलीय ताप, अम्लीय वर्षा, बर्फीली चोटियों का पिघलना, सागर के जल-स्तर का बढ़ना, मैदानी नदियों का सूखना, उपजाऊ भूमि का घटना और रेगिस्तानों का बढ़ना आदि विकट परिस्थितियां उत्पन्न होने लगी हैं। ये सारा किया कराया मनुष्य का है और आज विचलित, चिंतित भी स्वयं मनुष्य ही हो रहा है। लेकिन अफ़सोस की बात है कि हम चेत नहीं हो रहे हैं। साल दर साल बीत जाने के बाद भी भारत में वायु प्रदूषण बढ़ता ही जा रहा है। चाहे केंद्र सरकार हो या फिर राज्य सरकारें, कोई भी प्रदूषण से लड़ने के लिए गंभीर नहीं दिखता।

ऐसे में सरकारों के प्रदूषण से लड़ने के लिए दीर्घकालीन नीतियां बनाने की जरूरत है तो वहीं लोगों को अपने स्तर पर वे सभी जतन करने की जरूरत है जो हवा को जहरीली होने से रोकें। ये ठीक है कि वायु प्रदूषण से निपटने के लिए केंद्र और राज्य सरकरों ने कई कदम उठाए थे। फिर भी वायु प्रदूषण से निपटने में हम फिसड्डी साबित हुए। ऐसे में भारत की जिम्मेदारी बड़ी और ज्यादा गंभीर चुनौतीपूर्ण हो जाती है क्योंकि हमें विकसित और विकासशील दोनों ही प्रकार के देशों में किए जा रहे उपायों को अपनाना पड़ेगा। बढ़ते प्रदूषण की वजह से 5-8 साल तक उम्र भी कम हो सकती है। यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो की एयर क्वालिटी लाइफ इंडेक्स रिपोर्ट 2024 में बताया गया है कि भारत की हवा इतनी खराब हो गई है कि जिंदगी 5 साल तक कम हो सकती है। दिल्ली की बात करें तो वहां की हवा में रहने वालों की उम्र 8 साल तक घट रही है। दरअसल, वायु प्रदूषण एक ऐसा मुद्दा है जो पूरी दुनिया के लिए चिंता की बात है और इसे बिना आपसी सहमति और ईमानदार प्रयास के हल नहीं किया जा सकता है। वायु प्रदूषण से निपटने के लिए तात्कालिक कार्रवाई के बजाय निरंतर प्रयासों की जरूरत है। स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों को अपनाना, वाहनों की संख्या को नियंत्रित करना, और सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देना जैसे उपाय दीर्घकालिक प्रभाव डाल सकते हैं। पराली जलाने की समस्या को हल करने के लिए किसानों को बेहतर तकनीक और सब्सिडी प्रदान करना आवश्यक है, ताकि वे अधिक पर्यावरण-अनुकूल विकल्पों को अपनाएं। इसके साथ ही निर्माण स्थलों पर प्रदूषण-नियंत्रण उपायों का सख्ती से पालन और औद्योगिक उत्सर्जन को नियंत्रित करने के लिए कड़े कानूनों की आवश्यकता है। एक व्यवस्थित निगरानी तंत्र से पूरे वर्ष वायु गुणवत्ता का मूल्यांकन करना जरूरी है ताकि प्रदूषण के स्तर को समय रहते काबू में रखा जा सके। वायु प्रदूषण का मतलब केवल पेड़-पौधे लगाना ही नहीं है बल्कि, भूमि प्रदूषण, वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण व ध्वनि प्रदूषण को भी रोकना है। तभी कुछ ठोस नजर आ सकेगा। वक्त क़ुछ करने का है न कि सोचने का।

अंतरराष्ट्रीय बाल दिवस
श्वेता गोयल

प्रत्येक बच्चे का अधिकार शिक्षा, सुरक्षा व सम्मान

पूरी दुनिया में बच्चों के प्रति जागरुकता बढ़ाने, उनके अधिकारों, उनकी सुरक्षा, शिक्षा और उनके सर्वांगीण विकास पर ध्यान केंद्रित करने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष 20 नवंबर को अंतरराष्ट्रीय बाल दिवस मनाया जाता है, जो न केवल बच्चों के अधिकारों को संरक्षित करने की एक महत्वपूर्ण पहल है बल्कि यह समाज में उनके महत्व को भी स्पष्ट रूप से उजागर करता है। इस दिवस की शुरुआत संयुक्त राष्ट्र द्वारा की गई थी। 20 नवंबर 1959 को संयुक्त राष्ट्र ने 'बाल अधिकार घोषणापत्र' को अपनाया और 1989 में इसी दिन 'बाल अधिकार संधि' पर हस्ताक्षर किए गए थे। यह संधि बच्चों के अधिकारों की रक्षा के लिए एक कानूनी रूपरेखा प्रदान करती है, जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा और समानता जैसे मूलभूत अधिकार शामिल हैं। यह दिन दुनियाभर के बच्चों के कल्याण के लिए समर्पित करने का संयुक्त राष्ट्र महासभा का मुख्य उद्देश्य दुनियाभर में बच्चों के अधिकारों की रक्षा और उनके जीवन स्तर को बेहतर बनाना ही था। इस वर्ष 'प्रत्येक बच्चे के लिए, प्रत्येक अधिकार' थीम के साथ मनाया जा रहा है। । यह दिवस हमें बच्चों के अधिकारों की वकालत करने और उन्हें बढ़ावा देने के लिए प्रेरित करता है। वैश्विक स्तर पर इस दिवस को मनाने का उद्देश्य दुनियाभर में बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार करना, उनकी समस्याओं को हल करना, उनके कल्याण के लिए काम करना तथा अंतरराष्ट्रीय एकजुटता को बढ़ावा देना है। बाल दिवस दुनियाभर में 190 से भी ज्यादा देशों में मनाया जाता है और अनेक देशों में इसे मनाने की तारीखें अलग-अलग हैं। वैसे तो बाल दिवस मनाने की शुरुआत वर्ष 1925 से ही हो गई थी लेकिन वैश्विक रूप में इसे मान्यता मिली 1953 में। संयुक्त राष्ट्र द्वारा 20 नवम्बर 1954 को 'अंतरराष्ट्रीय बाल दिवस' मनाए जाने की घोषणा की गई थी, जिसका उद्देश्य यही था कि इस विशेष दिन के माध्यम से अलग-अलग देशों के बच्चे एक-दूसरे के साथ जुड़ सकें, जिससे उनके बीच आपसी समझ तथा एकता की भावना मजबूत हो सके। सर्वप्रथम बाल दिवस जेनेवा के इंटरनेशनल यूनियन फॉर चाइल्ड वेलफेयर के सहयोग से विश्वभर में अक्टूबर 1953 में मनाया गया था। विश्वभर में बाल दिवस मनाए जाने का विचार वीके कृष्ण मेनन का था, जिसे संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 1954 में अपनाया गया था। संयुक्त राष्ट्र द्वारा विश्वभर के तमाम देशों से अपील की गई थी कि वे अपनी परम्पराओं, संस्कृति तथा धर्म के अनुसार अपने लिए कोई एक ऐसा दिन सुनिश्चित करें, जो सिर्फ बच्चों को ही समर्पित हो। बच्चों के अधिकारों और उनके भविष्य को समर्पित यह दिवस वास्तव में बच्चों के सपनों को पंख देने की एक महत्वपूर्ण पहल है। दुनियाभर में बाल दिवस के माध्यम से लोगों को बच्चों के स्वास्थ्य, शिक्षा, बाल मजदूरी इत्यादि बच्चों के अधिकारों के प्रति जागरूक करने का प्रयास किया जाता है। अंतरराष्ट्रीय बाल दिवस का सबसे बड़ा उद्देश्य बच्चों के अधिकारों की पहचान और उनका संरक्षण है। बच्चों के कुछ प्रमुख अधिकारों में जीवन का अधिकार, शिक्षा का अधिकार, खेल और आराम का अधिकार, समानता का अधिकार, सुरक्षा का अधिकार इत्यादि शामिल हैं। दुनिया के हर बच्चे को जीवित रहने और विकास का अधिकार है, जो उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए अनिवार्य भी है। इसी प्रकार शिक्षा प्रत्येक बच्चे का मौलिक अधिकार है, जो उनके भविष्य को उज्ज्वल बनाने और गरीबी के चक्र को तोड़ने में मदद करता है। वैसे तो दुनियाभर में बच्चों के अधिकारों को बढ़ावा देने के प्रयास दशकों से किए जा रहे हैं लेकिन फिर भी करोड़ों बच्चे आज भी बाल श्रम, बाल शोषण, शिक्षा तक पहुंच का अभाव, स्वास्थ्य सेवाओं की कमी, युद्ध और संघर्ष जैसी कई गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। दुनियाभर में करोड़ों बच्चे बाल श्रम में फंसे हैं, जो शिक्षा और खेल-कूद से वंचित हैं और उनका बचपन कठिनाइयों से भरा होता है। तरराष्ट्रीय बाल दिवस न केवल बच्चों की समस्याओं को समझने और उनके समाधान के लिए सामूहिक प्रयास करने का अवसर प्रदान करता है

क्या आप पूर्ण रूप से सुखी हैं

संकलित
दर्शन

वर्ष 1920 में योगानंद जी जब अमेरिका गए थे, तो उस समय अमेरिका पूरे उत्साह में था। उस समय वह पूंजीवाद के अपने दर्शन को लेकर तेजी से प्रगति कर रहा था। योगानंद जी अनेक सफल व्यवसायियों और औद्योगिक संस्थानों के प्रमुखों इत्यादि से मिले और उन सबने यह स्वीकार किया कि योगानंद जी उनके मध्य उस वस्तु को लेकर आए थे, जिसकी उनके जीवन में कमी थी। मैं आपको एक छोटा-सा मनोरंजक वृत्तांत सुनाता हूं : जब वे न्यू यार्क नगर में व्याख्यान दे रहे थे तो एक व्यक्ति ने उनसे भेंट करने की अनुमति मांगी। वह व्यक्ति उनके होटल के कमरे में आया और इससे पूर्व कि योगानंद जी कुछ कहते, उसने एक चुनौतीपूर्ण ढंग से कहा, 'मैं अत्यधिक धनवान हूं, मैं पूर्ण रूप से स्वस्थ हूं,' जिसका अर्थ यह था कि 'आप यहां किसलिए आए हैं?' योगानंद जी ने उसे तुरंत उत्तर दिया, 'हां, किंतु क्या आप पूर्ण रूप से सुखी हैं?' बाद में उस व्यक्ति ने कहा, 'मैं निरुत्तर हो गया था!' उस व्यक्ति ने अपना शेष जीवन एक क्रियायोगी के रूप में व्यतीत किया। बाह्य रूप से वह करोड़पति उद्योगपति था, परंतु अंदर से वह एक प्रबुद्ध योगी था। यह कह पाना और एक अद्भुत अनुभूति है कि ईश्वर की इच्छाशक्ति से सशक्त हुई मेरी इच्छाशक्ति मेरे लक्ष्य को पूरा करेगी। यदि आप आलसवश सब कुछ दिव्य शक्ति पर छोड़ देते हैं और ईश्वर द्वारा आपको दी गई अपनी इच्छाशक्ति की अवहेलना करते हैं तो परिणाम प्राप्त नहीं होंगे।

समस्याएं तो आती-जाती रहेंगी

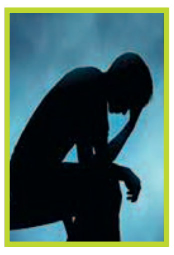

संकलित
प्रेरणा

एक व्यक्ति बहुत दुखी था। उसके पिता की मृत्यु हो चुकी थी, पूरे घर की जिम्मेदारी उस पर आ गई थी। बहुत मेहनत करने के बाद भी उसकी समस्याएं खत्म नहीं हो रही थीं। वह निराश रहने लगा था। एक दिन उस व्यक्ति को एक विद्वान संत मिले। व्यक्ति ने संत से कहा कि मैं बहुत परेशान हो गया हूं। मुझे अपना शिष्य बना लीजिए। संत ने कहा कि ठीक है, तुम शिष्य बन जाना, लेकिन पहले अपनी परेशानी बताओ। शिष्य ने कहा कि गुरु जी मेरे जीवन में एक समस्या खत्म नहीं होती है और उससे पहले ही दूसरी सामने आ जाती है। इस कारण मैं बहुत दुखी हूं। किसी भी काम में सफलता नहीं मिल पाती है, घर की भी समस्याएं बनी रहती हैं। गुरु ने कहा कि तुम मेरे साथ चलो। वह व्यक्ति संत के साथ चल दिया। कुछ देर में संत और शिष्य पास की नदी के किनारे पहुंच गए। किनारे पर पहुंचकर गुरु ने कहा कि हमें ये नदी पार करनी है। इतना कहकर संत किनारे पर ही खड़े हो गए। शिष्य भी गुरु के साथ खड़ा रहा। कुछ देर बाद शिष्य ने कहा कि हमें नदी पार करनी है तो हम यहां क्यों खड़े हैं? गुरु ने कहा कि हम इस नदी के सूखने का इंतजार कर रहे हैं, जब ये सूख जाएगी, हम इसे आसानी से पार कर लेंगे। ये बात सुनकर शिष्य बहुत हैरान हो गया। वह बोला कि गुरु जी ये कैसी बात कर रहे हैं? नदी का पानी कैसे और कब सूखेगा। हमें नदी को इसी समय पार करनी होगी। संत ने कहा कि मैं तुम्हें यही बात समझाना चाहता हूं। जीवन में भी समस्याएं आती-जाती रहेंगी। हमें सकारात्मक रहना चाहिए।

अंतर्मन

आज की पाती

जी-20 से हमारी उम्मीदें

रियो डि जेनेरियो (ब्राजील) में जी-20 शिखर सम्मेलन शुरू हो गया है। उम्मीद है कि इस सम्मेलन में विश्वव्यापी दो समस्याओं, गरीबी और भुखमरी के साथ-साथ विश्वव्यापी दूसरी समस्याओं पर भी इस सम्मेलन में शामिल देश प्रमुखता से बातचीत करेंगे और इनके लिए काम करने के लिए एक-दूसरे की मदद के लिए सहमति बनाएंगे। दुनिया में गरीबी और भुखमरी का मुख्य कारण बढ़ती जनसंख्या भी है, और जब तक दुनिया में बढ़ती जनसंख्या के लिए चिंता और चिंतन नहीं किया जाएगा, तब तक देश में गरीबी कभी भी खत्म नहीं होगी।विश्व की अनेक समस्याएं अंतरराष्ट्रीय स्वरूप की हैं, जिनका समाधान अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ही किया जा सकता है। इसलिए इस सम्मेलन से विश्व की उम्मीदें ज्यादा हैं।

- संदीप शुक्ला, दुर्ग

ट्रेंड

संसाधनों का उपयोग

भारत खाद्य सुरक्षा को बढ़ावा देने और गरीबी उन्मूलन के लिए प्रतिबद्ध है। हम अपनी सफलताओं को आगे बढ़ाएंगे और सभी के लिए उज्ज्वल भविष्य सुनिश्चित करने के लिए अपनी सामूहिक शक्ति और संसाधनों का उपयोग करेंगे।

-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

पीएम मोदी से मिलना सुखद

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मिलना सदैव सुखद होता है, क्योंकि भारत के साथ हमारी साझेदारी समृद्ध और बहुआयामी दोनों है। हमने पिछले जनवरी में शुरू की गई पहलों की प्रगति और साथ ही प्रमुख अंतरराष्ट्रीय मुद्दों की समीक्षा की।

-इमैनुएल मैक्रॉन, फ्रांस राष्ट्रपति

गंगाजल दूषित

फाइलों में गंगा जी के स्वच्छ, अविरल, निर्मल होने के दावों का सच ये है कि वाराणसी में मां गंगा इतनी दूषित हो चुकी हैं कि पीने योग्य तो छोड़िए, ये जल स्नान के लायक भी नहीं है।

-अखिलेश यादव, सपा सांसद

एयर इंडिया की यात्रा

मुझे नई एयर इंडिया में यात्रा करना पसंद है। मुझे मेरी जवानी की याद दिलाती है. पहले तो वे बार-बार फाइनल कॉल चिल्लाते हैं.. मुझे सब्जी वाले की याद दिलाते हैं.. फिर वे तुम्हें एक बस में बिठा देते हैं और हम एक घंटे के लिए गर्म बस में बैठे रहते हैं..।

-शेखर कपूर, फिल्मकार

करंट अफेयर

नेपाल और भारत सीमा पर आवाजाही बढ़ाने पर सहमत

नेपाल और भारत ने दोनों देशों की सीमाओं के आर-पार नागरिकों का सुचारू आवागमन सुनिश्चित करने के लिए समन्वय बढ़ाने पर सोमवार को सहमति जताई। सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी) के महानिदेशक अमृत मोहन प्रसाद और नेपाल सशस्त्र पुलिस बल के प्रमुख राजू आर्यल की अध्यक्षता में आयोजित नेपाल-भारत सीमा सुरक्षा समन्वय की आठवीं बैठक में इस बात पर सहमति जताई गई। नेपाल स्थित भारतीय दूतावास ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, 'दोनों पक्षों के बीच सार्थक बैठक हु

ऑफ बीट

रुक-रुक कर उपवास से बचा जा सकता है अल्जाइमर से

जैसे-जैसे दुनिया की आबादी बढ़ती जा रही है, अल्जाइमर रोग तेजी से आम होता जा रहा है। अल्जाइमर रोग मनोभ्रंश का सबसे प्रचलित रूप है।

डिमेंशिया एक बीमारी है जिसका उपयोग उम्र के साथ मस्तिष्क की कार्यक्षमता में गिरावट से जुड़े लक्षणों की एक श्रृंखला का वर्णन करने के लिए किया जाता है। लक्षणों में स्मृति हानि, संचार कठिनाइयाँ, समस्या-समाधान संघर्ष और व्यक्तित्व या व्यवहार परिवर्तन शामिल हैं। हाल के वर्षों में, अल्जाइमर रोग जैसी उम्र से संबंधित बीमारियों पर शोध के सबसे आशाजनक क्षेत्रों में से एक मस्तिष्क में हानिकारक प्रोटीन का संचय रहा है।

संक्षेप

निवारक सतर्कता जागरूकता कार्यक्रम का हुआ समापन

अमन लेखनी समाचार

बहराइच। गत दिवस लेजर रिसोर्ट बहराइच में निवारक सतर्कता जागरूकता कार्यक्रम एवं गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें कॉरपोरेट कार्यालय चेन्नई के मुख्य सतर्कता अधिकारी विशेष कुमार श्रीवास्तव द्वारा इण्डियन बैंक के सभी शाखा प्रबंधक और अंचल कार्यालय के अधिकारी/कर्मचारी को संबोधित किया गया। श्री श्रीवास्तव जी इण्डियन बैंक में मई 2022 से मुख्य सतर्कता अधिकारी है इससे पूर्व वह ग्रुप चीफ कंप्लायंस ऑफिसर थे। उन्होने उक्त कार्यक्रम में प्रतिभाग करने वाले समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों को बैंक में कार्य करते समय सर्तक रहने को बताया। बैंक का धन, लोकधन है और बैंकर की जिम्मेदारी है कि इसकी सुरक्षा सदैव करें तथा जनता का विश्वास अवश्य बनाए रखें तथा किस-किस तरह की फॉड हो सकता है उस पर चर्चा की और बचने के तरीके बताते हुए सतर्कता से कार्य करने हेतु समझाया। बैंकों में घटने वाली फॉड से बचने के तरीके बताए तथा कार्य का सम्पादन निष्पक्ष एवं नियमानुसार करने का गुण बताया।इण्डियन बैंक के अंचल प्रमुख कृष्ण कुमार साहू ने भी बैंक में होने वाले फॉड, जो ज्यादातर खाता खुलाना, एटीएम जारी करना, मोबाइल नं. अपडेट करने से संबंधित रहता है आदि पर चर्चा करते हुए सभी को सर्तक रहने के लिए बताया। अन्त में उप अंचल प्रमुख निरंजन कुमार ने मुख्य सतर्कता अधिकारी विशेष कुमार श्रीवास्तव, अंचल प्रमुख कृष्ण कुमार साहू एवं सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए गोष्ठी में प्राप्त जानकारी का सदुपयोग करने का आहवान किया।

अमरोहा में खुले में मीट उतारने पर एफआईआर

अमन लेखनी समाचार

अमरोहा, अमरोहा के नगर कोतवाली इलाके के मोहल्ला इस्लामनगर में फिर से खुले में मीट उतारने का मामला सामने आया है। हालांकि इस बार पुलिस ने हल्का दरोगा की तहरीर पर आरोपी के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। जबकि इससे पूर्व भी इसी मोहल्ले से खुले में मीट उतारते हुए एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था। फिलहाल अब पुलिस ने खुले में मीट उतारने वाले आरोपी के खिलाफ मुकदमा दर्ज करते हुए मामले में जांच-पड़ताल शुरू कर दी है। साथ ही जल्द आरोपी को गिरफ्तार करने का दावा किया है। नगर कोतवाली में दरोगा पुष्पेंद्र राठी की तहरीर के आधार पर एफआईआर दर्ज किया गया। जिसके मुताबिक दरोगा पुष्पेंद्र राठी साथी सिपाहियों के साथ गशत पर थे। जब वह ईदगाह रोड पर मोहल्ला इस्लामनगर में पहुंचे तो उनकी नजर एक पिकअप वाहन पर पड़ी, जिससे खुले में मीट उतारा जा रहा था। जिसकी वजह से आसपास बदबू और संक्रमण फैल रहा था। उधर मालूम रहे कि कुछ माह पूर्व भी इसी मोहल्ले में खुले में मीट उतारने को लेकर एक वीडियो भी मोहल्ले के लोगों द्वारा सोशल मीडिया पर वायरल किया गया था।

पुलिस अधीक्षक ने ली परेड की सलामी

भोजनालय का निरीक्षण कर देखी भोजन की गुणवत्ता

अमन लेखनी समाचार/संतोष मिश्रा

बहराइच। शुक्रवार को पुलिस अधीक्षक बहराइच वृन्दा शुक्ला द्वारा पुलिस लाइन परेड ग्राउण्ड में साप्ताहिक शुक्रवार परेड की सलामी लेकर परेड का निरीक्षण किया गया। परेड में सम्मिलित पुलिस कर्मियों के टर्नआउट को चेक करते हुए सभी अधिकारी व कर्मचारी को ड्यूटी के दौरान उच्च कोटि की वर्दी पहनने व जनता से मधुर व्यवहार स्थापित करने के लिये निर्देशित किया गया। निरीक्षण के पश्चात कर्मियों को शारीरिक रुप से फिट रहने हेतु दौड़ लगवाई गई व परेड के दौरान अनुशासन व एकरूपता के लिए टोलीवार ड्रिल कराई गई। परेड के उपरान्त पुलिस लाइन परिसर में विभिन्न शाखाओं, पुरुष एवं महिला बैरक तथा स्टोर रूम का निरीक्षण किया गया तथा पुलिस लाइन की बेहतर साफ-सफाई हेतु प्रतिसार निरीक्षक को निर्देशित किया गया। कप्तान द्वारा आर.टी.सी. भोजनालय का निरीक्षण कर भोजन की गुणवत्ता को चेक किया गया तथा पुलिस लाइन परिसर में निमार्णाधीन बैरक, स्नानगृह व अन्य कार्यों की समीक्षा करते निर्माण कार्य में गति लाने हेतु संबंधित को निर्देशित किया गया। तत्पश्चात एसपी वृंदा शुक्ला द्वारा पुलिस लाइन के आदेश-कक्ष में सभी गार्द रजिस्टरों को चेक करते हुए गार्द की सुरक्षा के सम्बन्ध में सभी गार्द कमांडरों को आवश्यक दिशा निर्देश दिये गये। इस दौरान क्षेत्राधिकारी लाइन हर्षिता तिवारी, प्रशिक्षु उपाधीक्षक प्रियंका यादव, प्रतिसार निरीक्षक भुवनेश्वर सिंह तथा अन्य अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित रहे।

पायनियर क्रिकेट कलब नानपारा की बड़ी जीत

अमन लेखनी समाचार

रूपईडीहा, बहराइच। शिवाजय क्रिकेट एकेडमी द्वारा आयोजित रूपईडीहा क्रिकेट लीग टूनार्मेंट के सातवें दिन पायनियर क्रिकेट क्लब नानपारा और अजंता क्रिकेट क्लब बहराइच के बीच खेला गया। जिसमें टॉस हार कर पहले बल्लेबाजी करते हुए अजंता क्लब ने निर्धारित 25 ओवर में 207 रनों का विशाल स्कोर खड़ा किया। जिसमें शाद 70, कुणाल यादव 31 और त्रिपुरेश मिश्रा ने शानदार 27 रनों का योगदान दिया। पायनियर क्लब कि तरफ से बॉलिंग करते हुए आशीष चंद और ताहा को 2 और अमन, नफीस और ओम ठाकुर को 1-1 विकेट मिला। जवाब में उतरी पायनियर क्लब की टीम ने आशीष चन्द की 85, अमन खान की एक रनों की तूफानी पारी की बदौलत पायनियर क्लब ने भी निर्धारित 25 ओवर में 207 रन बनाये और मैच टाई हो गया। अजंता की तरफ से त्रिपुरेश मिश्रा ने सर्वाधिक 3 विकेट और कुणाल और आकाश गोंड को 2 सफलताएं मिली।

लखनऊ-बहराइच हाईवे जाम कर अधिवक्ताओं ने दूसरे दिन भी किया प्रदर्शन

एक घन्टे से अधिक समय तक यातायात रहा बाधित

अमन लेखनी समाचार

कैसरगंज, बहराइच। उपजिलाधिकारी के स्थानांतरण की मांग को लेकर दूसरे दिन भी अधिवक्ता लामबंद रहे। उन्होंने तहसील गेट के निकट नेशनल हाईवे जामकर अपना विरोध प्रदर्शन किया। बार एसोसिएशन कैसरगंज के अध्यक्ष बृजेश प्रसाद मिश्रा के नेतृत्व में शुक्रवार को अधिवक्ताओं ने एसडीएम आलोक प्रसाद के खिलाफ जबरदस्त नारेबाजी करते हुए हाईवे जाम कर धरना प्रदर्शन किया, जिससे लगभग एक घन्टे तक यातायात बाधित रहा। अधिवक्ताओं का आरोप है कि एसडीएम ने उनके साथ अभद्र भाषा का प्रयोग किया है। इस घटना के विरोध में अधिवक्ता सितंबर से ही कोर्ट का बहिष्कार कर रहे हैं। अधिवक्ताओं नें प्रशासन से मामले का समाधान तत्काल कारने की मांग की है। प्रदर्शन के दौरान हाईवे पर वाहनों की लंबी कतारें लग गईं, जिससे सवारियों को भारी असुविधा का सामना करना पड़ा। प्रदर्शनकारी अधिवक्ताओं ने चेतावनी दी कि जब तक एसडीएम का स्थानांतरण नहीं होगा, उनका आंदोलन जारी रहेगा। प्रदर्शन में बार एसोसिएशन के महामंत्री ज्ञान बाबू, पूर्व अध्यक्ष विनोद कुमार सिंह, वेद प्रकाश सिंह, विजय प्रताप सिंह, सूर्यभान सिंह, मनोज कुमार सिंह, शिवम सिंह, योगेश मिश्रा, वीरेंद्र अवस्थी, सतीश यादव, जयचंद वर्मा, अमित चौधरी, सहित सौ से अधिक अधिवक्ता मौजूद रहे।

मुलायम सिंह यादव की जयंती पर हुआ कार्यक्रम

कार्यकर्ताओ ने अर्पित किये श्रद्धा सुमन

अधिक से अधिक नए मतदाताओं को जोड़ने की किया अपील

अमन लेखनी समाचार

कैसरगंज, बहराइच। समाजवादी पार्टी के संरक्षक और पूर्व रक्षा मंत्री मुलायम सिंह यादव की जयंती के अवसर पर विधायक आनन्द यादव के आवास पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पार्टी कार्यकर्ताओं और स्थानीय जनता ने उनके योगदान को श्रद्धापूर्वक याद किया। कार्यक्रम की प्रारंभ में उपस्थित लोगो ने मुलायम सिंह यादव के चित्र पर माल्यार्पण कर पुष्पांजलि अर्पित की। वक्ताओं ने उनके संघर्षमय जीवन और किसानों, मजदूरों, युवाओं और वंचित वर्गों के कल्याण के लिए किए गए कार्यों को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि पार्टी उनकी विचारधारा को आगे बढ़ाने और समाज के हर वर्ग के विकास के लिए प्रतिबद्ध है।इस दौरान पार्टी के बूथ अध्यक्षों ने विशेष पुनरीक्षण अभियान के तहत अधिक से अधिक नए मतदाताओं को जोड़ने की अपील की। नेताओं ने युवा मतदाताओं को जागरूक कर समाजवादी पार्टी से जोड़ने पर विशेष जोर दिया। वक्ताओं ने बूथ स्तर पर संगठन को मजबूत करने और कार्यकताओं की सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा देने पर बल दिया। कार्यक्रम ने कार्यकताओं में नई ऊर्जा का संचार किया और जनता को पार्टी की विचारधारा से जोड़ने का एक सशक्त संदेश दिया। कार्यक्रम में विधानसभा अध्यक्ष सफी उल्लाह अंसारी, डॉ दाताराम मौर्या, लालविक्रम आर्या, सहित सैकड़ो कार्यकर्ता उपस्थिति रहे।

पीएमश्री राजकीय बालिका इंटर कॉलेज में किया गया कैरियर मेले का आयोजन

पुलिस क्षेत्राधिकारी ने किया मेले मे लगे स्टालो का निरीक्षण

अमन लेखनी समाचार/फैजान

कैसरगंज, बहराइच। पीएमश्री राजकीय बालिका इंटर कॉलेज में एक कैरियर मेले का आयोजन किया गया। इसका शुभारंभ पुलिस क्षेत्राधिकारी अनिल कुमार सिंह ने दीप प्रज्वलित करके किया। उन्होने उपस्थित छात्राओ को पुलिस सेवा मे जाने के लिए होने वाली तैयारी की भी जानकारी दी। उन्होने कालेज की प्रधानाचार्या सन्तोष यादव की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे आयोजनो से छात्राओ को अपनी प्रतिभा निखारने का अवसर मिलता है।इस कैरियर मेले मे छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और विभिन्न स्टॉलों के माध्यम से अपने सपनों को दिशा देने की आगुन्तकों से प्रेरणा ली। छात्राओं ने अपनी रुचियों के अनुसार करियर विकल्पों की जानकारी प्राप्त की और अपनी महत्वाकांक्षाओं को साकार करने की दिशा में कदम बढ़ाने का संकल्प लिया।छात्रा रुपाली सिंह ने जिला जज, जबकि दीपाली आईएएस अधिकारी, उजमा खातून फैशन डिजाइनर, रिया पांडेय बैंक मैनेजर, हिना बानों वैज्ञानिक, फातमा हेयर स्टाइलिस्ट, नर्गिस मेहंदी आर्टिस्ट, नैनशी सिंह एयर होस्टेस इसके अलावा, अंजलि मौर्या इलेक्ट्रिक इंजीनियर, साक्षी पाठक असिस्टेंट प्रोफेसर, फिजा शेख सिंगर, रजिया फैज डॉक्टर, महक नर्स, उजमा डॉक्टर, चांदनी सिंह सीआरपीएफ और अनामिका मौर्या भारतीय सेना में अपने सपनो को पंख देने के लिए अलग अलग स्टालो पर यूनीफार्म मे नजर आयी।कैरियर मेले ने आए हुए अतिथियों ने छात्राओं को उनके सपनों को साकार करने के लिए प्रेरित किया और उनके भविष्य की राह को उज्जवल बनाने का संकल्प दिलाया। कार्यक्रम में डा0 देवेन्द्र उपाध्याय लेखक शेखर श्रीवास्तव के साथ काफी संख्या में गणमान्य नागरिक व अभिभावक उपस्थित रहे।

सीडीओ की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई जिला पर्यावरण समिति की बैठक

अमन लेखनी समाचार/संतोष मिश्रा

बहराइच। बृहस्पतिवार को देर शाम विकास भवन सभागार में मुख्य विकास अधिकारी मुकेश चन्द्र की अध्यक्षता में जिला पर्यावरण, वृक्षारोपण एवं जिला गंगा संरक्षण समिति की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में पर्यावरण, वृक्षारोपण एवं जनपद में बहने वाली सरयू नदी के संवर्धन एवं संरक्षण हेतु निर्धारित बिंदुओं पर व्यापक चर्चा की गई। सीडीओ द्वारा सभी विभागों से वर्ष 2024-25 की भांति वर्ष 2025-26 में भी वृक्षारोपण के लक्ष्यो के सापेक्ष स्थल चयन की कार्रवाई करने हेतु निर्देशित किया गया। सीडीओ श्री चन्द्र द्वारा जिला गंगा प्लान, फाइटोरिमेडियेशन प्लान एवं डीपीओ की नियुक्ति से सम्बन्धित कार्यवाही को शीघ्र पूर्ण करने हेतु निर्देशित किया गया। बैठक का संचालन प्रभागीय वनाधिकारी बहराइच द्वारा किया गया। इस अवसर पर उप जिलाधिकारी कैसरगंज, डीसी मनरेगा, मुख्य पशु चिकित्साधिकारी, अधिशासी अभियंता सरयू नहर खंड 5, जिला विद्यालय निरीक्षक, पुलिस, पर्यावरण, नगर विकास, पंचायती राज, ऊर्जा, प्राविधिक शिक्षा सहित अन्य विभागो के जिला स्तरीय अधिकारी, खण्ड विकास अधिकारी व अन्य सम्बन्धित मौजूद रहे।

प्रधान के गुर्गों ने मिठाई व्यापारी को पीटा

पुलिसकर्मी के बचाव करने पर भी नहीं माने, अमेठी में 3 लोग पुलिस की हिरासत में

अमन लेखनी समाचार

अमेठी जिला, अमेठी में पुरानी रंजिश में ग्राम प्रधान प्रतिनिधि की मौजूदगी में उसके गुर्गों ने दुकान पर बैठे एक युवक की लात-घूसों से जमकर पिटाई कर दी। दबंगों की गुंडई का वीडियो भी सामने आया है। मारपीट के दौरान एक पुलिसकर्मी बीच बचाव करता रहा। ग्रामीणों की सूचना के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने ग्राम प्रधान प्रतिनिधि समेत कई लोगों को हिरासत में लिया। मामला बाजार शुकुल थाना क्षेत्र के जैनबगंज कस्बे का है। जहां इसी थाना क्षेत्र के पूरे लोहारन मरदानपुर गांव का रहने वाला मनोज यादव जैनबगंज बाजार में मिठाई की दुकान करता है। आज सुबह वो दुकान पर बैठा था, इसी बीच ग्राम सभा अहमदपुर के ग्राम प्रधान प्रतिनिधि संजय मौर्य अपने गुर्गों के साथ मौके पर पहुंचा और उसके गुर्गों ने दुकान पर बैठे मनोज यादव की जमकर पिटाई कर दी। मारपीट के दौरान मौके पर मौजूद एक सिपाही दबंगों को हटाने का प्रयास करता रहा।

लेकिन दबंग युवक की पिटाई करते रहे। घटना के बाद पीड़ित युवक थाने पहुंचा और तहरीर दी, जिसके बाद पुलिस ग्राम प्रधान प्रतिनिधि समेत कई लोगों को हिरासत में लेकर कार्रवाई करने में जुट गई है। बता दें कि 3 दिन पहले दबंगों ने पीड़ित मनोज यादव की दुकान पर बैठे एक व्यक्ति की पिटाई की थी। जिसको लेकर मनोज ने थाने में तहरीर दी थी।

इसी रंजिश के कारण दबंगों ने मनोज की पिटाई कर दी। बाजार शुकुल एसएचओ दयाशंकर मिश्र ने कहा कि 3 लोगों को हिरासत में लिया गया है। पूछताछ की जा रही है। अभी तहरीर नहीं मिली है। तहरीर मिलते ही मुकदमा दर्ज किया जाएगा।

अमेठी में धड़ल्ले से काटे जा रहे पेड़

वन विभाग बना अनजान, वन दरोगा बोले-स्टाफ की कमी है

अमन लेखनी समाचार

अमेठी जिला, अमेठी के शुकुल बाजार थानाक्षेत्र में पुलिस और वन विभाग की मिलीभगत से लकड़ी ठेकेदार रात दिन हरे पेड़ काट रहे हैं। वहीं वन विभाग की मिलीभगत जानते हुए भी जिम्मेदार अनजान बने हुए हैं। सरकार पर्यावरण को लेकर जितना संजीदा है। उतना ही लकड़ी ठेकेदार हरियाली को नष्ट करने पर आमादा हैं। बाजार शुकुल थाना क्षेत्र में इन दिनों बगैर परमिट हरे भरे पेड़ों पर आरा चल रहा है। पिछले 4 महीने से वन विभाग पर्यावरण संतुलन के लिए पौध रोपण करा रहा है, जिस पर करोड़ों रुपए पानी की तरह बहाया गया है। बावजूद इसके आम, महुआ, नीम, शीशम व सागौन जैसे पेड़ों को ठेकेदार काटकर उठा ले जाते हैं। वहीं, क्षेत्र में हो रही हरे वृक्षों की कटान के लिए वन विभाग को पुलिस जिम्मेदार ठहराती है। वहीं, वन विभाग हमेशा स्टाफ व संसाधनों का रोना रोता है। बाजार शुकुल का इलाका जिले का सबसे अधिक क्षेत्रफल का जंगल है इनमें शीशम, सागौन जैसे कीमती लकड़ियों के पेड़ मौजूद हैं।लकड़ी काटने वाले वन मुंशी व गार्डों से तालमेल बनाकर जंगलों से शीशम व सागौन के पेड़ काट कर आसपास खुली फर्नीचर की दुकानों पर बेच देते हैं। कई बार क्षेत्रीय लोगों ने जंगलों से काटकर ले जाते लकड़ी पकड़ी और उच्च अधिकारियों को बताया, लेकिन आज तक वन कर्मियों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं हुई है, जो कि आज भी जंगलों से लकड़ी बेच रहे हैं।

थानाक्षेत्र मे वनरक्षक और चौकीदार की साठगांठ से सरकारी वन विभाग के शीशम के वेशकीमती सडको के किनारे लगे पेड़ों को काटकर संबंधित इलाके की फर्नीचर की दुकान और आरा मशीनो पर सस्ते दामो पर बेच दिया जाता है। थाना क्षेत्र के किसनी, धनेशा पाठक, पाली, उरेरमऊ, टेवसी, महोना, जैनबगंज, व्यौरेमऊ, तेतारपुर, रस्तमाऊ, सत्थिन, मकदूमपुर, ऊंचगांव, मांझगांव व खेममऊ आदि गांवों में अवैध ढंग से प्रतिबंधित पेड़ काटे जाते हैं। वन दरोगा दयाशंकर वर्मा ने बताया कि स्टाफ व संसाधनों की कमी है। इसके बावजूद वह अवैध कटान रोकने के प्रति प्रयासरत रहते हैं।

NRMU मंडल मंत्री ने रेलवे कर्मचारियों की समस्या सुनी

एनआरएमयू को वोट दिलाने की अपील की, बोले- 100 साल से कर्मचारियों की लड़ाई लड़ रहा

अमन लेखनी समाचार

हापुड़, हापुड़ में नॉर्दन रेलवे मैंस यूनियन की मान्यता के लिए 4, 5, 6 दिसंबर को होने वाले चुनाव के लिए नॉर्दन रेलवे मैंस यूनियन के पदाधिकारी और सदस्यों ने मेहरौली से लेकर हापुड़ तक चुनाव प्रचार किया है। साथ ही कर्मियों की समस्या सुन निस्तारण की बात कही। दरअसल, मुरादाबाद मंडल से आए मंडल मंत्री राजेश चौबे, मंडल अध्यक्ष मनोज शर्मा और मंडल उपाध्यक्ष एके. सिंहल ने महरौली से लेकर हापुड़ के बीच रेलवे कर्मचारियों की समस्या सुनी।नॉर्दन रेलवे मैंस यूनियन को चुनाव चिन्ह पर मोहर लगाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि नॉर्दन रेलवे मैंस यूनियन ही एक ऐसा संगठन है जो 100 साल से कर्मचारियों की लड़ाई लड़ता आ रहा है। कर्मचारी के बीच रहकर कर्मचारियों के हितों की रक्षा करता है। पदाधिकारी और सदस्यों ने चुनाव प्रचार किया। इस दौरान नॉर्दन रेलवे मैंस यूनियन के चुनाव चिन्ह झंडे पर मोहर लगाने की अपील की। इस दौरान शाखा सचिव ओमदत्त त्यागी, शाखा अध्यक्ष इरशाद खान, सहायक शाखा सचिन इंद्र मोहन सिंह, सहायक शाखा सचिव रविंद्र शर्मा, शाखा उपाध्यक्ष विकास शर्मा, शाखा उपाध्यक्ष संजय त्यागी, कोऑपरेटिव बैंक के डायरेक्टर हरपाल मीणा, मीडिया प्रभारी अमरीश पाल, शाखा उपाध्यक्ष नीरज चौधरी, अमित त्यागी आदि मौजूद रहे।

पुल निर्माण में लगी हाइड्रा से टकराई बाइक

अमेठी में एक भाई की मौत, दूसरे की हालत गंभीर, निमंत्रण से लौट रहे थे

अमन लेखनी समाचार

अमेठी जिला, अमेठी में देर रात सड़क हादसा हो गया। निमंत्रण से वापस घर जा रहे बाइक सवार दो भाई पुल निर्माण में लगे हाइड्रा से टकरा गए। हादसे में एक भाई की मौके पर मौत हो गई, जबकि दूसरा भाई गंभीर रूप से घायल हो गया। पुलिस ने घायल को अस्पताल पहुंचाया जहां स्थिति गंभीर देखो से रायबरेली के एम्स रेफर कर दिया गया। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज मामले की जांच शुरू कर दी है। पूरा मामला मोहनगंज कोतवाली क्षेत्र के शंकरगंज स्थित राजामऊ गांव के पास का है, जहां शारदा सहायक नहर पर पुल का निर्माण किया जा रहा है। इसके लिए कई बड़ी मशीन लगी हुई हैं। देर रात करीब 10 बजे पाकरगांव गांव का रहने वाला दीपू दीक्षित पुत्र चिंतामणि दीक्षित अपने भाई भास्कर के साथ निमंत्रण से लौटकर बाइक से अपने घर जा रहा था। शंकरगंज गांव के पास राजामऊ स्थित शारदा सहायक नहर पर बन रहे पुल निर्माण में लगी हाइड्रा से बाइक टकरा गई। हादसे में दोनों भाई गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना की सूचना मिलते ही मोहनगंज पुलिस मौके पर पहुंची और दोनों को अस्पताल में भर्ती कराया जहां डॉक्टर ने दीपू को मृत्यु घोषित कर दिया। हालत गंभीर देख भास्कर को इलाज के लिए रायबरेली के एम्स भेज दिया गया, जहां उसका इलाज चल रहा है। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज मामले की जांच शुरू कर दी है।

लम्भुआ सीएचसी की छत पर बीयर की बोतलें

फायर सप्लाई का पाइप फटा, पानी की टंकी में घास उगी, आरओ मशीन में धूल जमा

अमन लेखनी समाचार

सुलतानपुर, झांसी मेडिकल कॉलेज में लापरवाही ने बारह मासूमों की जिंदगी छीन ली। कई मासूम जिंदगी मौत से जूझ रहे हैं। इसके बाद प्रदेश भर में मेडिकल कॉलेज, जिला अस्पताल, सीएचसी-पीएचसी में हालात कितने बदले इस पर चर्चा जरूरी है। प्रदेश सरकार के मंत्री ओपी राजभर के प्रभार वाले जिले सुल्तानपुर की लम्भुआ सीएचसी की कुछेक तस्वीरों ने बयां किया कि झांसी जैसे हालात अधिकतर सरकारी अस्पतालों के हैं। लम्भुआ सीएचसी की इन तस्वीरों को देखिए। जिला मुख्यालय से बीस किमी दूर मेन रोड पर स्थित अस्पताल की ये तस्वीरें हैं। पांच दिन पूर्व डीएम मैडम ने इसी लम्भुआ सीएचसी के पास स्थित तहसील में समाधान दिवस आयोजित किया था लेकिन उन्हें सीएचसी के हालात देखने की फुरसत नहीं मिली। तीन दिन पहले सोमवार को लम्भुआ के प्राइवेट हॉस्पिटल में प्रसूता की मौत के बाद इसी सीएचसी पर पहुंचकर सीएमओ ओपी चौधरी ने कमरे में बैठकर जांच पड़ताल की थी। अस्पताल में लगी पानी की टंकी झाड़ियों से पटी पड़ी है। अस्पताल में लगे हुए अग्निशमन उपकरण की सप्लाई पाइप फटी हुई है। महज वो शो पीस में लटकाया गया है। आरओ मशीन तो लगी हुई है लेकिन वो भी धूल फांक रही है। अस्पताल के अंदर कमरे के आसपास के क्षेत्र को स्टॉफ ने बाइक स्टैंड बना रखा है। यही नहीं अस्पताल की बिल्डिंग की छत पर बीयर की बोतले पड़ी हुई हैं। जिससे सवाल खड़े हो रहे हैं कि स्टॉफ नशा करके ड्यूटी कर रहा है या नशेड़ियों ने अस्पताल को अपना अड्डा बना लिया है। यही नहीं अस्पताल में चारों ओर गंदगी का अम्बार लगा हुआ है। इस देखरेख की जिम्मेदारी सीएमओ की है, लेकिन उनके पास व्यवस्था चुस्त दुरुस्त करने का समय नहीं है।

संक्षेप

गाजियाबाद में निकाह के लिए मंदिर परिसर हुआ था बुक

समिति को निकाह के संबंध में थी जानकारी, 4200 रुपए लेकर की थी बुकिंग

अमन लेखनी समाचार

गाजियाबाद, गाजियाबाद के मोदीनगर में निकाह के लिए मंदिर परिसर की बुकिंग अनजाने में नहीं बल्कि सब कुछ जानते हुए की गई थी। बकायदा मुस्लिम वधू के नाम से 42 सौ रुपये लेकर बुकिंग रसीद काटी गई थी। पुलिस ने साक्ष्य के तौर पर रसीद को कब्जे में लेकर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। बता दें कि गोविंदपुरी कॉलोनी के शिव शक्ति धाम मंदिर परिसर में मुस्लिम रीति रिवाज के अनुसार निकाह का कार्यक्रम चल रहा था। इस दौरान मंदिर परिसर में पूजा करने पहुंच रहे लोगों की भावना को ठेस पहुंच रही थी। जिसकी भनक हिंदू संगठन के पदाधिकारियों को लग गई। बड़ी संख्या में हिंदू संगठन के लोग मौके पर पहुंचे और हंगामा शुरू कर दिया। पुलिस ने पहुंचकर किसी तरह मामला शांत कराया। एसीपी मोदीनगर ज्ञान प्रकाश राय ने बताया कि जांच में सामने आया है कि निकाह के लिए मंदिर परिसर एक सितंबर को बुक किया गया था। मंदिर समिति के दस्तावेज से पुलिस को बुकिंग की रसीद मिली है। बुकिंग सुदामापुरी निवासी मुस्लिम युवती के नाम से हुई थी। बुकिंग के दौरान समिति ने 42 सौ रुपये लिए थे। एसीपी ने बताया कि मामले में ओम टेंट हाउस जो मंदिर में बुकिंग का कार्य देखता है के मालिक मनोज सक्सेना को गिरफ्तार किया गया है। मनोज सक्सेना को बुकिंग के दौरान पता था कि मुस्लिम युवती के निकाह के लिए मंदिर परिसर की बुकिंग हो रही है। बावजूद इसके उसने बुकिंग की थी। इसके चलते आरोपी के खिलाफ धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने सहित संबंधित धाराओं में रिपोर्ट दर्ज की गई है।

स्कॉर्पियो ने 2 बाइक सवारों को रौंदा, मौत

बुलंदशहर में नशे में धुत थे, पुलिस सीसीटीवी खंगालने में जुटी

अमन लेखनी समाचार

बुलंदशहर, बुलंदशहर के कोतवाली नगर क्षेत्र के डीएवी फ्लाई ओवर पर स्कॉर्पियो ड्राइवर ने बाइक सवारों को रौंदा दिया। घटना देर रात की बताई जा रही है। बाइक सवारों की मौके पर ही मौत हो गई। स्कॉर्पियो में कई लोग सवार बताए जा रहे है। गाड़ी में सवार सभी लोग नशे की हालत में थे। मौके पर ही बाइक सवारों की मौत हो गई। वहां से गुजर रहे लोगों ने पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने दोनों मृतकों को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा। पुलिस जांच में जुटी हुई है। बताया जा रहा है कि स्कॉर्पियो सवार काफी देर से बाइक का पीछा कर रहे थे। बाइक सवारों ने खुद को बचाने के लिए स्पीड बढ़ाकर भागने की कोशिश की लेकिन कामयाब नहीं हो सके। गाड़ी सवारों ने उन्हें काफी देर तक गाड़ी से रौंदा और मौके पर दोनों युवकों की मौत हो गई। पुलिस का कहना है कि सीसीटीवी कैमरे की जांच की जा रही है। जल्द से जल्द आरोपी पुलिस की गिरफ्त में होंगे। बता दें बीते दिनों से इस तरह की घटना बढ़ रही है। हाल ही में नगर के यमुनापुरम क्षेत्र में स्कॉर्पियो सवार एक किशोर की स्कूटी पर सामने से टक्कर मारकर भाग गए थे।

आईटीएम गीडा गोरखपुर के छात्रों ने तैयार किया एंटी एयर पोल्यूशन मास्क

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। गीडा थाना क्षेत्र स्थित के इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट गीडा गोरखपुर के बीटेक के छात्र - छात्राओं ने मिलकर एक ऐसा एंट्री एयर पोल्यूशन मास्क तैयार किया है। राजधानी दिल्ली समेत पूरे एनसीआर के साथ देश में कई जगह बढ़ते प्रदूषण से लोगों की सांसें फूलने लगी हैं। एक्यूआई (एयर क्वालिटी इंडेक्स) की स्थिति बेहद खतरनाक हो गई है, जिससे लोगों को सांस लेने में दिक्कत हो रही है और आंखों में जलन भी हो रही है। मौसम विभाग के अनुसार, दिल्ली के कई इलाकों में जहरीली हवा चल रही है, जो सेहत के लिए ठीक नहीं है। इस बढ़ते प्रदूषण के कारण लोग कई तरह की सांस संबंधित बीमारियों का शिकार हो सकते हैं। इसी समस्या को ध्यान में रखते हुए इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट गीडा गोरखपुर के बीटेक के चार छात्र-छात्राओं ने मिलकर एक ऐसा एंटी एयर पोल्यूशन मास्क तैयार किया है, जो प्रदूषित हवा को शुद्ध करके उपयोगकर्ता तक सुरक्षित हवा पहुंचाने में मदद करता है। इस मास्क को बनाने वाले छात्र हैं। अंशित श्रीवास्तव, शाम्भवी मिश्रा, तान्या प्रजापति और शीतल गुप्ता। शाम्भवी मिश्रा ने बताया कि प्रदूषण की स्थिति बहुत गंभीर हो गई है। इस प्रदूषण से आंखों में जलन हो रही है और सांस लेने में कठिनाई आ रही है। हमारी टीम ने एक ऐसा मास्क तैयार किया है, जो प्रदूषित हवा से सुरक्षा प्रदान करता है और आंखों की सुरक्षा भी सुनिश्चित करता है। इस मास्क में लगे खास एयर फि ल्टर प्रदूषित हवा को शुद्ध कर आपके साँसों तक सुरक्षित हवा पहुंचाते हैं। तान्या प्रजापति ने मास्क की विशेषताओं के बारे में बताया, हमारा मास्क प्रदूषण रहित हवा प्रदान करने के साथ-साथ, इसमें एक एंटी पोल्यूशन सेंसर भी है, जो प्रदूषण स्तर बढ़ने पर अलर्ट करता है। इससे उपयोगकर्ता को समय रहते प्रदूषित क्षेत्रों से बाहर निकलने का संकेत मिलता है। अंशित श्रीवास्तव ने कहा, मास्क के अंदर एक विशेष एयर फि ल्टर है, जो हवा को शुद्ध करता है और जब हम सांस लेते हैं तो यह साफ हवा हमारे शरीर में प्रवेश करती है। शीतल गुप्ता ने कहा, मास्क को बनाने में हमें एक सप्ताह का समय लगा और 750 रुपये का खर्च आया। इसे बनाने में हमने एयर पोल्यूशन सेंसर, 3.7 वोल्ट की बैटरी, अलार्म, मास्क, और आई सेफ्टी चश्मे का इस्तेमाल किया है। संस्थान के निदेशक डॉ. एन के सिंह ने कहा, यह मास्क प्रदूषण से लड़ने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है, लेकिन साथ ही हमें यह समझने की आवश्यकता है कि प्रदूषण किस कारण से बढ़ रहा है और इसे रोकने के लिए क्या उपाय किए जा सकते हैं। हमारे छात्रों ने इस समस्या को ध्यान में रखते हुए एक अभिनव समाधान प्रस्तुत किया है। छात्रों की इस उपलब्धि पर पर पर संस्थान के अध्यक्ष नीरज मातनहेलिया, सचिव श्यामबिहारी अग्रवाल, कोषाध्यक्ष निकुंज मातनहेलिया, संयुक्त सचिव अनुज अग्रवाल साहित्य संस्थान के सभी शिक्षकों ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए बधाई दिया।

बी.आई.टी में आयोजित होगी दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कांफ्रेंस

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। गीडा थाना क्षेत्र स्थित के बी0आई0टी0 मे अंतरराष्ट्रीय स्तरीय दुनिया का सबसे बडा तकनीकी संगठन IEEE की दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कान्फ्रेस का आयोजन दिनांक-23 एवं 24 नवम्बर 2024 को बी0आई0टी0 संस्थान मे किया जा रहा है। अंतरराष्ट्रीय कांफ्रेंस के संयोजक डॉ0 अंकुर कुमार, डॉ0 रूप रंजन, डॉ0 अभिनंदन त्रिपाठी, डॉ0 शशांक श्रीवास्तव एवं बी0आई0टी0 संस्थान के निदेशक डॉ0 अरविंद पांडे एवं सन्तोष त्रिपाठी ने पत्रकारों को संबोधित करते हुए कहा की इस अंतरराष्ट्रीय कांफ्रेंस में नासा वैज्ञानिक प्रो0 कुमार कृष्णन अमेरिका, प्रो0 जय गोविंद थाईलैंड, डॉ दीप्ति कपूर नीदरलैंड, प्रो0 एस0एन0 सिंह ग्वालियर, ई0 देश दीपक शाही महाप्रबन्धक निशान दुबई, प्रो0 योगेश चैहान आई0आई0टी कानपुर, प्रो0 गीतम सिंह तोमर सोनभद्र, प्रो0 आशीष कुमार सिंह एम0एन0एन0आई0टी0 इलाहाबाद, सहित देश विदेश के 21 वक्ता एवं विशेषज्ञ कॉन्फ्रेंस में उपस्थित हो रहे हैं।

जिसमें देश व विदेश से नवाचार हेतु 1162 शोध पत्र प्राप्त हुए हैं। इस कांफ्रेंस का उद्देश्य आईओटी, कम्युनिकेशन, ऑटोमेशन, जो की यह आज के समय में सामाजिक एवं औद्योगिक जगत का आधार है इसके संबंध में विश्व स्तर पर हो रहे शोध पर विचार विमर्श एवं मंथन कर समाज व उद्योग जगत के लिए समुचित मार्ग प्रशस्त किया जा सके ताकि जनमानस को नवीन तकनीकी लाभ प्राप्त हो।

घघसरा बाजार में प्रशासन के आंख में धूल झुक कर चल रहा अवैध पटाखा की फैक्ट्री

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। सहजनवा तहसील अंतर्गत क्षेत्र के नगर पंचायत घघसरा बाजार में एक व्यक्ति जो प्रशासन के आंख में धुल झोंक कर अपने घर में अवैध पटाखा की फैक्ट्री संचालित कर रहा है। जिसके बारे में पुलिस को भी अवैध फैक्ट्री संचालक के बारे में पता है। एक पटाखा फैक्ट्री संचालक ने पुलिस को तहरीर भी दिया था। लेकिन उसका काम जोरो पर चल रहा है। सुप्रीम कोर्ट से प्रशासन को निर्देश दिया है कि घनी आबादी के बीच पटाखा बनाने की फैक्ट्री का लाइसेंस जारी न किया। और घनी आबादी में यदि को घटना होगी तो जिम्मेदार अधिकारियों के खिलाफ सख्त कारवाई की जायेगी। लेकिन घघसरा बाजार के घनी आबादी में एक व्यक्ति द्वारा अपने घर में अवैध पटाखा की फैक्ट्री खोल रखा है। जब की पुलिस को शिकायत के बाद भी उसके ऊपर कोई कारवाई नहीं हो पा रही है। इस संदर्भ में तहसीलदार राकेश कन्नौजिया ने कहा कि मामला संज्ञान में आया है। जांच कराकर कारवाई की जायेगी।

पोस्ट ऑफिस एजेंट पर किस्त का 1.20 लाख रुपया हड़पने का लगाया आरोप

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। सहजनवा थाना क्षेत्र के वार्ड 10 लुचई निवासी एक व्यक्ति का पोस्ट ऑफिस एजेंट ने किस्त जमा न कर उसका 1.20 लाख रुपया हड़प गया है। पीड़ित ने थाने में तहरीर देकर कारवाई करने की मांग किया है। मिली जानकारी से जहीर अहमद पुत्र एहसान अली निवासी लुचई वार्ड 10 अपने पौत्रि साहिबा, तैयबा के नाम से सुकन्या योजना के तहत पोस्ट ऑफिस में खाता खोला था। जिसमे किस्त का हर माह 10 हजार रुपया पोस्ट ऑफिस एजेंट के जमा कर देते थे। और वह जमा की रसीद दे देता था। जब समय पूरा हो गया तो पोस्ट ऑफिस पर पता चला की जो किस्त दिए थे। एजेंट ने जमा नहीं किया है। इसके बाद पीड़ित के होश उड़ गए। और एजेंट से संपर्क किया तो उसने रुपया देना में बहाने करता रहा। पीड़ित आरोपी पोस्ट ऑफिस एजेंट के खिलाफ थाने में शिकायत दर्ज कराया है। इस संदर्भ एसओ विशाल उपाध्याय ने कहा की तहरीर मिली है पोस्ट ऑफिस एजेंट को थाने पर बुलाया गया है।

घघसरा में जाम से लोग परेशान

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। सहजनवा तहसील अंतर्गत विकासखण्ड पाली क्षेत्र स्थित के नगर पंचायत घघसरा बाजार में दुकानदारों द्वारा सड़क पटरी पर अतिक्रमण के चलते आए दिन वाहनों का भारी जाम लग जा रहा है। आम जनमानस जहां परेशान है, वहीं एंबुलेंस सेवा की मरजेंसी सेवाएं दम तोड़ती नजर आ रहीं हैं। स्थानीय प्रशासन के प्रति लोगों में भारी आक्रोश व्याप्त है। शुक्रवार को शाम बाजार में सड़क पर इस कदर जाम हो गया कि गाड़िया रेंग रहीं थीं। लोग पैदल भी नहीं चल पा रहे थे। काफी देर भारी मुश्किल के बीच धीरे धीरे जाम से बाहर निकले। यह फैसला काफी देर तक नहीं चला पुनः बार-बार जाम लगता रहा। वहीं पुलिस मौके से नदारद थी। सहजनवा बखिरा मार्ग पर बसी घघसरा बाजार के नगर पंचायत होने से इस पर वाहनों का दबाव पहले की अपेक्षा कई गुना बढ़ गया है। लोग शॉर्टकट रास्ता अपनाते हुए- संत कबीर से महाराजगंज और नेपाल तक रास्ता तय कर रहे हैं।

सेवानिवृत्ति उपनिरीक्षक के साथ एसओ ने किया बैठक

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। सहजनवा थाने में थानाध्यक्ष विशाल उपाध्याय की अध्यक्षता ने सेवानिवृत्ति उपनिरीक्षकों के साथ बैठक किए। बैठक में पुराने उपनिरीक्षक से अपने विचार साझा किए। और कहा कि पुराने अनुभवों से पुलिस कर्मियों को अनुभव प्राप्त होगा। और जिससे मामले का समय से निस्तारण हो सकेगा। साथ ही उन्होंने कि सभी लोगों से संपर्क बना रहे। और क्षेत्र मे कोई घटना और कोई समस्या हो तो समय से साझा करे। इस दौरान उनके मोबाइल नंबर भी लिए गए। जिससे समय समय पर संवाद बना रहे। इस दौरान रामकिशन सिंह, जगदीश प्रसाद, गोविंद प्रसाद, मदन मोहन यादव, रामदरश यादव, जगदीश यादव, सहित अनेक सेवानिवृत्ति उपनिरीक्षक मौजूद थे।

मेरठ पुलिस की वसूली से खाकी पर दाग

- पुलिसवाले भक्षक नहीं रक्षक बनें, कोई रिश्वत मांगे तो हमें बताएं : एडीजी

अमन लेखनी समाचार

मेरठ, मेरठ के लिसाड़ी गेट थाने में 3 पुलिसवालों ने मिलकर वसूली का बड़ा खेल खेला। तीनों ने सोना तस्करी के मामले में 6 लाख रुपए वसूले। इतना ही नहीं युवक को प्राइवेट रूम में रखकर टॉर्चर किया। जमकर पिटाई कर दी। पूरे मामले में एसएसपी ने तीनों पुलिसकर्मियों को सस्पेंड कर दिया है। लेकिन मेरठ पुलिस के इस कारनामे ने पूरे सिस्टम पर एक बार फिर सवाल खड़े कर दिए। जोन में लगातार ऐसे मामले बढ़ रहे हैं। पुलिस की वर्दी पर लग रहे भ्रष्टाचार के दाग से सीनियर अफसर भी परेशान हैं। एडीजी जोन डीके ठाकुर ने कहा ये वर्दी बड़ी मुश्किल से मिली है इस नौकरी की इज्जत करिए। जो पुलिसवाला रिश्वत मांगे तो हमें जरूर बताएं। एडीजी जोन ध्रुवकांत ठाकुर ने बताया कि ये हमारे लिए गंभीर समस्या है कुछ ऐसे मामले मेरठ में और पूरे जोन में आए हैं। जिसमें पुलिसवाले रक्षक नहीं भक्षक की भूमिका में मिले हैं। ये काफी गंभीर समस्या है। पुलिसवाले खुद करप्शन एक्सटॉर्शन में शामिल पाए गए हैं। इस मामले में सख्त एक्शन लिया जा रहा है। इन मामलों में विभागीय कार्यवाही करके कठोर दंडात्मक कार्रवाई करवाएंगे, जांच कराकर मुकदमा दर्ज करा रहे हैं। सख्त एक्शन लिया जा रहा है। ऐसे पुलिसवालों को सस्पेंड भी कराया जा रहा है। मैं कहना चाहूंगा कि आम जनता के साथ अगर कोई भी पुलिसवाले द्वारा करप्शन, एक्सटॉर्शन की घटना होती है। तत्काल अपने जिले के एसपी, एसएसपी को बताएं, मुझे बताएं हम तत्काल एक्शन लेंगे। मैं पुलिसवालों से भी कहना चाहूंगा कि ये आपके करियर का सवाल है। इतनी मुश्किल से आप लोग इस जॉब में आ रहे हैं, सर्विस में आने के बाद इस तरह का क्राइम, करप्शन करना गलत है। आप स्वयं तो अपने लिए गलत करते हैं अपने परिवार, समाज, करियर और पुलिस की वर्दी सभी को खराब करते हैं सभी पर इसका गलत प्रभाव पड़ता है इसको जरूर सोचें और ऐसे काम न करें।

शादी का झांसा देकर युवक से ठगी

एक साल तक अफेयर में रहने के बाद निकाह से मुकरी युवती

अमन लेखनी समाचार

मेरठ, मेरठ में शादी का झांसा देकर युवक से ठगी का मामला सामने आया है। यहां रेलवे रोड थाने में पीड़ित युवक जुबैर ने तहरीर दी है। साथ ही पीड़ित कप्तान के पास भी शिकायत लेकर पहुंचा। युवक ने बताया कि एक साल से वो एक लड़की के साथ मोहब्बत में था। दोनों का निकाह तय हो चुका था। लेकिन ऐन मौके पर लड़की शादी से मुकर गई। उसके घरवालों ने शादी से इंकार कर दिया। इतना ही नहीं लड़की ने उससे सवा लाख रुपए की ठगी की है। पुलिस ने पूरे मामले की जांच शुरू कर दी है। जुबैर ने बताया कि उसके अंजुम पैलेस के पास फ्रिज, कूलर, टीवी की दुकान है। उसका एक साल से एक लड़की के घर आना जाना है। दोनों एक दूसरे से प्यार करते हैं। दोनों के परिवारों की राजी से उनका निकाह होना तय हो गया। निकाह तय होने के बाद दोनों एक दूसरे को डेट कर रहे थे। साथ घूमते, खाते पीते। इस तरह युवती जुबैर से पैसे लेने लगी। अपनी सारी कमाई वो युवती को देने लगा। लेकिन जब शादी की बात आई तो लड़की उसके घरवालों ने शादी से इंकार कर दिया। अब लड़की के घरवालों ने कहीं और अपनी बेटी का रिश्ता तय कर दिया है। युवक से सवा लाख रुपए भी ठग लिए। पीड़ित ने कहा कि उसे अपनी रकम वापस चाहिए। इस लड़की इसके घरवालों का यही काम है। ये लोग अपनी बेटियों का इस्तेमाल लोगों को ठगने में करते हैं। हर बार एक नए लड़के को शादी के नाम पर फंसाते हैं। रिश्ता तय करते हैं उससे रकम ऐंठते, घूमते फिरते हैं। ठगी के बाद रिश्ता तोड़कर कहीं और दूसरे लड़के को फंसाते हैं। पहले भी ये लड़की कुछ लड़कों को इसी तरह फंसाकर रकम ऐंठ चुकी है। आरोप लगाया कि लड़की ने अपना एबॉर्शन कराकर मेरा बच्चा भी गिरा दिया है। एसपी सिटी आयुष विक्रम सिंह का कहना है कि एक युवक ने शिकायत दी है जिसकी जांच की जा रही है। जांच के बाद कार्यवाही की जाएगी।

मेरठ नगर निगम ऑफिस में जलाया कूड़ा, लगा जुर्माना

अपने ही दफ्तर में किया ग्रैप-4 के नियमों का उल्लंघन

अमन लेखनी समाचार

मेरठ, एनसीआर सहित पश्चिमी यूपी में धुंध से लोगों का जीना मुहाल हुआ है। मेरठ सहित पूरे एनसीआर में पिछले 15 दिनों से ग्रैप 4 लागू है। कोर्ट की गाइडलाइन के अनुसार तमाम निर्माण कार्यों और प्रदूषण फैलाने वाले कारकों पर रोक लगाने का सख्त आदेश है। इसके बावजूद मेरठ में नगर निगम कार्यालय में ही कर्मचारियों ने कूड़ा जला दिया। शहर में ग्रैप 4 गाइडलाइन को लागू कराने वाले नगर निगम के अपने दफ्तर में ग्रैप के रूल्स को तोड़ा गया। फिलहाल मामले की जानकारी होते ही नगरायुक्त ने अपने ही कर्मचारियों पर 10 हजार रुपए का जुर्माना लगा दिया है। उन्हें ये जुर्माना भरना पड़ेगा। नई सड़क पर मेरठ नगर निगम का जोनल कार्यालय है। इसी जोनल कार्यालय में मंगलवार 19 नवंबर को कचरा जलाने की शिकायत मिली। जांच में शिकायत सही थी। अब नगरायुक्त की तरफ से जुमार्ना लगाया गया है। 10 हजार रुपए का जुमार्ना मेसर्स यूनिटेक एसोसिएट्स संबंधित फर्म को भरना पड़ेगा। नगरायुक्त सौरभ गंगवार ने बताया कि किसी व्यक्ति ने नगर निगम जोनल कार्यालय नई सड़क में कूड़ा जलने की जानकारी दी थी। जानकारी पर मामले की जांच की गई तो वहां वाकई कूड़ा जलता मिला।

चोरों ने बंद घर से गहने चुराए

ताले तोड़कर नकदी और लाखों की ज्वेलरी पर हाथ साफ किए, शादी में गया हुआ था परिवार

अमन लेखनी समाचार

मेरठ, मेरठ के ब्रह्मपुरी थाना क्षेत्र स्थित माधवपुरम में चोरों ने बंद मकान के ताले तोड़कर नकदी सहित लाखों रुपए की ज्वेलरी चोरी कर ली। परिवार के लोग शाम को मकान के ताले लगाकर शादी समारोह में शामिल होने गए थे। दोपहर को जब परिवार के लोग घर पहुंचे तो मकान के ताले टूटे देखकर उनके होश उड़ गए। मकान में मौजूद दो अलमारी के ताले टूटे हुए थे और उसमें रखी नकदी सहित सोने चांदी के जेवरात गायब थे। परिवार के लोगों ने घटना की जानकारी पुलिस को दी, सूचना के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने पीड़ित परिवार से तहरीर लेकर चोरों की तलाश शुरू कर दी। पुलिस मकान के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरे चेक कर चोरों की तलाश कर रही है। माधवपुरम सेक्टर 3 का रहने वाला संदीप पुत्र प्रमोद कुमार एक प्राइवेट कंपनी में मार्केटिंग का काम करता है। बुलंदशहर के सियान में संदीप की साली की शादी थी, सोमवार को वह अपने परिवार के साथ मकान के ताले लगाकर शादी में चला गया था। मंगलवार दोपहर को जब संदीप अपने परिवार के साथ घर लौटा तो उसके घर के ताले टूटे हुए थे। घटना के बारे में संदीप ने पुलिस को सूचना दी सूचना पाकर पुलिस मौके पर पहुंची और चोरों की तलाश शुरू कर दी। पुलिस आसपास लगे सीसीटीवी कैमरे खंगालकर चोरों की तलाश कर रही है।

बारात लाने पर जान से मारने की धमकी

घर में डाला पर्चा, लिखा– बिचौलिया तो मरेगा ही, तुम्हें भी साथ लेकर मरेगा

अमन लेखनी समाचार

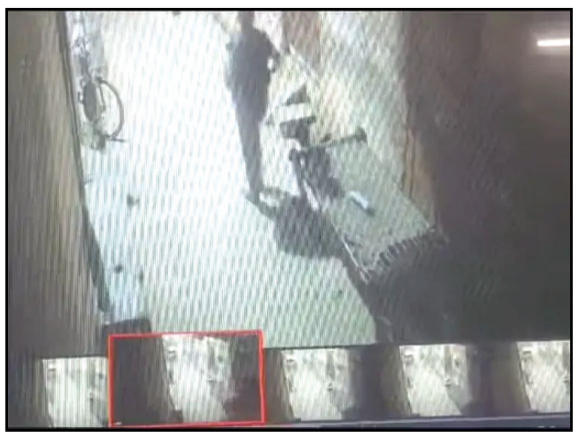

गाजियाबाद, गाजियबाद के मोदीनगर के मुरादनगर की ईदगाह कॉलोनी निवासी एक युवक को मेरठ में बारात लाने पर जान से मारने की धमकी दी जा रही है। सिरफिरे ने युवक के घर पर्चा डालकर बारात लाने पर खून खराबा करने की चेतावनी दी है। इसके बाद से युवक व उनका पूरा परिवार सदमें में है। पर्चा डालने वाला युवक सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गया है। नगर की ईदगाह कॉलोनी निवासी एक व्यक्ति परिवार सहित रहते हैं। उन्होंने अपने पुत्र की शादी मेरठ की एक कॉलोनी निवासी युवती से तय की है। 23 नवम्बर को मुरादनगर से मेरठ के लिसाड़ी गेट बारात जानी है। इन दिनों घर में शादी की तैयारी चल रही है। सुबह के समय जब युवक व उनके परिजन उठे तो घर के आंगन में उन्हें एक पर्चा मिला। पर्चे में लिखा था.' मैं युवती से बेहद प्यार करता हूं। यदि तुम मेरठ युवती की चौखट पर बारात लेकर आए तो खून खराबा हो जाएगा।' इतना ही नहीं पर्चे में युवती का रिश्ता करवाने वाले बिचौलियों को भी जान से मारने की धमकी दी गई है। पर्चा मिलने के बाद से युवक व उनका परिवार डरा हुआ है। इतना ही नहीं पर्चा डालने वाला युवक कॉलोनी में लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गया है। पर्चा डालने की बात पूरे क्षेत्र में चर्चा का विषय बना हुआ है। पर्चा किसने डाला है, इसका भी अभी तक पता नहीं चला है। युवक के परिजनों ने इस संबंध में अज्ञात के खिलाफ मुरादनगर थाने में तहरीर दी है। पुलिस का कहना है कि सीसीटीवी फुटेज के आधार पर पर्चा डालने वाले युवक की शिनाख्त की जा रही है। जल्द ही घटना का खुलासा कर दिया जाएगा।

स्वामी शिवानंद की पुण्यतिथि पर हुआ विशाल भंडारा

अमन लेखनी समाचार

भरुआ, सुमेरपुर। गायत्री तपोभूमि प्रांगण में संचालित अनुसुइया आश्रम के महंत स्वामी शिवानंद महाराज की 16वीं पुण्यतिथि पर विशाल भंडारा संपन्न कराया गया। आश्रम में पूरे दिन भजन कीर्तन का दौर चलता रहा। प्रतिवर्ष की भांति इस साल भी ब्रह्मलीन संत शिवानंद महाराज की 16वीं पुण्यतिथि पर अनुसुइया आश्रम में अखंड रामायण पाठ के साथ विशाल भंडारे का सफल आयोजन कराया गया। भंडारे के दौरान आश्रम में आए साधु संतों ने भजन कीर्तन प्रस्तुत करके ब्रह्मलीन संत को श्रद्धांजलि अर्पित की। भंडारे में हजारों लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया। इस मौके पर सपा नेता अजय उर्फ कल्लू यादव, धुन्नी यादव, भोला शंकर, शिवशंकर गुप्ता, दिनेश गुप्ता, रमाशंकर यादव, शंकर दयाल गुप्ता आदि का विशेष सहयोग किया। भंडारे को सकुशल संपन्न कराने पर स्वामी नारायणानंद ने सभी का आभार जताया।

मां व शिशु के बेहतर स्वास्थ्य के लिए लैंगिक समानता जरूरी : सीएमओ

परिवार नियोजन में पुरुषों की सहभागिता बढ़ाने में भी लैंगिक समानता मददगार

जेंडर इंटीग्रेशन पर पीएसआई इंडिया के सहयोग से संवेदीकरण कार्यशाला

अमन लेखनी समाचार

मेरठ। मां और शिशु को बेहतर स्वास्थ्य प्रदान करने, मातृ-शिशु मृत्यु दर में कमी लाने, युवाओं व किशोरियों की चुनौतियों के समाधान के साथ ही परिवार नियोजन में पुरुषों की सहभागिता बढ़ाने के लिए लैंगिक समानता बहुत जरूरी है। इस तरह लैंगिक आधारित भेदभाव को दूर कर स्वस्थ और खुशहाल समाज का निर्माण किया जा सकता है। यह बातें मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. अशोक कटारिया ने पापुलेशन सर्विसेज इंटरनेशनल-इंडिया (पीएसआई-इंडिया) के सहयोग से आयोजित शहरी स्वास्थ्य समन्वय समिति की संवेदीकरण कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुए कहीं। लैंगिक समानता पर संवेदीकरण को लेकर आयोजित कार्यशाला में स्वास्थ्य विभाग के साथ ही शिक्षा, राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन, आईसीडीएस, डूडा, नगर निगम विभाग के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। बैठक में स्वास्थ्य सम्बन्धी गतिविधियों और सेवाओं में लैंगिक समानता आधारित व्यवहार सुनिश्चित करने को लेकर प्रतिभागियों को संवेदीकृत किया गया। इस मौके पर पीएसआई इंडिया की कार्यक्रम प्रबन्धक कोमल और महाप्रबंधक जेंडर मेनस्ट्रीमिंग इफत हामिद ने जेंडर इंटीग्रेशन पर विस्तार से प्रकाश डाला। लैंगिक भेदभाव को समाप्त करने और सभी को मुख्य धारा से जोड़ने के फायदे के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा कि विभिन्न विभागों द्वारा आयोजित होने वाली गतिविधियों और कार्यक्रमों में भी लैंगिक समानता का ध्यान रखना बहुत जरूरी है। इससे हर किसी को योजनाओं के प्रति जागरूकता आएगी और वह उसका लाभ भी उठा सकेंगे। पुरुषों में आत्महत्या की बढ़ती प्रवृत्ति के कारणों और चुनौतियों पर भी चर्चा हुई और बताया गया कि लैंगिक समानता के आधार पर इसमें भी कमी लायी जा सकती है।

कार्यशाला में राष्ट्रीय शहरी स्वास्थ्य मिशन के नोडल अधिकारी डॉ. सुधीर ने जोर दिया कि समाज के कल्याण के लिए काम करने वाले हर विभाग में जेंडर इंटीग्रेशन को शामिल किया जाना चाहिए। समाज में जागरूकता लाने के लिए प्रत्येक विभाग से जेंडर चैंपियन की पहचान करनी चाहिए। इसके अलावा विभागवार कार्य योजना तैयार करने तथा अन्य हितधारकों को सूचित करने के लिए संबोधित किया, ताकि वह भी भाग ले सकें तथा अपने विभाग के कार्यक्रम को दूसरों के साथ साझा कर सकें। डीसीपीएम हरपाल सिंह ने इस पहल की सराहना की और सुझाव दिया कि सभी शहरी तथा ब्लॉक स्तर की सुविधाओं पर इस तरह की संवेदीकरण की योजना बनाई जाएगी तथा कर्मचारियों को भी संवेदीकृत किया जाएगा। नगर स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. हरपाल निगम ने खासकर महिला कर्मचारियों के लिए भी इस तरह की कार्यशाला की योजना बनाने और उन्हें मुख्यधारा में लाने और स्वास्थ्य कार्यक्रमों के बारे में संवेदीकृत करने पर जोर दिया। कार्यशाला में प्रतिभागियों के बीच कुछ समूह गतिविधियाँ भी कराई गयीं, जिससे लैंगिक समानता की चुनौतियों और समाधान पर खुलकर चर्चा हुई। कार्यशाला के दौरान शहरी स्वास्थ्य समन्वयक राजीव त्यागी ने साझा किया कि सभी विभागों के सहयोग से हम बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं तथा स्वास्थ्य विभाग के लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं। कार्यशाला में यूनिसेफ, यूपीटीएसयू और जेएसआई के प्रतिनिधि के आलावा जिला कार्यक्रम प्रबन्धक मनीष बिसारिया, सीसीपीएम विनोद कुमार, मातृ परामर्शदाता इल्मा, डिविजनल एफपीएलएमआईएस मैनेजर अखिलेश सिंह, एफपीएलएमआईएस मैनेजर हुसैन अहमद, सीएमओ कार्यालय के कर्मचारी आदि उपस्थित रहे।

किसानों के लिए दानेदार डीएपी का विकल्प है नैनो डीएपी : शिशु पाल

अमन लेखनी समाचार

अमेठी इफ्को क्षेत्राधिकारी शिशु पाल ने बताया कि जनपद में किसानों द्वारा गेहूं बोआई का कार्य शुरू कर दिया गया है, फास्फेटिक उर्वरक के विकल्प में किसान नैनो डी0ए0पी0 से बीज शोधित कर सकते है। उन्होंने बताया कि एक एकड़ गेहूं फसल के लिए 50 किलो बीज का प्रयोग किया जाता है, जिसे 250 एम0एल0 (5 मिली0ली0 प्रति किलो बीज) नैनो डी0ए0पी0 को एक से सवा लीटर पानी में मिलाकर बीज शोधित करें तथा शेष 250 एम0एल0 डी0ए0पी0 का 30 से 35 दिन की फसल पर स्प्रे करें। उन्होंने बताया कि नैनो डी0ए0पी0 का उपयोग करने से किसान अपनी दानेदार डी0ए0पी0 की मात्रा आधी कर सकते है, दानेदार डी0ए0पी0 के एक बैग की कीमत 1350 रुपये है तथा नैनो डी0ए0पी0 की एक बोतल 600 रुपये की है। उन्होंने बताया कि जिससे किसान को करीब 750 रुपये की बचत होती है तथा इसके उपयोग से लागत में कमी आएगी और उत्पादन बढ़ेगा। इस सम्बन्ध में क्षेत्रीय प्रबन्धक इफको अमेठी ने बताया कि रासायनिक उर्वरक के असंतुलित प्रयोग के होने वाले दुष्प्रभाव से बचाव के लिए इफको ने नैनो उर्वरक का अनुसंधान किया था एवं इसके अच्छे परिणाम सामने आए तथा नैनो यूरिया, डी0ए0पी0 से पर्यावरण पर कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ता। उन्होंने बताया कि दानेदार उर्वरकों से पौधों को 30 से 35 प्रतिशत पोषक तत्व उपलब्ध हो पाते हैं व नैनो उर्वरक से 90 से 95 प्रतिशत पोषक मिलते हैं तथा नैनो उर्वरक पर दुर्घटना बीमा का लाभ मिलता है। उन्होंने बताया कि किसानों को न्यूनतम एक बोतल खरीदने पर 10 हजार रुपये और अधिकतम 20 बोतल खरीदने पर दो लाख रुपये तक का मुफ्त दुर्घटना बीमा मिलता है।

आते ही खत्म हो गया गेहूं का बीज किसान निराश

एक पखवारे के बाद आया था 150 क्विंटल बीज

अमन लेखनी समाचार

भरुआ, सुमेरपुर। एक पखवारे के बाद राजकीय बीज भंडार में वितरण के लिए आए गेहूं को लेने के लिए किसानों की भीड़ उमड़ पड़ी। शाम होने के पूर्व ही बीज खत्म हो जाने से तमाम किसान निराश होकर घरों को लौट गए। एक पखवारे के बाद सुमेरपुर कस्बे के राजकीय बीज भंडार में 150 क्विंटल गेहूं का बीज वितरण के लिए गुरुवार को प्राप्त हुआ था। शुक्रवार को सुबह 10 बजे से ई-पॉस मशीन से अंगूठा लगाकर किसानों को एक व दो बोरी बीज वितरित किया गया। सुबह से ही बीज लेने के लिए किसानों की भीड़ उमड़ी हुई थी। शाम होने के पूर्व ही बीज खत्म हो जाने से तमाम किसानों को निराशा हाथ लगी और वह मायूस होकर लौट गए। बीज भंडार प्रभारी विक्रम सिंह ने बताया कि गेहूं के बीज की डिमांड लगी हुई है। अगले सप्ताह बीज आने की उम्मीद है। उन्होंने बताया कि आज जो बीज का वितरण किया गया है। इसको ज्यादा पानी की जरूरत पड़ती है। यह बुंदेलखंड के हिसाब से सही नहीं है। यहां पर कम पानी के बीज की जरूरत है।

छात्राओं, महिलाओं को सुरक्षा के प्रति किया सतर्क

महिलाएं हर मुसीबत का डट कर करें सामना – प्रभारी शिवाकांत त्रिपाठी

अमन लेखनी समाचार

मुंशीगंज (अमेठी)। महिलाओं की सुरक्षा व सम्मान के लिए चलाए जा रहे मिशन शक्ति अभियान फेज 5 के अंतर्गत विद्या शिक्षण संस्थान इंटर कालेज, सरूवांवा में शुक्रवार को कार्यक्रम आयोजित हुआ। इसमें छात्राओं को प्रशिक्षणरत क्षेत्राधिकारी दिनेश कुमार मिश्र तथा प्रभारी निरीक्षक शिवाकांत त्रिपाठी ने जागरूक किया। मुंशीगंज थाना प्रभारी निरीक्षक ने कहा कि मुश्किल में छात्राएं हेल्पलाइन नंबर डायल करें, मदद जरूर मिलेगी। क्षेत्राधिकारी (प्रशिक्षणरत) दिनेश कुमार मिश्र ने कहा कि किसी भी व्यक्ति द्वारा छींटाकशी, छेड़खानी, सोशल मीडिया से परेशान करना या अनजान व्यक्ति पर किसी प्रकार का संदेह होने पर तत्काल 1090 व 112, 1076 सहित अन्य मोबाइल नंबरों पर फोन करके सूचना दें। पुलिस को सूचना देने वाले का नाम गोपनीय रखा जाएगा। थाने पर महिला हेल्प डेस्क है, जिस पर महिला पुलिस अधिकारी व कर्मचारी हमेशा मौजूद रहती हैं। थाने पर जाकर अपनी समस्या से अवगत करा सकती हैं। कार्यक्रम में महिला कांस्टेबल वंदना ने छात्राओं को मिशन शक्ति के तहत पंपलेट वितरित कर उनके अधिकारों के बारे में जानकारी दी गई। इस दौरान कालेज प्रबंधक सुधीर द्विवेदी, प्रधानाचार्य साधना द्विवेदी सहित समस्त महिला शिक्षिका मौजूद रही।

कोचिंग से लौट रहे बाइक सवार छात्र को डंपर ने मारी टक्कर, घायल

अमन लेखनी समाचार

भरुआ, सुमेरपुर। सुबह कोचिंग पढ़कर बाइक से घर वापस जा रहे युवक को पैलानी मार्ग में तेज रफ्तार डंपर ने टक्कर मार दी। इस घटना में छात्र गंभीर रूप से घायल हो गया। घटना की सूचना पर पहुंची एंबुलेंस ने छात्र को प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया। हालत गंभीर होने पर छात्र को सदर अस्पताल रेफर किया गया है। कस्बे के वार्ड संख्या तीन का निवासी अभिषेक कुमार इंटर का छात्र है। सुबह वह 9 बजे वह कोचिंग से वापस बाइक से घर जा रहा था। पैलानी मार्ग में साक्षी मैरिज हाल के सामने इसको तेज रफ्तार डंपर ने जोरदार टक्कर मार दी। इससे यह सड़क पर गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गया। घटना की सूचना पाकर पहुंचे 108 एंबुलेंस के पायलट विकास व ईएमटी आशीष ने इसको इलाज के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया। हाथ सिर पैर में गंभीर चोटें होने के कारण छात्र को सदर अस्पताल रेफर किया गया है। जहां उसका उपचार जारी है। घायल छात्र के चाचा रोहित कुमार ने बताया कि उसका दांया हाथ दो जगह से फैक्चर हो गया है और सिर में गंभीर चोट है। इलाज के बाद सुधार हो रहा है। उधर घटना के बाद चालक डंपर छोड़ कर मौके से भाग निकला। पुलिस ने डंपर को कब्जे में लिया है।

बंद कमरे का दरवाजा तोड़कर निकाला गया वरिष्ठ लिपिक को

डाक्टरों ने किया मृत घोषित

अमन लेखनी समाचार

मौदहा। विद्युत उपखंड कार्यालय में तैनात एक वरिष्ठ लिपिक के कमरे का दरवाजा बंद होने से घबराये सहकर्मियों द्वारा पुलिस को सूचना देकर दरवाजा तोड़कर जमीन पर पडे लिपिक को सीएचसी मौदहा लेकर जाने पर चिकित्सक को मृत घोषित कर दिया गया। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए मोर्चरी हाउस भेजा है। सहकर्मियों के अनुसार अटैक पडने से उनकी मौत हुई है। उन्नाव जनपद के मूल निवासी 35 वर्षीय वरिष्ठ लिपिक मनीष शर्मा मौदहा उपखंड कार्यालय में वरिष्ठ लिपिक पद पर तैनात थे। बताते हैं कि देर रात मिर्गी का दौरा पड़ने से कमरे में ही उनकी मौत हो गयी। सुबह दरवाजा न खुलने पर पुलिस को सूचना दी गई। मौके पर पहुंची पुलिस ने दरवाजा तुड़वाकर मृतप्राय अवस्था में बाहर निकलवाया। विभागीय कर्मचारियों द्वारा उन्हें अस्पताल लाया गया जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। मौदहा कोतवाली प्रभारी ने बताया कि पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। तहरीर के आधार पर अग्रिम कार्यवाही की जायेगी। इस घटना से बिजली महकमें में शोक की लहर दौड गयी है।

न्यायालय के आदेश पर दरोगा सहित एक के खिलाफ आत्महत्या के लिए उकसाने का मुकदमा

अमन लेखनी समाचार

भरुआ, सुमेरपुर। अकारण गाली गलौज करने से मना करने से नाराज युवक द्वारा दलित एक्ट में फर्जी फंसाने व दरोगा द्वारा बेइज्जत करने से आहत होकर एक युवक द्वारा फंदे पर लटक जाने का मामला अचानक सुर्खियों में आ गया। मृतक के पुत्र के अनुसार उसने मुकदमा दर्ज करने की कोशिश की लेकिन पुलिस ने मुकदमा नहीं लिखा था। दो वर्ष बाद अब न्यायालय के आदेश पर तत्कालीन दारोगा सहित फर्जी मुकदमे में फंसाने की धमकी देने वाले के खिलाफ आत्महत्या के लिए प्रेरित करने का मुकदमा दर्ज किया गया है। सुमेरपुर थाना क्षेत्र के बरुआ गांव निवासी शिवकुमार निषाद के अनुसार बताया कि 17 सितंबर 2022 को गांव निवासी कालीचरन वर्मा शराब के नशे में दरवाजे पर गालीगलौज कर रहा था। उसके पिता लक्ष्मी प्रसाद निषाद ने गाली देने से मना किया तो वह एससी/एसटी एक्ट में फंसाने की धमकी देकर चला गया और 19 सितंबर को थाने पहुंचकर फर्जी शिकायत कर दी। 19 सितंबर को थाने के तत्कालीन दरोगा ओमप्रकाश वर्मा तथा कालीचरन गांव आये और उसके पिता को पकड़कर दरोगा ने तीन-चार थप्पड़ मारते हुये कहा कि दलितों को परेशान करते हो।इसलिए तुम्हें जेल जाना पड़ेगा। इससे उसके पिता भयभीत हो गए और दरोगा के चंगुल से छूटकर यमुना नदी पार कर बबूल के पेड़ में फंदा लगा लिया था। तब उसने एक अक्टूबर 2022 को थाने जाकर आत्महत्या के लिए मजबूर करने की तहरीर दी लेकिन पुलिस ने मुकदमा नहीं दर्ज किया। इसके बाद उसने सात अक्टूबर 2022 को उच्चाधिकारियों से न्याय की गुहार लगाई लेकिन फिर भी न्याय नहीं मिला। तब उसने न्यायालय की शरण ली। न्यायालय के आदेश पर पुलिस ने तत्कालीन दरोगा ओमप्रकाश वर्मा व कालीचरन वर्मा के खिलाफ धारा 306 के तहत मुकदमा दर्ज करके विवेचना शुरू की है।

राज्य महिला आयोग की उपाध्यक्ष अपर्णा यादव का एक दिवसीय जनपद भ्रमण कार्यक्रम 25 नवम्बर को

निरीक्षण भवन में करेंगी महिला उत्पीड़न से सम्बन्धित मामलों की सुनवाई

अमन लेखनी समाचार

अमेठी उपाध्यक्ष उ0प्र0 राज्य महिला आयोग, अपर्णा यादव का एक दिवसीय जनपद भ्रमण कार्यक्रम 25 नवम्बर 2024 को प्रस्तावित है, जिसके तहत मा0 उपाध्यक्ष द्वारा 25 नवम्बर 2024 को पूर्वान्ह 11:00 बजे जनपद अमेठी के निरीक्षण भवन पहुँचेंगी तथा पूर्वान्ह 11:30 बजे वन स्टाप सेन्टर, संयुक्त जिला चिकित्सालय व आंगनबाड़ी केन्द्र का निरीक्षण किया जायेगा। उसके उपरान्त अपरान्ह 02:00 बजे से निरीक्षण भवन में मा0 उपाध्यक्ष द्वारा महिला कल्याण विभाग के अधिकारियों व अन्य जनपदीय अधिकारियों के साथ महिला उत्पीड़न की समस्याओं के सम्बन्ध में आयोजित बैठक में सम्मिलित होंगी तथा बैठक के उपरान्त महिलाओं से संबंधित मामलों की जनसुनवाई करेंगी, तदोपरान्त सायंकाल 04:30 बजे जनपद लखनऊ के लिए प्रस्थान करेंगी।

हिंदुस्तान हस्तशिल्प महोत्सव में उत्तराखंड भरतनाट्यम से सजी शाम

क्या खूब लगती हो बड़ी सुंदर दिखती हो.... गीतों पर श्रोताओं ने जमकर की मस्ती

सांस्कृतिक मंच पर बॉडी बिल्डिंग चैंपियनशिप का प्रदर्शन

अमन लेखनी समाचार

लखनऊ कानपुर रोड एलडीए कालोनी के स्मृति उपवन में आयोजित माँ गायत्री जन सेवा संस्थान एवं नीशू वेलफेयर फाउंडेशन द्वारा हिंदुस्तान हस्तशिल्प महोत्सव की सांस्कृतिक संध्या पर आयोजक अरुण प्रताप सिंह, गुंजन वर्मा द्वारा द्वीप प्रज्जवल्लन कर सांस्कृतिक संध्या का शुभारम्भ किया गया। अमर कुमार जो मिस्टर इण्डिया, मिस्टर नार्थ इंडिया एवं मिस्टर पूर्वांचल जैसे बड़े-बड़े चैंपियनशिप जीते चुके हैं आज मंच पर जोरदार तरीके से बॉडी बिल्डिंग का प्रदर्शन किया तो दर्शको ने तालियों से उनका स्वागत किया। अमर कुमार को आयोजक अरुण प्रताप सिंह एवं गुंजन वर्मा द्वारा पुष्प गुच्छ अंगवस्त्र एवं स्मृति चिन्ह भेट कर सम्मानित किया गया।

सांस्कृतिक मंच से रंगारंग कार्यक्रम के दौरान द सिंगिंग क्यूविकल ग्रुप संयोजक अंकिता सिंह के कलाकारों द्वारा प्रियंका दीक्षित ने तुझमें रब दिखता है......अंकिता सिंह ने दिल में तुझे बिठा के कर लूंगी मैं बंद आंखें..... देवेश मिश्रा ने सांसों की जरूरत है जैसे......पलक शर्मा मैं तेनू समझावां की..... दीपक साहू क्या खूब लगती हो बड़ी सुंदर दिखती हो.... गीतों पर श्रोताओं ने जमकर मस्ती की। अक्षय श्रीवास्तव नृत्य प्रस्तुत कर अतिथियों एवं दर्शको का मन प्रफुल्लित कर दिया इसी क्रम में राखी में तेरी दीवानगी पर डांस प्रस्तुत कर दर्शको को ठुमका लगाने पर मजबूर कर दिया। ऐम डांस ग्रुप से शुभम गौतम (इंटरनेशनल डांसर) ने उत्तराखंड भरतनाट्यम प्रस्तुति देकर दर्शको को मंत्रमुग्ध कर दिया। वहीं शशांक के द्वारा स्टैंड अप कॉमेडी कर दर्शकों को खूब गुदगुदाया। इस दौरान महोत्सव समिति के रणवीर सिंह ,विनय दुबे, हेमू चौरसिया, सत्य शरण सिंह ,मनोज सिंह चौहान,विवेक सिंह एवम दिव्यांश गोयल उपस्थित रहे। महोत्सव के रंगमंच का संचालन प्रदीप शुक्ला एवम मनीष पंडित ने किया।

अमेठी एसपी ने सिपाही को किया लाइन हाजिर

अमन लेखनी समाचार

अमेठी में घूस की रकम को जबरन किराना दुकानदार के खाते में ट्रांसफर करवाना एक सिपाही को महंगा पड़ गया। दुकानदार की शिकायत के बाद एसपी ने सिपाही को लाइन हाजिर कर दिया है। आरोपी सिपाही गौरीगंज थाने में तैनात था। जो जबरन दुकानदार के खाते में घूस की रकम को मंगवाता था। मना करने पर दुकानदार से अक्सर अभद्रता करता था।पूरा मामला गौरीगंज कोतवाली क्षेत्र के कस्बे का है। जहां कोतवाली के ठीक सामने कृष्णा किराना बाजार नाम से एक दुकान है। जिसका संचालन हिमांशु जायसवाल करते हैं। हिमांशु ने एसपी को एक शिकायती पत्र देते हुए आरोप लगाया कि गौरीगंज थाने में तैनात हल्का सिपाही श्याम नारायण सिंह आए दिन किसी न किसी से घूस का पैसा उसके खाते में लेने के लिए कहते थे। जब उन्हें बताया गया कि यह अकाउंट जीएसटी से ऐड है, तो सिपाही ने मां बहन की गाली दी और दुकान न खोलने की धमकी दी। इसके अलावा सिपाही लगातार आए दिन उसे प्रताड़ित करता था। बाइक से आने जाने पर भी उसे जबरन बीच रास्ते अभद्रता करता था। कुछ दिन पहले सिपाही ने दबाव बनाते हुए जबरन उसके खाते में किसी अज्ञात व्यक्ति 10 हजार रुपए मंगवा लिया। पैसे आने के बाद दुकानदार हिमांशु जायसवाल सिपाही ने पैसे ले लिया। व्यवसायी ने एक दिन पहले पूरे मामले की शिकायत एसपी अनूप सिंह से की।शिकायत मिलते ही एसपी ने मामले की जांच करवाई, तो मामला सही पाया गया। इसके बाद एसपी ने आरोपी सिपाही श्याम नारायण सिंह को लाइन हाजिर कर दिया है।

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में अटल भूजल योजना के संबंध में बैठक सम्पन्न

अमन लेखनी समाचार

हमीरपुर।जिलाधिकारी घनश्याम मीना की अध्यक्षता में अटल भूजल योजना की समीक्षा बैठक का आयोजन कलेक्ट्रेट सभागार में किया गया। बैठक में जिलाधिकारी ने कहा कि जनपद में अटल भूजल योजना का प्रभावी ढंग से क्रियान्वयन कर जल संरक्षण कार्यों को बढ़ावा दिया जाय।जल के परंपरागत स्त्रोतों यथा कुओं, तालाबो,पोखरों ,झीलों का जीर्णोद्धार किया जाय।सभी सरकारी व अर्धसरकारी भवनों में रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम स्थापित किया जाय। खेत तालाब योजना को प्रभावी ढंग से क्रियान्वित किया जाय। जल संरक्षण संबंधी अच्छा कार्य कर जनपद के सेमी क्रिटिकल ब्लॉकों सुमेरपुर व गोहांड को सेफ जोन में लाया जाए। जिलाधिकारी ने कार्यदायी विभागों को निर्देशित किया कि अटल भूजल योजना के अनुरूप जनपद की समस्त ग्राम पंचायतों में जल संरक्षण एवं जल संचयन की कार्य योजना बनायें जिससे आने वाले वर्षों में भूजल स्तर में सुधार आये और साथ ही साथ ग्राम पंचायत स्तर में जनपद बांदा के जखनी गांव के अनुरूप जन सहभागिता एवं जन जागरूकता को बढ़ावा मिले। इस मौके पर प्रभागीय वनाधिकारी, उपायुक्त स्वतः रोजगार, पीडी साधना दीक्षित, समस्त बीडीओ, जिला पंचायत राज अधिकारी ,जिला कृषि अधिकारी एवं अटल भूजल योजना के नोडल अधिकारी उपस्थित रहे।

खाद की किल्लत से जूझ रहे किसानों ने सड़क जाम कर किया हंगामा

अमन लेखनी समाचार

मौदहा। पूरे जनपद में खाद की किल्लत से किसान जूझ रहा है। कहीं कहीं किसानों के आक्रोश की खबरें भी लगातार मिल रही है लेकिन इन सबके बावजूद भी किसानों की समस्याओं का निस्तारण नहीं हो पा रहा है। ऐसा ही एक मामला मुस्करा कस्बे में देखने को मिला जहां आज सुबह से ही क्षेत्र के किसानों ने

खाद की मारामारी से परेशान होकर सडक में जाम लगा दिया। किसानों का आरोप है कि बुवाई का समय निकलता जा रहा है लेकिन उन्हें खाद नहीं मिल पा रही है। हालांकि प्रशासन ने सीमित मात्रा में समितियों में खाद उपलब्ध करवाई है लेकिन वह नाकाफी साबित हो रही है। इससे परेशान होकर किसानों ने सडक जाम कर हंगामा शुरू किया है। किसानों को समय पर खाद न मिलने और खेत की बुवाई का काम प्रभावित होने से हंगामा करने व जाम की सूचना पर पुलिस प्रशासन ने मौके पर पहुंचकर किसानों को मनाने की कोशिश शुरू कर दी है। पुलिस की मौजूदगी में खाद का वितरण भी शुरू कराया गया है लेकिन उपस्थित किसानों ने कहा है कि उन्हें मात्र दो बोरी खाद दी जा रही है जबकि आवश्यकता अधिक है। जब तक उनकी समस्याओं का समाधान नहीं होगा वह सड़क जाम कर प्रदर्शन करते रहेगें। इसी तरह ग्राम बिगहना में भी खाद वितरण में मारा मारी होने से महिलाओं व पुरुषों की लंबी लाइने लगी हैं।

ठंड का मौसम आते ही चोरों के कारनामे हुए तेज

घर के बाहर खड़े तीन ट्रैक्टरों से बैटरी गायब

अमन लेखनी समाचार

अमौली, फतेहपुर। अचानक मौसम के बदलाव के साथ-साथ शीत लहर का प्रकोप अपनी प्रारंभिक अवस्था से गतिमान हो गया है प्रतिवर्ष की भांति ठंड का सीजन आते ही चोरों के हौसले बुलंद हो जाते हैं जहां सूना समय पाकर देर रात्रि घटना को अंजाम दे दिया जाता है ताजा मामला चांदपुर थाना क्षेत्र के चतनपुर का आया जहां घर के बाहर खड़े तीन ट्रैक्टरों से चोरों ने बैटरा निकाल कर साफ कर दिया वर्तमान प्रधान लवकुश सचान के मकान के सामने खड़ा स्वयं प्रधान का एक ट्रैक्टर तथा पूर्व प्रधान के दो ट्रैक्टरों से चोरों ने बैटरी निकाल लिया जानकारी मिलने पर पीड़ित ने नजदीकी थाना चांदपुर को सूचना दी वहीं थाना प्रभारी राजेंद्र सिंह ने बताया की नजदीकी दूध डेयरी में लगे सीसीटीवी कैमरे से फुटेज निकाल कर जांच की जा रही है जल्द ही चोर की गिरफ्त में होगा

अमन लेखनी
(हिन्दी दैनिक)

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती अखिलेश सिंह द्वारा अवध एक्सप्रेस प्रकाशन, 434, सिविल लाइन, जेल रोड, उन्नाव, उत्तर प्रदेश से मुद्रित और ग्राम व पोस्ट-बनी, थाना- बन्थरा, लखनऊ-226401 (उ.प्र.) से प्रकाशित।

सम्पादक– श्रीमती अखिलेश सिंह

समाचार सम्पादक – रुद्र प्रताप सिंह

समाचार से संबंधित सभी विवादों का न्यायिक क्षेत्र लखनऊ होगा।

मो. – 9838159555, 9935457982

E-mail address amanlekhaninews@gmail.com

रोचक / अनुराग मनींद्र

बच्चों, सामान्य रूप से चलने वाली ट्रेनों में तुमने जरूर सफर किया होगा। आज हम तुम्हें कुछ अलग तरह की ट्रेंस के बारे में बता रहे हैं, इनमें सफर करके तुम्हें एक रोमांचकारी एक्सपीरियंस होगा। इन्हें ट्वॉय-ट्रेन भी कहते हैं। इनमें कुछ ट्रेंस को यूनेस्को ने 'वर्ल्ड हेरिटेज' का दर्जा दिया है।

ट्वॉय-ट्रेन की जर्नी देगी मेमोरेबल एक्सपीरियंस

बच्चों, क्या तुम जानते हो कि जिन ट्रेनों में सामान्य रूप से तुम यात्राएं करते हो, इनके अलावा कुछ जगहों पर विशेष प्रकार की ट्रेंस चलाई जाती हैं, इन्हें 'ट्वॉय-ट्रेन' कहा जाता है। तुम इन्हें ट्वॉय यानी खिलौना मत समझ लेना। ये प्रॉपर ट्रेंस हैं, इनके लिए अलग रेलवे ट्रैक्स होती हैं। दरअसल, इन्हें 'ट्वॉय-ट्रेन' इसलिए कहा जाता है, क्योंकि इनकी बनावट सामान्य ट्रेनों की तुलना में बहुत अलग होती है, ये ट्रेंस अन्य ट्रेनों की तुलना में छोटी होती हैं, इनमें कम बोगियां होती हैं। दिखने में ये बहुत आकर्षक लगती हैं। जानो बच्चों, भारत में जगह-जगह चलने वाली कुछ ट्वॉय-ट्रेनों के बारे में।

दार्जिलिंग हिमालयन ट्वॉय ट्रेन

पश्चिम बंगाल के न्यू जलपाईगुड़ी और दार्जिलिंग के बीच चलने वाली इस ट्वॉय-ट्रेन की जर्नी तुम्हें बहुत ही एडवेंचरस ट्रैवल एक्सपीरियंस देगी। यह ट्वॉय-ट्रेन अनेक टेढ़े-मेढ़े रास्तों और पांच बड़े लूप से होकर ऊंचाई तक पहुंचती है। देश-विदेश के पर्यटक यहां इस ट्वॉय-ट्रेन की जर्नी को एंज्वॉय करने आते हैं। अठारहवीं सदी के

अंत में निर्मित इस रेल-मार्ग को साल 1999 में यूनेस्को ने 'वर्ल्ड हेरिटेज' यानी 'विश्व विरासत' का दर्जा दिया था। *

नीलगिरि माउंटेन रेलवे ट्वॉय ट्रेन

दक्षिण भारत में चलने वाली यह ट्वॉय-ट्रेन, दार्जिलिंग ट्वॉय-ट्रेन के बाद देश की दूसरी सबसे मशहूर ट्वॉय-ट्रेन है। तमिलनाडु के मेट्टूपालयम से उदगमंडलम (ऊटी) तक की जर्नी पूरी करने में इस ट्रेन को करीब पांच घंटे का समय लगता है। लेकिन बच्चों, यात्रा के दौरान पहाड़ियों के बीच से गुजरते हुए तुम्हारा मन वादियों में ऐसा रम जाएगा कि तुम्हें पता ही नहीं चलेगा कि पांच घंटे कैसे गुजर गए। 1908 से चलने वाली इस ट्वॉय-ट्रेन जर्नी को साल 2005 में यूनेस्को की 'विश्व विरासत सूची' में शामिल किया गया। *

माथेरान हिल रेलवे ट्वॉय ट्रेन

महाराष्ट्र के नेरल और माथेरान के बीच यह ट्वॉय-ट्रेन चलती है। यह ट्वॉय-ट्रेन टेढ़े-मेढ़े और घुमावदार रास्तों से पश्चिम घाटों के खूबसूरत नजारों की सैर कराती हुई नेरल से माथेरान पहाड़ी तक की यात्रा पूरी करती है। इस रेलवे लाइन का शुरुआत 1907 ई. में हुई थी। इसके कुछ डिब्बों में आरामदायक सोफा और एलसीडी स्क्रीन भी लगे हुए हैं, जिससे रास्ते के खूबसूरत नजारे भी आराम से बैठे-बैठे देख जा सकते हैं। *

कोलकाता ट्रामवेज को भी कह सकते हैं ट्वॉय ट्रेन

बच्चों, कोलकाता ट्रामवेज को भी ट्वॉय-ट्रेन की श्रेणी में ही रखा जाता है, लेकिन यह वास्तव में एक ट्राम है। यह ट्रेन भारत में ही नहीं, पूरे एशिया की सबसे पुरानी ट्राम-प्रणाली है। यह पश्चिम बंगाल के कोलकाता में चलती है। बच्चों इसकी जर्नी विंटेज, रेट्रो और क्लासिक फील देती है। 1902 ई. में शुरू किए गए इस ट्रैक पर पहले घोड़ों द्वारा ट्राम चलाई जाती थी। बाद में ट्राम चलाने के लिए भाप इंजनों का उपयोग किया जाने लगा। तकनीक के विकास के साथ अब इस रूट पर विद्युत इंजन से चलने वाली ट्राम चलाई जाती है। *

कालका-शिमला रेलवे ट्वॉय ट्रेन

हिमाचल प्रदेश के शिमला और हरियाणा के कालका के बीच चलने वाली यह ट्वॉय-ट्रेन, पहाड़ों और गांवों के बीच से गुजरते हुए कई खूबसूरत नजारे दिखाती हुई चलती है। इस यात्रा के दौरान ऐसे कई दृश्य दिखेंगे कि तुम्हें लगेगा जैसे तुम कोई खूबसूरत पेंटिंग देख रहे हो। ब्रिटिश शासन के दौरान ब्रिटिश अधिकारी अक्सर इस ट्रेन से यात्राएं करते थे। इस रेलवे ट्रैक का निर्माण 19वीं सदी के अंतिम वर्षों में किया गया था। साल 2008 में इसे यूनेस्को की 'विश्व विरासत सूची' में शामिल किया गया। *

जीव-जंतु / संजीव कुमार आलोक

अजब-अनोखी समुद्री मछलियां

बच्चों, समुद्र की गहराई में बहुत सी ऐसी मछलियां पाई जाती हैं, जो दिखने में सुंदर, मोहक तो होती ही हैं, साथ ही बहुत ही अजब-अनोखी भी होती हैं। जानो इन मछलियों के बारे में।

बच्चों, विशाल समुद्र में बहुत तरह के जीव-जंतु पाए जाते हैं। इनकी बनावट, रंग-रूप हमें अचंभित करती है। इनमें कुछ रंग-बिरंगी मछलियों भी होती है। आओ जानते हैं इन मछलियों के बारे में।

तितली जैसी मछली बटरफ्लाई फिश

समुद्र की गहराई में तितली जैसी मछली पाई जाती है, इसे 'बटरफ्लाई फिश' कहा जाता है। यह मछली, कोरल रीफ यानी मूंगे की चट्टानों के बीच रहती है। यह बेहद चमकीली और रंगीन होती है, जो दिखने में बेहद खूबसूरत होती है। इसलिए इसे बटरफ्लाई-फिश भी कहा जाता है, क्योंकि इसकी बॉडी पर तितलियों जैसे पैटर्न होते हैं। ये मछली काली, नारंगी, लाल, पीली, सफेद जैसे कई रंगों में पाई जाती है। कुछ बटरफ्लाई फिश के शरीर पर धारियां और धब्बे भी होते हैं। *

मुंह में इकट्ठा करके लाती है रेत स्ट्राइप्ड गोबी

यह मछली भी बेहद खूबसूरत होती है। इसके पूरे शरीर पर रंगीन धारियां पाई जाती हैं, जो इसकी खूबसूरती को और भी ज्यादा बढ़ा देती है। यह मछली अपने जबड़ों में रेत इकट्ठा कर लाती है, जिससे यह अपना घर बनाती है। *

पानी पी-पी कर रहती है गोल-मटोल ग्लोब फिश

प्यारी-सी दिखने वाली ग्लोब फिश अपनी क्यूटनेस के कारण लोगों को अपनी तरफ अट्रैक्ट करती है। इसकी एक खासियत यह है कि यह इतनी अधिक मात्रा में पानी पी लेती है, जिससे इसका शरीर फूलकर गुब्बारे जैसा या यूं कहो, ग्लोब जैसा गोल-मटोल हो जाता है। *

जीके क्विज-129

1. हाल ही में टाटा ट्रस्ट का अध्यक्ष किसे नियुक्त किया गया है?
2. दुनिया की 8 हजार मीटर की सभी 14 चोटियों को फतह करने वाले सबसे कम उम्र के पर्वतारोही कौन बने हैं?
4. पिछले दिनों भारतीय महिला टीम ने एशियाई टेबल टेनिस चैंपियनशिप में कौन-सा पदक जीता है?
5. भारत के वर्तमान कृषि एवं ग्रामीण विकास मंत्री कौन हैं?
6. भारत का नेपोलियन किसे कहा जाता है?
7. ब्रिटिश संसद के लिए चुने जाने वाले पहले भारतीय कौन थे?
8. किस राज्य में लोकसभा की सर्वाधिक सीटें हैं?
9. किस संविधान संशोधन को 'मिनी कांस्टिट्यूशन' कहा जाता है?
10. भारत के किस राज्य की राजभाषा अंग्रेजी है?

बच्चों, जीके क्विज-129 का उत्तर बालभूमि के अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा। सही जवाब देने वाले बच्चों के नाम भी प्रकाशित किए जाएंगे।

जीके क्विज-128 का उत्तर : 1.संजीव खन्ना, 2.डोनाल्ड ट्रंप, 3.अश्विनी वैष्णव, 4. 1925 ई., 5.नारंगी, 6.ऐंथ्रासाइट, 7.कार्बन डाइऑक्साइड, 8.किडनी, 9.हीलियम, 10.बैकाल

जीके क्विज-128 का सही उत्तर देने वाले : कबीर-हिसार, तुलसी-भानपुरी, वंशिका-भानपुरी, कबीर-हिसार, तुलसी-भानपुरी, वंशिका-भानपुरी, लोकेश्वरी-ईमेल से, संजय-कवर्धा, दिशा-महेंद्रगढ़, अंकित-ईमेल से, खुशी-बलौदा बाजार

हंसगुल्ले

नव्या : ऐसी कौन-सी चीज है, जो फ्रिज में रखने के बाद भी गरम ही रहती है?
नैंसी : गरम मसाला।
-खुशबू, रायपुर

रिंकी : मिनी की मम्मी को सब क्या कहकर बुलाते हैं?
पिंकी : मुझे नहीं पता, तुम बताओ।
रिंकी : मिनीमम (मिनी-मॉम)।
-शुभ्रा, धमतरी

सोनू : ऐसा कौन-सा सेंटेंस है, जो हम बच्चे क्लास में सबसे ज्यादा बोलते हैं?
मोनू : मुझे नहीं पता।
सोनू (हंसते हुए) : हां-हां, बिल्कुल सही बताया।
-कुमकुम, भोपाल

पापा : तुम्हारा रिजल्ट इतना बुरा क्यों आया है?
रोहन : अब क्या करें पापा, अच्छे लोगों के साथ हमेशा बुरा ही होता है।
-दिव्यम, बिलासपुर

कहानी
टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला'

दीपू को मिला सबक

मंजीत की बगल वाली सीट पर आकर जब दीपू बैठा तो दोनों में कहा-सुनी हो गई। अध्यापक जी ने जब इसकी वजह जाननी चाही तो मंजीत ने बड़ी अजीब-सी वजह बताई। अध्यापक जी को दीपू को समझाना पड़ा। ऐसा क्या हुआ, जो मंजीत और दीपू में कहा-सुनी हो हुई? क्या अध्यापक जी का समझाने का असर दीपू पर कुछ हुआ भी?

दीपू सुबह उठा। दौड़ते हुए बाथरूम गया। वापस आया तो देखा, मम्मी किचन में गरम-गरम रोटियां सेंक रही हैं। उसका मन ललचा गया। दीपू बोला, 'मम्मी, मुझे बड़ी जोर से भूख लगी है।' तभी उसकी नजर चाय पर पड़ी। वह भी गरम। मस्त भाप निकल रही थी। इलाइची की खुशबू आ रही थी। दीपू बोला, 'मम्मी चाय भी पीऊंगा।'

मम्मी ने पूछा, 'ब्रश कर लिया है?'

'हां मम्मी, हो गया मेरा ब्रश।' दीपू ने तपाक से जवाब दिया।

'झूठ तो नहीं बोल रहे हो? इतना जल्दी तुम्हारा ब्रश कैसे हो गया?' मम्मी ने फिर पूछा।

'हां मम्मी, कर लिया है ब्रश।' दीपू ने फिर आज भी रोज की तरह झूठ बोल दिया।

मम्मी ने दीपू की बात मान ली, 'ठीक है, चलो बैठो डाइनिंग टेबल पर।'

दीपू आज फिर मम्मी को बुद्धू बना कर खुश था।

स्कूल का समय हुआ। दीपू स्कूल पहुंचा। दोस्तों के साथ अपनी जगह पर बैठ गया। दो पीरियड हो गए। तभी मंजीत नाम के उसके एक सहपाठी ने कहा, 'दीपू, तुम मेरे पास मत बैठो।'

दीपू ने पूछा, 'क्यों नहीं बैठूं? यह तो मेरी जगह है। तुम्हें मेरे पास नहीं बैठना है तो मत बैठो। मैं अपनी जगह पर ही बैठूंगा।' दोनों में कहा-सुनी होने लगी।

तभी कक्षा में अध्यापक आ गए। उन्होंने इस तरह झगड़ने का कारण पूछा, 'क्या हुआ? क्यों झगड़ रहे हो आपस में?'

दीपू ने बताया, 'सर, मुझे अपनी जगह पर बैठने नहीं देता मंजीत।'

'क्यों मंजीत, ऐसा क्यों कर रहे हो?' अध्यापक ने वजह जाननी चाही।

मंजीत कुछ नहीं बोला, उसकी चुप्पी पर अध्यापक ने झिड़की लगाई, 'क्या बात है, बताओ ना?'

'सर, दीपू के पास बैठो तो उसके मुंह से बदबू आती है।' मंजीत झिझकते हुए बोला।

अध्यापक अपनी हंसी को दबाते हुए बोले, 'क्यों जी दीपू, ब्रश-व्रश करते हो कि नहीं?'

अध्यापक का यह सवाल दीपू को अच्छा नहीं लगा। वह कुछ नहीं बोला।

'क्यों दीपू, मेरी बात सुनाई नहीं दी?' अध्यापक कुछ जोर से बोले।

'करता हूं सर, पर रोज नहीं करता।' कहते हुए दीपू चुप हो गया। उसका सिर झुक गया।

पहले अध्यापक ने मंजीत को समझाया, 'छोटी-छोटी बात पर इस तरह नहीं झगड़ते। लड़ना-झगड़ना अच्छी बात नहीं होती।' फिर दीपू के कंधे पर हाथ रखते हुए बोले, 'दीपू! अब तुम रोज सुबह सबसे पहले ब्रश किया करो। मुंह, हाथ-पैर ही नहीं, बल्कि पूरे शरीर की साफ-सफाई बहुत जरूरी है। चलो, अपनी जगह पर बैठो।'

दीपू को आज की घटना से एक बड़ा सबक मिला। उसे बहुत शर्मिंदगी महसूस हुई। स्कूल की छुट्टी हुई। घर गया। अपनी मम्मी को पूरी बात बताई। मम्मी ने भी साफ-सफाई के बारे में उसे समझाया।

दूसरे दिन दीपू सुबह उठते ही ब्रश और टंग क्लीनर लेकर बाथरूम में गया। यह देख मम्मी मुस्कुरा रही थीं। *

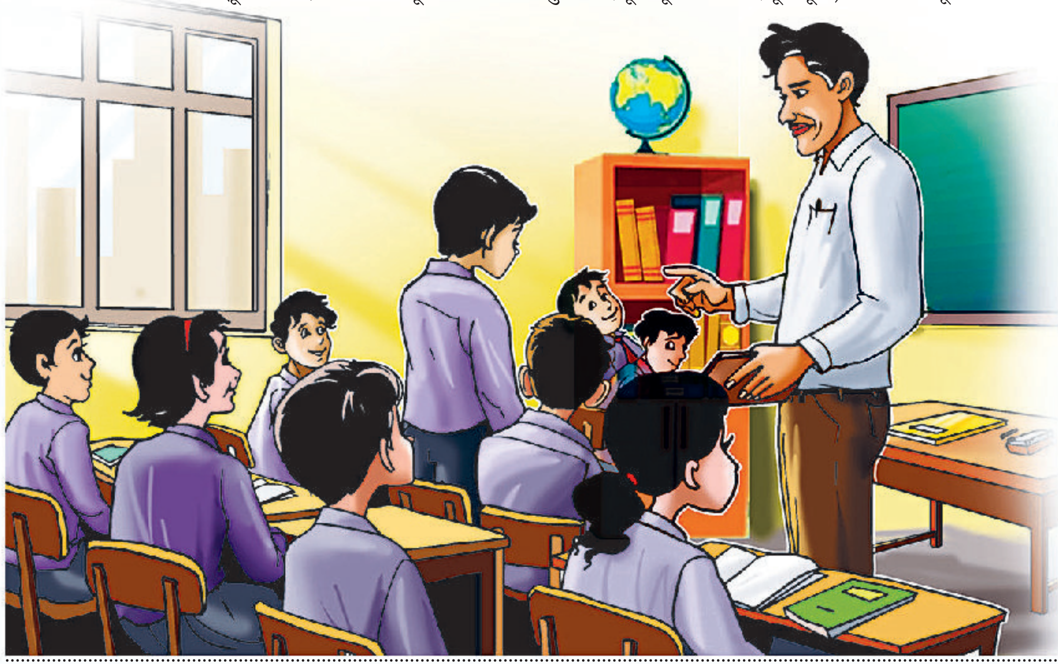

कविता
अलका 'सोनी'

आया जाड़ा, खुल गया बक्सा!

आया जाड़ा, खुल गया बक्सा,
देखें क्या-क्या था मां ने रखा!!
लाल मफलर, नरम रजाई,
उजला स्वेटर, जैसे मलाई!!
भूरा जैकेट, गुलाबी टोपी
स्कार्फ सर चढ़ते ही बोली!!
काले-नीले मेरे दस्ताने
बाहर आकर लगे बुलाने!!
साल भर यूं रहते-रहते
भीड़-भाड़ से लगे थे अकुलाने!!
अब आई है सर्दी रानी
हमसे होगी दोस्ती निभानी!!
बहुत दिनों तक अंदर रखा
अब जाकर हमको झांका
आया जाड़ा खुल गया बक्सा!!
देखें क्या-क्या था मां ने रखा!!

अंतर बताओ

बच्चों, यहां दिए गए दोनों चित्र एक जैसे दिख रहे हैं, लेकिन इनमें 5 अंतर हैं। तुम्हें पांच मिनट में ये सभी अंतर खोजने हैं। तो देर किस बात की, फटाफट सारे अंतर खोजो।

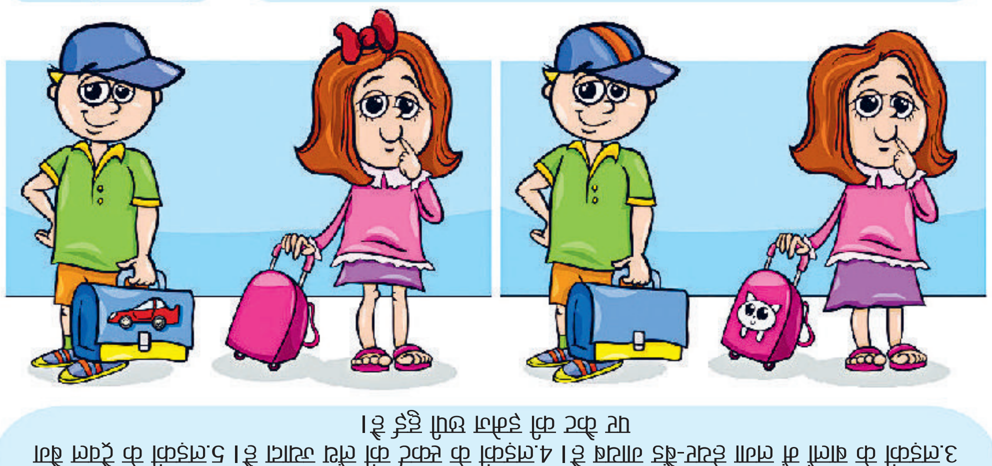

उत्तरः 1.लड़के की कैप पर पीले रंग स्ट्रिप लगी हुई है। 2.लड़के के बैग पर छपी कार की इमेज गायब है। 3.लड़की के बालों में लगा हेयर-बैंड गायब है। 4.लड़की के स्कर्ट की लेंथ ज्यादा है। 5.लड़की के ट्रैवल बैग पर कैट की इमेज छपी हुई है।

सही रास्ता खोजो

बच्चों, चित्र में दिख रहा मंकी काफी देर से भूखा है और उसे बनाना खाना है। लेकिन बनाना तक पहुंचने का रास्ता जरा टेढ़ा-मेढ़ा है। तुम इस मंकी के बनाना तक पहुंचने का रास्ता तो खोजो जरा।

एक अलग चित्र को ढूंढो

बच्चों, यहां दिए गए चित्रों में एक को छोड़कर बाकी सभी की दो-दो कॉपियां दी गई हैं। एक मात्र चित्र ऐसा है, जिसकी कोई कॉपी नहीं है। उस अकेले चित्र को ढूंढो, जिसकी कोई कॉपी नहीं है।